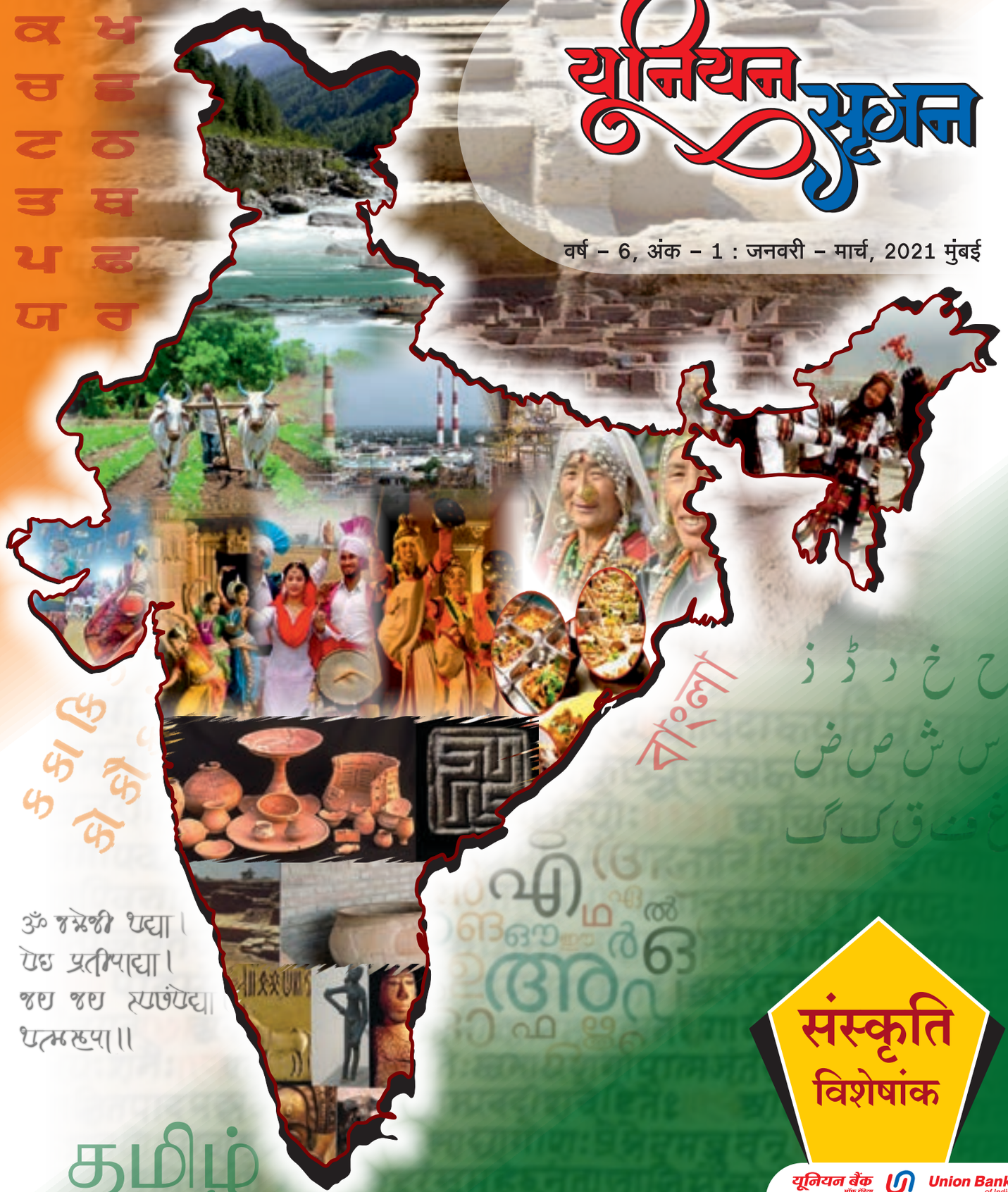

यूनियन सृजन

वर्ष – 6, अंक – 1 : जनवरी – मार्च, 2021 मुंबई

संस्कृति विशेषांक

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
Union Bank of India
भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking
आंध्रा Andhra
कार्पोरेशन Corporation

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि: 14.05.2021

संस्कृति विशेषांक

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी पत्रिका
वर्ष – 6, अंक – 1 जनवरी–मार्च 2021

संरक्षक
राजकिरण रै जी.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक
कल्याण कुमार
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक
नवल किशोर दीक्षित
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
डॉ. सुलभा कोरे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
अशोक चंद्र
मुख्य महाप्रबंधक

वी. वी. टेम्भूर्णे
महाप्रबंधक

अम्बरीष कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित
ई-मेल: sulabhakore@unionbankofindia.com
9820468919, 022 – 22896595
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के लिए डॉ. सुलभा कोरे,
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग,
केंद्रीय कार्यालय, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट,
मुंबई – 400 021 द्वारा संपादित एवं प्रकाशित तथा
जयंत प्रिन्टरी एलएलपी, मुंबई-2 द्वारा मुद्रित.
संपादक – डॉ. सुलभा कोरे

**इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं.
प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.**

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India
आन्ध्रा Andhra

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 3
- संपादकीय 4
- भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ 5
- साहित्य सृजन 6-7
- काव्य सृजन 8-9
- भारत की विश्व में प्रतिमा 10-11
- विशेष साक्षात्कार – प्रो. गणेश देवी 12-14
- धर्म निरपेक्षता और भारत 15
- भारतीय संस्कृति एवं दर्शन 16-17
- भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक वर्गीकरण 18
- सिंधु घाटी सभ्यता 19-21
- भारतीय संस्कृति, सहिष्णुता, औदार्य 22-23
- भारतीय संस्कृति का दुनिया पर प्रभाव 24-25
- भारत में आयुर्वेद, योग, औषधियाँ, स्वास्थ्य 26-27
- भारतीय संस्कृति – विविधता में एकता 28-29
- सेंटरस्प्रेड-पड़ेरु का सौंदर्य.....30-31
- सभ्यता और संस्कृति का अंतर्संबंध 32-33
- भाषा साहित्य एवं लोकसाहित्य 33-34
- हम भारतीय हैं, गर्व की बात है.....35-36
- भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में नई स्त्री 36-37
- भारत की भाषाई एकता की परंपरा 38-40
- लोक संगीत एवं तीज-त्योहार की परंपराएं.....40-42
- भारतीय संस्कृति का विश्व पर प्रभाव 43
- भारत की प्रथाएं एवं परंपराएं.....44-45
- विश्व पटल पर भारत की खासियत 45-46
- वेशभूषा, खानपान एवं भौगोलिक विविधता 47-48
- कर्म संस्कृति 49-51
- राजभाषा पुरस्कार 52
- महिला विशेष कार्यशालाएं 53-55
- राजभाषा समाचार 56-57
- आयुष्मान भव: 58
- आपकी नजर से 59

Designed & Printed at
Jayant Printery LLP, 352/54, Girgaum Road, Murlidhar Compound,
Near Thakurdwar Post Office, Mumbai-2. Tel.: 4366 71 71

परिदृश्य
PERSPECTIVE

प्रिय साथियो,

हम सभी के जीवन को बहुत से कारक प्रभावित करते हैं, हम किस संस्कृति में पले-बढ़े हैं, वह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाला बहुत महत्वपूर्ण कारक होता है. प्रायः हम सभ्यता और संस्कृति में भ्रमित होते हैं. संस्कृति एक व्यापक क्षेत्र है और सभ्यता संस्कृति का ही एक अंग है. मनुष्य की भौतिक प्रगति सभ्यता से होती है जबकि मानसिक प्रगति संस्कृति से दिखाई देती है और संस्कृति एक ऐसा व्यापक क्षेत्र है जिसमें हमारा जीवन, जीने का तरीका अहम् भूमिका निभाता है. इसमें हमारे पहनावे से लेकर खान-पान, भाषा सभी कुछ शामिल हैं.

भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है. यहाँ कदम-कदम पर प्रांतों, राज्यों की संस्कृति बदलती रहती है और समाहित रूप में यह भारत की एक अनूठी संस्कृति का निर्माण करती है. यहाँ विश्व की सर्वप्रथम संस्कृति का विकास हुआ. साथ ही संसार के अन्य हिस्सों से आने वाली संस्कृतियों के समागम से यहाँ एक विशिष्ट संस्कृति पनपी और उसने इस देश को अलग रूप और पहचान दी. यहाँ उत्तर के राज्यों जैसे पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा की संस्कृति, दक्षिण के राज्यों जैसे केरल, तमिलनाडु से बहुत भिन्न है. साथ ही पश्चिम के राज्यों जैसे महाराष्ट्र, गुजरात की संस्कृति पूर्व के असम, पश्चिम बंगाल राज्यों से बहुत अलग है.

इस देश के मनीषियों, महापुरुषों ने इन विविधतापूर्ण संस्कृतियों को एक दूसरे के करीब लाने हेतु प्रयास किये और वर्तमान में हम पाते हैं कि यहाँ विभिन्न संस्कृतियों की अच्छी बातों को अन्य प्रांतों के निवासियों द्वारा अपनाया गया है और इससे भारतीय संस्कृति अधिक विकसित हो गयी है. 'वसुधैव कुटुम्बकम' हमारी संस्कृति का मूल आधार है जो कि हमें एक दूसरे से जोड़ता है और विश्व को एक परिवार के रूप में देखता है.

वर्तमान में, यूनियन बैंक की संस्कृति कार्पोरेशन बैंक तथा आंध्रा बैंक की संस्कृतियों को स्वयं में समाहित कर एक समृद्ध और संपन्न संस्कृति की दिशा में आगे बढ़ने लगी है. पश्चिम और उत्तर की संस्कृति के साथ अब दक्षिण और द्रविड़ियन संस्कृति का मेल हो गया है. समय के साथ हुआ यह परिवर्तन भविष्य की प्रगति और समृद्धि का निर्देशक है. हमारी कार्य संस्कृति भी इस विकास और संपन्नता को लेकर प्रगति की राह पर अग्रसर हो रही है. मुझे विश्वास है यह परिवर्तित संस्कृति निश्चित रूप से हमें और हमारे बैंक को नई ऊंचाइयाँ प्रदान करेगी.

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.

राजकिरण रै जी

(राजकिरण रै जी.)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

'संस्कृति' – यह शब्द ही अपने में बहुत अर्थों, पहलुओं, परिप्रेक्ष्यों को लेकर चलता है. यह लोगों या समाज का विश्वास, परंपराएं, कला, साहित्य, संगीत, ज्ञान तथा सामाजिक आचरण को समाहित करता है. मानव समाज अपने विकास, प्रगति, हित, सुख या आनंद के लिए जो कार्य या उपाय करता है, प्रचलन में लाता है, वे सभी बातें 'संस्कृति' में शामिल हो जाती हैं. फिर यह 'संस्कृति' पीढ़ी-दर-पीढ़ी यात्रा करते हुए स्वयं विकास और समृद्धि के साथ व्यापकता से समाज में अपना स्थान पाती है. किसी समाज की संस्कृति से आप उस समाज को समझ और जान सकते हैं. संस्कृति में आप समाज के मानदंड देख सकते हैं. सामाजिक रीतिरिवाजों, मान्यताओं, विविधताओं तथा परंपराओं को देख सकते हैं तथा व्यक्तिगत व्यवहार और सक्षमता को भी आंक सकते हैं.

भारत में तो विभिन्न संस्कृतियों की यात्रा चलती है. यहां हर प्रदेश के साथ नयी संस्कृति होती हैं. विविधता और विभिन्नता का तो यहां मेला लगता है. हिमालय की बर्फिली लहरों के साथ यहां राजस्थान की तप्त हवाएं एक साथ चलती हैं. महाराष्ट्र की सागरी लहरों के साथ यहां पूर्वोत्तर की वन संपदा प्रचुर मात्रा में लहराती है. यहां उत्तराखंड का धार्मिक सलिल तमिलनाडु के समृद्ध मंदिरों के साथ बहता है. यहां गुजरात का व्यवसायिक कौशल है तो केरल का सेवाभाव भी है. सिक्किम की निर्जन भूमि की सुरक्षा करता जवान है, तो बाढ, भूकंप, तूफान में अपनी सेवा देता आम आदमी भी है.

विविधता के इतने रंग भारत की इस भूमि में उंड़ेले गये हैं कि शायद ही ऐसा कोई रंग हो जो इस भूमि में मौजूद न हो. यह रंगरंगीली भूमि अपनी नित नयी मानसिकता और संघर्ष का सामना करते हुए भी विश्व में अपनी एक अलग पहचान कायम कर चुकी है. लेकिन जब देशहित का मामला हो तो वे सभी रंग एक तिरंगे में आकर सिमटते हैं; सभी उंगलियाँ एक मुठ्ठी बनकर उभरती है और फिर 'वंदे मातरम' की पुकार सारे संसार में अपना परचम लहराती है.

हमारे बैंक में भी समामेलन के पश्चात् तीन अलग-अलग संस्कृतियों का संगम हुआ है. यह संगम अनूठा है और निश्चित ही समृद्धि और प्रगति की ओर ले जाने वाला है. क्योंकि संस्कृतियों का संगम हरदम कुछ नया और बेहतरीन दे जाता है.

हमें गर्व है कि हम इस रंगबिरंगी, महान और विविधता से भरपूर संस्कृति और परंपरा के वाहक है. हमें इस अद्वितीय और अतुल्य संस्कृति का अभिमान है. मुझे विश्वास है 'यूनियन सृजन' का यह 'संस्कृति विशेषांक' निश्चित रूप से आपको इस देश की विविधता से भरपूर संस्कृति से रूबरू करवाएगा.

आपकी प्रतिक्रियाओं का हमें इंतजार रहेगा.

डॉ. सुलभा कोरे
संपादक

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है. मध्य प्रदेश के भीमबेटका में पाए गए शैलचित्र, नर्मदा घाटी में की गई खुदाई तथा कुछ अन्य पुरातत्वीय प्रमाणों से सिद्ध हुआ है कि भारत की भूमि आदि मानव की प्राचीनतम कर्मभूमि रही है. सिंधु घाटी सभ्यता के विवरणों से यह साबित होता है कि आज के समय से लगभग चार हजार सात सौ साल पहले उत्तरी भारत के एक बड़े भाग में एक उच्च कोटि की संस्कृति का विकास हो चुका था. इसी तरह से वेदों में परिलक्षित भारतीय संस्कृति न सिर्फ प्राचीनता का एक प्रमाण है बल्कि वह भारतीय अध्यात्म और चिंतन की भी सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति है. इसी भारतीय सभ्यता में साहित्यिक रूप से संस्कृत को एक समृद्ध भाषा माना गया है और यही कारण है कि संस्कृत को देवताओं की बोली कहा जाता है. वर्तमान समय में प्राप्त सबसे प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ 'ऋग्वेद' और 'महा उपनिषद' हैं. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उल्लेख इन्हीं महा उपनिषद में हुआ है जिसमें वसुधा का अर्थ है-पृथ्वी और कुटुम्ब का अर्थ है-परिवार. इस प्रकार, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का अर्थ हुआ-पूरी पृथ्वी ही एक परिवार है और इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी मनुष्य और जीव-जन्तु एक ही परिवार का हिस्सा हैं. यद्यपि यह एक प्राचीन अवधारणा है, किन्तु आज यह पहले से भी अधिक प्रासंगिक है.

मूलत: यह संकल्पना भारतवर्ष के प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा की गई थी, जिसका उद्देश्य था-पृथ्वी पर मानवता का विकास ! इसके माध्यम से उन्होंने यह सन्देश दिया कि सभी मनुष्य समान हैं और सभी का कर्तव्य है कि वे परस्पर एक-दूसरे के विकास में सहायक बनें, जिससे मानवता फलती-फूलती रहे. भारतवासियों ने इसे सहर्ष अपनाया.

अयं निज: परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्

भगवान ने इस इच्छा से हम मनुष्यों का निर्माण किया है कि हम सब उसकी इस सृष्टि को अधिक सुन्दर, अधिक सुखी, अधिक समृद्ध और अधिक समुचित बनाने में उसका हाथ बंटायें. यह वो संस्कृति है जो अधिकार से ज्यादा कर्तव्य पालन पर बल देती है. भारत देश और यहाँ की संस्कृति अनेक धर्मों को और उनकी शिक्षाओं को न केवल अपने में संजोये हुए है अपितु इस देश की संस्कृति ने किसी भी धर्म को श्रेष्ठ या निम्न नहीं आंका. भारतीय संस्कृति यथार्थ के बहुआयामी पक्ष को स्वीकार करती है तथा दृष्टिकोणों, व्यवहारों, प्रथाओं एवं संस्थाओं की विविधता का स्वागत करती है. भारतीय संस्कृति का आदर्श-वाक्य 'अनेकता में एकता एवं एकता में अनेकता' दोनों हैं. भारतीय संस्कृति में रचे-बसे लोग इतने उदार है कि हमने सदैव अन्य देशों की संस्कृतियों का बाहें फैलाकर स्वागत किया है.

इतिहास गवाह है कि हमारे भारत के महान विचारकों एवं सम्राटों ने पूरे विश्व के कल्याण के लिए हमेशा प्रयास किये हैं. इस संस्कृति में वाल्मीकि, बुद्ध, शंकराचार्य, नानक-कबीर एवं महर्षि अरविन्द जैसी महान विभूतियां हुईं जिन्होंने इस संस्कृति को आगे बढ़ाकर समृद्ध बनाया. इसी प्रकार चक्रवर्ती सम्राट अशोक को जब युद्ध से होने वाली हानि का ज्ञान प्राप्त हुआ तब उन्होंने आत्म शांति के लिए युद्ध को त्यागकर बौद्ध धर्म को अपनाया था. हमारे महान भारतीय संस्कार के स्तंभ का उदार विस्तृत चरित्र ही है जिसने वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को दर्शाया है. बौद्ध धर्म के इस संदेश का भारत ने अन्य देशों में भी समर्पित प्रचार-प्रसार किया.

जब सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगीकरण के साथ यूरोपीय देशों ने अपने उपनिवेश बनाने शुरू कर दिए, तब दुनियाभर में एक नई अवधारणा 'राष्ट्रवाद' का जन्म हुआ, जो राष्ट्र तक ही सीमित था. आज भी दुनिया में राष्ट्रवाद हावी है. स्वतंत्र भारत का इतिहास गवाह है कि जवाहर लाल नेहरू से मोदी तक हर नेता ने भारत की विदेश नीतियों को विश्व के समक्ष वसुधैव कुटुम्बकम के स्तम्भ पर प्रस्तुत किया है. यही वजह है कि आज कोरोना काल में सम्पूर्ण विश्व भारत के साथ खड़ा है.

देखा जाए तो हर एक देश का उद्देश्य विकास करना ही है, अत: आज सभी को बैर-भाव भुलाकर वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति को अपनाने की आवश्यकता है, क्योंकि सबके साथ में ही सबका विकास निहित है. जिस दिन पृथ्वी के सभी लोग अपने सारे मतभेद भुलाकर एक परिवार की तरह आचरण करने लगेंगे, उसी दिन सच्ची मानवता का उदय होगा और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सपना साकार होगा.

श्वेत धवन
सरल, कानपुर

महाकवि सुब्रमण्य भारतियार

सुब्रमण्य भारतियार तमिलनाडु के एक कवि, स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक थे. उन्हें 'महाकवि' भारतियार के रूप में जाना जाता था और प्रशंसनीय विशेषण महाकवि का अर्थ है एक महान कवि. उन्हें भारत के श्रेष्ठ कवियों में से एक माना जाता है. राष्ट्रवाद और भारत की स्वतंत्रता पर उनके गीतों ने तमिलनाडु में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने के लिए जनता को एकजुट करने में मदद की.

सुब्रमण्य भारतियार का जन्म 11 दिसंबर 1882 को तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले में एट्टयपुरम नामक गांव में हुआ. उनके बचपन का नाम सुब्बैय्या था. उनके पिता चिन्नास्वामी अय्यर थे और उनकी माता लक्ष्मी अम्माल थीं.

सात साल की उम्र में सुब्बैया ने तमिल में कविताएं लिखना शुरू कर दिया था. जब वे ग्यारह वर्ष के थे, तब विद्वान लोग भी उनके महान ज्ञान और कौशल के लिए उनकी प्रशंसा करते थे. ग्यारहवें वर्ष में, सुब्बैया ने महसूस किया कि उन्हें अपनी साख स्थापित करनी होगी. उन्होंने विद्वानों की सभा में प्रतिष्ठित व्यक्तियों को एक चुनौती दी कि वे बिना किसी पूर्व सूचना या तैयारी के किसी भी विषय पर बहस में उनसे मुकाबला करें. प्रतियोगिता एट्टयपुरम दरबार की एक विशेष बैठक में आयोजित की गई थी जिसमें राजा (शासक) स्वयं उपस्थित थे. चुना गया विषय शिक्षा था. सुब्बैया ने कुशलतापूर्वक बहस जीत ली. सुब्बैया के जीवन का यह एक यादगार पल था. जिस लड़के को उस समय तक एट्टयपुरम में सुब्बैय्या कहा जाता था, वह अब भारती के रूप में जाना जाने लगा और बाद में उन्हें पूरे विश्व में राष्ट्रवादियों और लाखों तमिल प्रेमियों द्वारा सम्मानपूर्वक भारतियार कहा जाने लगा.

जून 1897 में, जब उनकी शादी हुई, तब भारती मुश्किल से पंद्रह वर्ष के थे और उनकी पत्नी चेल्लम्माल थी. भारती बनारस के लिए रवाना हुए जिसे काशी और वाराणसी के नाम से भी जाना जाता था. उन्होंने अगले दो साल अपनी चाची कुप्पम्मल और उनके पति कृष्णा सिवन के साथ बिताए. संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी का उचित ज्ञान प्राप्त करते हुए, उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा क्रेडिट के साथ विधिवत उत्तीर्ण की. बनारस प्रवास ने भारती के व्यक्तित्व में जबरदस्त बदलाव लाया. बाह्य रूप से, उन्होंने एक मूंछ और एक सिख पगड़ी पहन रखी थी और अपने चलने में उन्होंने एक बोल्ड स्विंग हासिल किया था.

भारती: एक कवि और एक राष्ट्रवादी

गौरतलब है कि सुब्रमण्य भारती के साथ तमिल साहित्य में एक नए युग की शुरुआत हुई थी. उनकी अधिकांश रचनाओं को देशभक्ति, भक्ति और रहस्यवादी विषयों पर लघु गीतात्मक उद्गारों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है. भारती मूलतः एक गेय कवि थे. 'कण्णन पाट्टू', 'निलावुम वान' 'मीनुम काट्टुम' 'पांचाली शपथम्', 'कुयिल पाट्टु' भारती के महान काव्य रचना के उदाहरण हैं.

भारती को राष्ट्रीय कवि के रूप में माना जाता है क्योंकि उनकी देशभक्ति की कविताओं की संख्या के कारण उन्होंने लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने और देश की मुक्ति के लिए सख्ती से काम करने का आह्वान किया. उन्होंने केवल अपने देश पर गर्व करने के बजाय एक स्वतंत्र भारत के लिए अपने दृष्टिकोण को भी रेखांकित किया. उन्होंने 1908 में सनसनीखेज 'सुदेस गीतंगल' प्रकाशित किया.

पत्रकार के रूप में भारती

भारती के जीवन के कई वर्ष पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यतीत हुए, भारती ने एक युवा के रूप में, एक पत्रकार के रूप में और नवंबर 1904 में स्वदेशमित्रन में एक उप-संपादक के रूप में अपना कैरियर शुरू किया.

भारती ने मई, 1906 में दिन का प्रकाश देखा. इसने अपने आदर्श वाक्य के रूप में फ्रांसीसी क्रांति, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के तीन नारे घोषित किए.

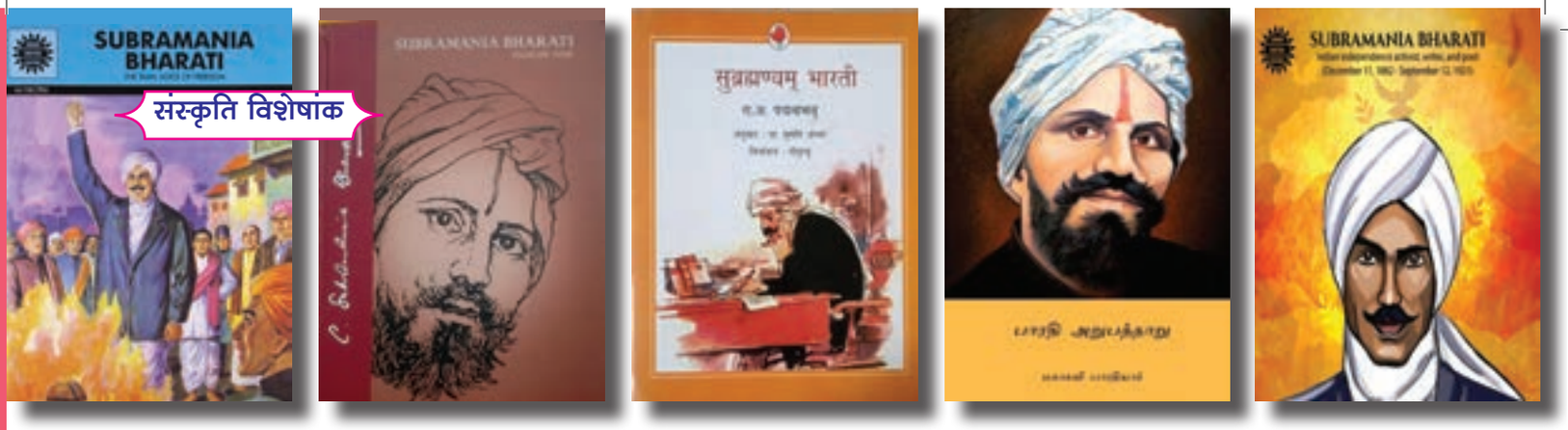

इसने तमिल पत्रकारिता में एक नया मुकाम हासिल किया. भारती ने अपने क्रांतिकारी उत्साह की घोषणा करने के लिए लाल कागज में साप्ताहिक छपवाया था. तमिलनाडु में राजनीतिक कार्टून प्रकाशित करनेवाला पहला अखबार 'इंडिया' था. उन्होंने 'विजय' जैसी कुछ अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन भी किया.

इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जल्द ही पत्रिका के संपादक की गिरफ्तारी के लिए 'इंडिया' कार्यालय के दरवाजे पर एक वारंट इंतजार कर रहा था. 1908 में इस बिगड़ती स्थिति के कारण ही भारती ने उस समय एक फ्रांसीसी क्षेत्र पांडिचेरी जाने का फैसला किया और 'इंडिया' पत्रिका का प्रकाशन जारी रखा. ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के प्रकोप से बचने के लिए भारती कुछ समय के लिए पांडिचेरी में रहे.

अपने निर्वासन के दौरान, भारती को स्वतंत्रता आंदोलन के उग्रवादी विंग के कई नेताओं जैसे अरबिंदो, लाजपत राय और वीवीएस अय्यर के साथ घुलने-मिलने का अवसर मिला, जिन्होंने फ्रांसीसी पांडिचेरी में भी शरण मांगी थी. भारती के जीवन के सबसे लाभदायक वर्ष पांडिचेरी में बिताए दस वर्ष थे.

पांडिचेरी से, उन्होंने मद्रास के तमिल युवाओं को राष्ट्रवाद के मार्ग पर चलने के लिए निर्देशित किया. इसने भारती के लेखन के प्रति अंग्रेजों के गुस्से को बढ़ा दिया क्योंकि उन्हें लगा कि यह उनका लेखन है जो तमिल युवाओं की देशभक्ति की भावना को प्रेरित और प्रभावित करता है.

कडलूर के पास ब्रिटिशों ने भारत में प्रवेश किया और उन्हें तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया. जेल में भी, उन्होंने अपना समय स्वतंत्रता, राष्ट्रवाद और देश के कल्याण पर कविताएँ लिखने में बिताया.

अपनी युवावस्था के शुरुआती दिनों में चिदंबरम, सुब्रमण्य शिवा, तिरुमलचारियार और श्रीनिवासचारी जैसे राष्ट्रवादी तमिल नेताओं के साथ भारती के अच्छे संबंध थे. इन नेताओं के साथ वे ब्रिटिश शासन के कारण देश के सामने आने वाली समस्याओं पर चर्चा करते थे. भारती भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक सत्र में भाग लिया करते थे और बिपिन चंद्र पाल, बी.जी. तिलक और वीवीएस अय्यर जैसे उग्रवादी भारतीय राष्ट्रीय नेताओं के साथ राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा करते थे. बनारस सत्र (1905) और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सूरत सत्र (1907) में उनकी भागीदारी और गतिविधियों ने उनके देशभक्ति के उत्साह के बारे में कई राष्ट्रीय नेताओं को प्रभावित किया. भारती ने कुछ राष्ट्रीय नेताओं के साथ अच्छे संबंध बनाए रखे और राष्ट्र पर अपने विचार साझा किए तथा राष्ट्रवादी आंदोलन को मजबूत करने के लिए अपने सुझाव दिए. निश्चित रूप से, उनके बुद्धिमान सुझावों और राष्ट्रवाद के लिए दृढ़ समर्थन ने कई राष्ट्रीय नेताओं को फिर से जीवंत कर दिया. इस प्रकार भारती ने भारत की स्वतंत्रता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

भारती एक समाज सुधारक के रूप में

भारती जाति व्यवस्था के खिलाफ थे. उन्होंने घोषणा की कि केवल दो जातियाँ हैं-पुरुष और नारी और इससे ज्यादा कुछ नहीं. इन सबसे ऊपर, उन्होंने स्वयं अपना जनेऊ हटा दिया था. उन्होंने कई दलितों को पवित्र धागे से भी सजाया था. वे मुसलमानों द्वारा चलाई जाने वाली दुकानों में बिकने वाली चाय लेते थे. वे अपने परिवार के सदस्यों के साथ सभी त्योहारों के अवसरों पर चर्च में जाते थे. उन्होंने दलितों के मंदिर में प्रवेश की वकालत की. अपने सभी सुधारों के लिए उन्हें अपने पड़ोसियों के विरोध का सामना करना पड़ा. लेकिन भारती बहुत स्पष्ट थे कि जब तक सभी भारतीय, भारत माता की संतान के रूप में एकजुट नहीं होंगे, वे स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकते. वह महिलाओं के अधिकारों, लैंगिक समानता और महिला मुक्ति में विश्वास करते थे. उन्होंने बाल विवाह, दहेज का विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया.

महाकवि भारती ने पूरे मानव समाज पर एक बड़ा प्रभाव बना दिया था. उन्होंने जो कुछ भी उपदेश दिया उसका उन्होंने पालन किया और यहीं पर उनकी महानता प्रकट होती है. भारत की स्वतंत्रता के बारे में औपनिवेशिक काल के दौरान उनकी भविष्यवाणी उनके निधन के ढाई दशक बाद सच हुई. एक गौरवशाली भारत के बारे में उनकी दृष्टि स्वतंत्रता के बाद के युग में साकार हो रही है. भारती अपने लिए ही नहीं बल्कि लोगों और राष्ट्र के लिए जीते थे. इसलिए उन्हें सम्मानपूर्वक भारतियार कहा जाता है.

वी मुरली
क्षे.का., तिरुचिराप्पल्ली

सुलगते अरमान

व्यवस्थित होने में,
व्यवस्था का शिकार होती जिन्दगी,
खतरे में उतरने से बचने में,
जिन्दगी को खतरे में उतारती जिन्दगी ।

बेखौफ निगाहों में तैरती तन्हाई,
शायद ऊँघते अरमानों को हिचकी है आई,
तरुणाई की दिलकशी, वो फक्कड़ बादशाहत,
थी मजाल किसकी? जो छेड़े हमारी कुब्बत को,
न जाने आज क्या? फजूल पाल बैठे,
बचाने इस नामुराद को, जिन्दगी हार बैठे,
जोखिम से नायाब हीरा नहीं जिन्दगी,
इससे इतर क्या? होगी बन्दगी ।

चलो एक बार फिर, उतरें भंवर में,
अंतस को सुलगायें, उतरे आँखों में पानी,
कुछ भी तो थमा नहीं, मन भी तो भरा नहीं,
डाल दूँ, हथियार कैसे?
अभी चाप रुधिर का रुका नहीं,
चलो फिर, ताखे पर से लेखनी उतारें,
निर्माण के सब सामान जुटायें,
हम ही क्यों? शिथिल पड़ जायें,
जब दिनकर ने उगना छोड़ा नहीं ।

हाथों को काम और हृदय में सांस जब तक
तब तक ही तो उद्योग सारा,
जिन्दगी ने जब तक अवसर दिया है,
मौत ने आलिंगन में न लिया है,
वहाँ तक तो जाग लें हम ।
जगत में जब निश्चित है चारा,
फिर कोई क्यों बने बेचारा ।।

शैलेन्द्र कुमार मिश्र
मनिरामपुर शाखा, धनबाद

समय चक्र

समय चक्र चलता रहता है,
रुकते नहीं इसके पहिये,
दो कदम बढ़ाए हैं मैंने,
कुछ कदम आप भी चलते रहिए

हर किसी की अपनी मुश्किल है
हर किसी की अपनी बाधाएँ
डरने से क्या हासिल होगा
बाधाओं से लड़ते रहिए
समय चक्र चलता रहता है ।

तकदीरों में क्या लिखा है,
न हमें पता है न तुमने जाना
कर्मयोग है जीवन अपना
कर्मपथ पर चलते रहिए
समय चक्र चलता रहता है ।।

जो बीत गया जो बीत गया
क्यों याद कर उसे रोएँ
नई सोच का स्वागत करिए
बातें आने वालों की करिए
समय चक्र चलता रहता है ।।।

दिलो में नफरत न रखिए
कल कौन कहाँ है किसने देखा
हर पल खुद में एक जीवन है
खुशियाँ दामन में भरते रहिए
समय चक्र चलता रहता है
रुकते नहीं इसके पहिये
दो कदम बढ़ाए हैं मैंने
कुछ कदम आप भी चलते रहिए...

प्रतिभा मौर्य
सिविल कोर्ट, गोरखपुर

संस्कृति/परंपरा की विभिन्नता

संस्कृत से भी पुरानी
हमारी भारतीय संस्कृति है
इसकी छवि बिगाड़ने वालों
की मानसिक विकृति है
भारतीय संस्कृति जीवन की विधि है
संस्कारों से पोषित बहुमूल्य निधि है
संस्कृत, संस्कृति और संस्कार हो
विकास का बस यही आधार हो
फिर पश्चिमी सभ्यता की ऐसी हवा चली
भारतीय संस्कृति की भी जड़ें हिली
अपने को अपमानित करते,
दूसरों को सम्मानित करते
भारतीयता को अपना माने,
लोग उसे अज्ञानी कहते
युग बदला कि लोग,
मैं तो यह समझ ना पाया
पर इस परिवर्तन में,
मैंने खोया अपने आप को पाया
चलो ना, हम उस गाँव से
आती भीगी मिट्टी की खुशबू की ओर चलें
ऐ आजाद हिंदुस्तानी, चलना हम
अपनी संस्कृति की ओर चलें
ये जो रोती बिलखती बच्चियाँ हैं
असल में संस्कृति की उड़ती धज्जियाँ हैं
विश्व में अब कहाँ हाहाकार नहीं है
फिर भी भारतीय संस्कृति
का दूसरा दावेदार नहीं है

बालकृष्ण गोयल
केएसकेवी भुज शाखा

तू क्या कर बैठा इंसान

ईश्वर ने एक चीज़ बनाई,
फूल-पौधों से सुंदर सजाई,
नीला अंबर दिया छाया को,
मधुर पानी की नदी बनाई।

पक्षियों की चह-चाहट ने
सुंदर गीत सजाया,
सूरज की रोशनी ने दिन भर साथ निभाया,
जब रात आई मस्तानी सी,
चाँद सितारों से आसमान जगमगाया।

वृक्ष दिये विशाल,
उनमें फल लगे मीठे,
कोमल माटी दी सोने,
पशुओं की आँखों में दिखे
उस ईश्वर का प्यार।

फिर ईश्वर ने इंसान बनाया,
सोचा उसे दे एक वरदान,
इंसान को दी बुद्धि उसने,
धरती को सौंपा इस इंसान के हाथ।

अब फूल-पौधे बने प्लास्टिक के,
नदी का पानी हुआ मैला,
पक्षी बंद अब पिंजरे में,
वृक्ष कटे बेहाल।

फल में पड़े पेस्टिसाइड्स,
सितारों पे प्रदूषण का पर्दा पड़ा,
ज़मीन हुई कंक्रीट की,
पशु घूमें भूखे बेचारे और
आँखें उनकी उदास।

ईश्वर ने एक चीज़ बनाई,
धरती उसका नाम,
ईश्वर भी बोले अंबर से,
तू क्या कर बैठा इंसान?

प्रियंका दलवी
मडगांव 1 शाखा, गोवा

खुली आँखों से जो लोग ख्वाब बुनते हैं

खुली आँखों से जो लोग ख्वाब बुनते हैं,
टूटते हैं बार-बार हर बार बुनते हैं।

शोर है ऊंचा और आवाजें खूब सारी,
कोई रूकने को बोले, कोई समझाए ज़िम्मेदारी,
पर वो अपने दिल की ही पुकार सुनते हैं
खुली आँखों से जो लोग ख्वाब बुनते हैं।

मस्तियों से बना फासले, ले तल्ख से फैसले,
करते हैं इबादतें, छुप कर अपने घोंसले,
इकट्ठे से ज्यादा वो एकांत चुनते हैं,
खुली आँखों से जो लोग ख्वाब बुनते हैं।

जागते हैं देर तक, जलते हैं सवेर तक,
आँखों में नींदिया चुभती, पढ़ते रहते एक टक,
धीमे धीमे भुट्टे के जैसे कि भट्ठी में भुनते हैं,
खुली आँखों से जो लोग ख्वाब बुनते हैं।

मेहनतों से मोहब्बतें, संघर्षों से सोहबतें,
फना हुए इस इश्क में, उठा कर सारी ज़हमतें,
सुकून को एक तरफ रख संग्राम चुनते हैं,
खुली आँखों से जो लोग ख्वाब बुनते हैं।

मानिंदरजीत कौर
वराछा रोड शाखा, सूरत

स्त्री

गर्भ में रखकर अपने, वेदनाएं अनेकों सहती है
तुम्हें जन्म देकर अपने स्त्रीत्व को पूर्ण करती है।
लालन-पालन कर तुम्हारा, इंसान तुम्हें बनाती है
बड़े-बड़े कष्ट सहकर भी, अपना कर्तव्य निभाती है।
इस रूप में वह 'स्त्री', एक माता कहलाती है।।

पुरुषों को अपनेपन से, वह राह दिखलाती है
एक डोर के बंधन से
भाई-बहन का रिश्ता निभाती है।
छोटा हो तो लाड प्यार,
बड़ा हो तो सम्मान दिखाती है
एक अनोखा रिश्ता वह, जीवनभर निभाती है।
इस रूप में वह 'स्त्री', एक बहन कहलाती है।।

त्यागकर अपने परिवार को,
वह तुम्हारा परिवार बसाती है
चार दीवारों के मकान को,
वह सच में घर बनाती है।
सुख-दुःख में हर कदम पर,
तुम्हारा साथ निभाती है,
विपदा आयें, संकट आयें,
वह डटकर खड़ी हो जाती है।
इस रूप में वह 'स्त्री', एक पत्नी कहलाती है।।

बनकर तुम्हारे घर की रौनक,
किलकारियों से घर सजाती है
पिता तुम्हें बनाकर वह,
पूर्णत्व का एहसास कराती है।
माँ से भी अधिक वह तुमसे प्यार जताती है
देकर कन्यादान का मौका,
तुम्हें पुण्यभागी बनाती है।
इस रूप में वह 'स्त्री', एक पुत्री कहलाती है।।

अनेकों रिश्तों से जुड़कर, स्त्री ने हमें सँवारा है
माँ, बहन, पत्नी और बेटियाँ,
इस जीवन का सहारा है।।

कुमुद ढाकणे
क्षे.का., नासिक

भारत की विश्व में प्रतिमा

दुनिया के किसी भी व्यक्ति से आप पूछेंगे की वो भारत/इंडिया के बारे में क्या जानते हैं या सोचते हैं, तो आपको आमतौर पर जवाब सुनने को मिलते हैं कि, भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश, एक बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था. ज़्यादातर लोग आपको बताएँगे कि कैसे भारत की सभ्यता, विविधता, शिक्षा, रंग, वेषभूषा और संस्कृति उनसे अलग है और वो कैसे उससे प्रभावित हैं. जब आप दुनिया का मानचित्र देखते हैं तो आप दुनिया पे भारत के प्रभाव को नकार नहीं सकते. उपमहाद्वीप हो या महासागर, उनका नाम भारत से ही प्रेरित है. भारत विविधता में एकता का प्रतीक है और ऐसा दूसरा देश इस दुनिया में नहीं जहां अलग धर्म, अलग नस्ल, अलग भाषा के लोग इतने सद्भाव से एक साथ रहते हैं.

भारत को 'सोने कि चिड़िया' कहा जाता था, हम हमेशा से ये पढ़ते-सुनते हैं और इस बात से आप अनुमान लगा सकते हैं कि प्राचीन काल में भारत कि आर्थिक स्थिति कितनी अच्छी रही होगी, तभी तो भारत पर इतने आक्रमण हुआ करते थे. किन्तु इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत को विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त था. भारत एक वक़्त पूरी दुनिया का शिक्षक रहा होगा, क्योंकि यहाँ कि अर्थव्यवस्था के अलावा राजनीति और कूटनीति शास्त्र, अध्यात्म, योग, वेद, विज्ञान, चिकित्सा और अनेक विषयों में भारत के लोग ज्ञान समृद्ध थे. विश्व की सबसे प्राचीनतम भाषा संस्कृत ने भारत में ही जन्म लिया. पुरातत्ववेत्ताओं ने जब खोज की तो उन्हें वेद, पुराण, उपनिषद और अभिलेखों की संख्या लाखों में प्राप्त हुई थी, जो सभी हस्तलिखित थे. अब अनुमान लगाइए कि इतनी अधिक संख्या में लिखित दस्तावेज़ को लिखने के लिए कितने लोग लगे होंगे, जिन्हें लिखना-पढ़ना आता होगा, वो भी उस वक़्त, जब दुनिया के कई देशों में भाषा और लिपि का विकास नहीं हुआ था.

भारत में जन्मे आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा बहुत प्राचीन काल से उपयोगी साबित हुई हैं, जो चिकित्सा के क्षेत्र में विश्व के लिए प्रेरणादायक बनी. भारत के योग और ध्यान से मिलने वाला शारीरिक लचीलापन, ऊर्जा और शांति का महत्व तो विज्ञान ने भी समझा और उस से लाभान्वित विश्व भर के लोग अक्सर भारत का शुक्रिया अदा करते हैं.

दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक सिंधु घाटी सभ्यता भी अखंड भारत में ही हुआ करती थी. भारत, हिन्दू, बौद्ध, जैन और सिख जैसे विभिन्न धर्मों का उद्गम स्थान रहा है. मुस्लिम, पारसी, यहूदी और ईसाई धर्म के लोग भी दसवीं सदी के आसपास भारत पहुँचने लगे. भारत ने विश्व को कई महान संत और गुरु दिये. बुद्ध, गुरुनानक, महावीर जैसे लोग जिन्होंने अपने प्रश्नों से कई अंधविश्वास खत्म किए और ज्ञान को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाया, फलस्वरूप दुनिया में उन्हें भगवान जैसा दर्जा प्राप्त हुआ. बाद के समय में स्वामी विवेकानंद जैसे गुरु हुए जिन्होंने भारत के ज्ञान और संस्कृति की महत्ता का प्रसार पूरे विश्व में किया.

भारतीय अध्यात्म को समझने के लिए दुनिया के हर कोने से लोग आते हैं. उनमें से जो भारत घूमने या रहने आते हैं, उनको हमारा देश बहुत दिलचस्प लगता है. भारत ने हमेशा से ही दुनिया का ध्यान आकर्षित किया है. भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन और उसमें अग्रणी नेता महात्मा गांधी को पूरे विश्व में इतिहास की किताबों में जगह मिली. अहिंसा और असहयोग दुनिया के कई आंदोलनों का हिस्सा बने जिसका श्रेय भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन को ही जाना चाहिए. भारत में तो हर शहर में सड़कों या चौराहों के नाम उनके नाम से मिल ही जाते है, लेकिन विदेशों में भी गांधी जी के नाम की प्रतिमाएँ होना आम बात हो गयी है.

गणित और विज्ञान के सहारे आज विश्व में कई देश अन्तरिक्ष में पहुँच गए हैं, जो भारत के इन विषयों में योगदान के बिना

अकल्पनीय था. आर्यभट्ट ने प्राचीन काल में ही शून्य की खोज कर यह संभव कर दिया था. ज्यामिति और त्रिकोणमिति का ज्ञान भारतीयों को बहुत पहले ही था. भारत की वास्तुकला और स्थापत्य कला के नमूने कई सदियों पूर्व बनी इमारतों में साफ झलकते हैं. भारत में कई ऐसी इमारतें हैं, जिन्हें यूनेस्को ने विश्व की महान विरासतों की सूची में जगह दी. भारत में मुग़ल काल में बना ताजमहल विश्व में प्यार का प्रतीक माना जाता है और दुनिया के सात अजूबों में शामिल है. लाखों लोग हर साल इसे देखने विश्व के कोने-कोने से आते हैं.

दुनिया में भारत अपने त्योहारों के रंगारंग उत्सव के लिए भी जाना जाता है. होली, दीवाली, दुर्गापूजा के समय विदेशियों का भारत आना और इन उत्सवों का अनुभव करना आम बात हो गयी है. विदेशी तो भारतीय शादियों में भी रुचि रखते हैं. यहाँ की फिल्में पूरी दुनिया में देखी जाती हैं और पसंद की जाती हैं. यू ट्यूब जैसे इंटरनेट प्लेटफॉर्म पर भी पूरी दुनिया के लोगों का भारत के प्रति रुझान देखने को मिलता है, जो यहाँ की फिल्में, कला, पर्यटन और विविधता पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए मिलते हैं. भारतीय मसाले पूरे विश्व में उपयोग होते हैं. भारतीय खाने में विदेशियों की रुचि इस बात से स्पष्ट हो जाती है कि दुनिया के लगभग हर देश में भारतीय खाने के रेस्तरां मिल ही जाएँगे. भारत में मांसाहार के बहुत प्रसिद्ध पकवान मिल जाएँगे जो पूरी दुनिया में बहुत पसंद किए जाते हैं. ब्रिटेन ने अपने राजकीय पकवानों में भारतीय पकवानों विशेष कर चिकन टिक्का मसाला को सर्वोच्च स्थान दिया है. दुनिया इस बात से भी वाकिफ है कि पूरे विश्व में सबसे ज़्यादा शाकाहारी खाने वाले लोग भारतीय ही हैं. खेलों में भी भारत को बहुत तेजी से विश्व पटल पर पहचान मिल रही है. भारत आज विश्व में क्रिकेट का नेतृत्व करता नज़र आता है. आईपीएल आज विश्व के सबसे बड़ी लीगों में शामिल है. बैडमिंटन, हॉकी, टेनिस और भी कई खेलों में भारतीयों ने हमारे देश का नाम विश्व के सामने रोशन किया है. शतरंज जैसे खेल का जन्म भी भारत में ही हुआ है.

आज भारत चाँद से आगे मंगल तक भी पहुँच गया है. जब इसरो ने चंद्रयान और मंगल यान जैसे मिशन को बहुत कम खर्चे के साथ पहली बार में अंजाम दिया तो विश्व का हर देश भारत की तरफ सम्मान से देखने लगा. दुनिया के बड़े-बड़े देशों के सैटेलाइट को भारत ने अन्तरिक्ष में पहुंचाया है. भारतीय लोगों का ज्ञान और अन्तरिक्ष में दिलचस्पी ही वो कारण है कि नासा में काम करने वाले लोगों में से अधिक संख्या में भारतीय हैं. प्राचीन काल में भी ऐसा रहा होगा, तभी तो ज्योतिष विज्ञान, जो ग्रहों और उपग्रहों से जुड़ा है, का जन्म भारत में हुआ. भारत में एक पुराना और जटिल रेल नेटवर्क है, जो काफी बड़ा है और शानदार तरीके से काम करता है, दुनिया के बड़े देश भी इस बात से अचंभित हैं.

दुनिया के बड़े देशों में से एक भारत ने, कभी किसी देश पर पहले आक्रमण नहीं किया है और हमेशा दुनिया को शांति के लिए प्रेरित किया है. भारत एक परमाणु शक्ति है, जो विश्व में भारत के शक्तिशाली होने का प्रमाण है. भारत पर जब भी हमले हुए हैं भारत ने उसका डट कर सामना किया है. भारत की सेना को दुनिया की सबसे शक्तिशाली सेनाओं में गिना जाता है. जब भारत विश्व पटल पर कोई भी बात रखता है तो दुनिया उसे बहुत गंभीरता से सुनती है. वैसे दुनिया को भारत की हर अच्छी बात समझने में वक़्त लगता है जिसका कारण है स्टीरियोटाइप सोच. विश्व में ज़्यादातर लोग अब भी समझते हैं कि भारत एक तीसरे दर्जे का देश है जहां लोग बहुत गरीब हैं, जो नहीं जानते कि दुनिया के सबसे अमीर लोगों में कई भारतीय शामिल हैं. उन्हें लगता है धूल और गंदगी से भरा हुआ है भारत, भारत के लोग अशिक्षित हैं, गरीबों के बच्चे स्कूल नहीं जाते, सड़कों पर मवेशी घूमते रहते हैं, यहाँ के सारे नेता भ्रष्ट होते हैं. इन बातों में कुछ सच्चाई है जो हमें शर्मिंदा करती है और कुछ बातें झूठ या आधी सच हैं, जिनकी पूरी सच्चाई विश्व के सामने लाना हमारा कर्तव्य है.

ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या अगले कुछ वर्षों में, दुनिया में आबादी के हिसाब से अव्वल हो जाएगी. विश्व के बड़े देश इस बात को अच्छी तरह से समझते हैं और यहाँ की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था में निवेश करते हैं. भारत की आबादी का अधिकतम हिस्सा युवावर्ग है, जो दुनिया में श्रमशक्ति के आधार पर सबसे ज़्यादा है. भारतीय बुद्धिमत्ता को विदेशों में ऊंचा आँका जाता है जिसके फलस्वरूप दुनिया के हर बड़े देश में भारतीय नागरिक कार्यरत हैं. बहुत बड़ी-बड़ी कंपनियों में जैसे अरविंद कृष्णा-आईबीएम, सुंदर पिचाई-गूगल, सत्य नडेला-माइक्रोसॉफ़्ट, शांतनु नारायण-अडोबे, और भी कई भारतीय सीईओ जैसे पद पर विराजमान हैं. भारत एक बार फिर विश्व गुरु बनने के लिए अग्रसर हो रहा है. हाल के दिनों में विश्व की सबसे ऊंची लोहे से बनी सरदार पटेल की प्रतिमा, दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम, नए एक्सप्रेस हाइवे, बड़ी सुरंगें, ऊंचे पुल, दुनिया का सबसे बड़ा रेल नेटवर्क, आने वाले दिनों में बुलेट ट्रेन, बड़े बन्दरगाह और एयरपोर्ट, इस तरह की आधारभूत संरचनाएँ भारत के उज्ज्वल भविष्य की ओर इशारा कर रही हैं.

नितेश पाठक
सुकुलदेहान शाखा, रायपुर

विशेष साक्षात्कार
प्रो. गणेश नारायण दास देवी

प्रो. गणेश नारायण दास देवी प्रसिद्ध साहित्यिक आलोचक एवं भाषा अनुसंधान एवं प्रकाशन केंद्र, वडोदरा के संस्थापक निदेशक हैं. श्री गणेश देवी को साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2014 में भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया. डॉ. गणेश और उनकी पत्नी डॉ. सुरेखा देवी 'भाषा' नामक गैर-राजनीतिक ट्रस्ट संचालित करते हैं. भारत की लुप्त होती भाषाओं पर व्यापक सर्वेक्षण, संवर्धन और संरक्षण तथा दस्तावेजीकरण करने का उन्होंने स्वेच्छा से बीड़ा उठाया है. उनका कहना है कि आम धारणा को तोड़ती हुई हिन्दी तेज़ी से आगे बढ़ रही है. 2010 में उनके निर्देशन में पीपल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया ने भारत की 780 जीवित भाषाओं का सर्वेक्षण प्रकाशित किया. भाषा सर्वेक्षण के अंतर्गत आदिवासियों की भाषा पर प्रो. गणेश देवी का विशेष कार्य है. इनके द्वारा रचित एक समालोचना' आफ्टर एम्नीशिया : ट्रेडिशन एंड चेंज इन इंडियन लिटरेरी क्रिटीसिज़्म' के लिए उन्हें सन 1993 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया. उनसे हिंदी और भाषा के विभिन्न पहलुओं पर क्षे.का. मेहसाणा में पदस्थ हमारी संवाददाता, डॉ. मनीषा की बातचीत.

प्रश्न – सर, सबसे पहले हम आपके बचपन, शिक्षा-दीक्षा और फिर अंग्रेज़ी के प्रोफेसर बनने तक का सफ़र जानना चाहेंगे.

मेरे माता-पिता घर में गुजराती बोलते थे, मैं स्कूल में मराठी पढ़ता था. हाईस्कूल में गया तो पहली बार हिंदी और हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी पढ़ी और मुझे हिंदी का साहित्य, प्रेमचंद, फणीश्वर नाथ रेणु और श्रीलाल शुक्ल जी को पढ़ना अच्छा लगता था. कॉलेज में मैंने अंग्रेजी पढ़ना तय किया और एम.ए, पीएचडी अंग्रेजी में की. इस तरह से 4 भाषाओं से मेरा संपर्क हुआ और मुझे श्री अरबिंदो को पढ़ना अच्छा लग रहा था. उनके जन्म शताब्दी वर्ष पर उनसे संबंधित शोध कार्य करने के पश्चात सयाजीराव गायकवाड विश्वविद्यालय, वडोदरा में अंग्रेज़ी भाषा में अध्यापन कार्य शुरू किया.

प्रश्न – अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर से आप एक भाषाकर्मी बन गए, जिसने भारतीय भाषाओं के सर्वेक्षण जैसा बड़ा काम किया, यह कैसे संभव हो पाया?

मैं यूनिवर्सिटी में बहुत ही खुश था और लेक्चरर से प्रोफेसर बनकर मुझे प्रतिष्ठा मिली थी. देश-विदेश में घूमता था. अवार्ड मिलते थे. बहुत सारी फेलोशिप मिली थी. लेकिन मुझे ऐसे लगा कि मैं साहित्य पढ़ाता हूं और साहित्य भाषा से बनता है और अगर भाषा ही मर रही हो, तो क्या मेरा यूनिवर्सिटी में पढ़ाना प्रामाणिक है, सही है? भाषा और साहित्य पढ़ाने के लिए जो मुझे सैलरी मिलती थी, वह सारी यूजीसी से आती थी. गरीबों के पैसे भी आते थे. मुझे लगा कि श्रमिक है, बहुत गरीब है, उनकी भाषा मर रही है. एक तरफ भाषाएं मर रही है और दूसरी तरफ मेरा नाम बड़ा हो रहा था जो कि मुझे ठीक नहीं लग रहा था. इसलिए मैंने तय किया कि मैं यूनिवर्सिटी छोड़ दूंगा और इन सारी चीजों की रिसर्च करने के लिए, अभ्यास करने के लिए कोई केंद्र बना लूंगा. इस सोच के तहत 'भाषा रिसर्च एंड पब्लिक सेंटर' बनाने की कोशिश कुछ जर्नलिस्ट लोगों की मदद से की. इस कार्य में किसी से कोई अपेक्षा नहीं थी और उसकी जरूरत भी नहीं महसूस हुई. रिसर्च सेंटर में कुछ चर्चा-परिसंवाद हुए, आदिवासी भाषाओं में मैगजीन निकालकर उसका पब्लिकेशन हुआ. मैं खुद आदिवासी गांवों में जाकर रहा. इस काम को ज्यादा स्थान मिले इसलिए मैंने बड़ौदा से 90 किलोमीटर दूर तेजगांव नामक गांव में शुरुआत की. आदिवासियों की भाषा को समझा. भाषाओं को कैसे जिंदा रखा जाए, इसकी तलाश शुरू हुई.

प्रश्न – 'भारत की भाषाओं का सर्वेक्षण' यह क्या संकल्पना है?

एक भाषा में एक शब्द है, तो उस शब्द का मतलब दूसरी भाषा में क्या होगा, वह क्यों बदला होगा, इसमें मुझे बहुत ज्यादा दिलचस्पी थी. परिभाषा, जिस प्रकार परिभाषा में परि यह शब्द बाहर और भाषा मतलब, बाहर की भाषा क्या हो? यह, इस तरह शब्दों की तरफ देखना है. भाषा का इतिहास क्या होगा? अनुवाद करना मुझे अच्छा लगता था. क्योंकि अनुवाद से भाषाएं बड़ी होती हैं. भाषाओं से नए शब्द आते हैं. भाषा में भाषा अपने इर्द-गिर्द दीवारें बनाती हैं, कई बार वह थक जाती हैं, गिर जाती और गिरकर

नष्ट हो जाती हैं. 1997-98 की बात है, मैंने देखा कि सेंसस में बहुत कम भाषाओं का जिक्र है. तो मेरे मन में आया कि फिर भारतीय भाषाएं कहां चली गई? क्या वे खत्म हो गईं? आदिवासियों की भाषाओं के विषय में प्रश्न थे. इन प्रश्नों का उत्तर जानने की कोशिश कर रहा था. लेकिन उसे यूनिवर्सिटी की मान्यता नहीं थी. अपनी भाषा की स्थिति क्या है, उसके बारे में, हमने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' करने का निर्णय लिया. लेकिन इतना आसान नहीं था, जितना मैं अब आपको बता रहा हूं. उसके लिए बहुत गहराई में जाकर शोध किया गया. आज बहुत सारे शोध उपलब्ध हैं. एक भाषा का अंत कहां होता है और आरंभ कहां होता है, भाषा का संबंध क्या है, ऐसे बहुत सारे प्रश्न हैं. इसके लिए मैंने लाइब्रेरी बनाई जिसमें चर्चा-परिसंवाद होते रहे और फिर मैंने 2005 में भाषा संबंधी एक फार्मूला बनाया, जो दिखने में बड़ा आसान है. लेकिन उसे समझ आने में काफी साल लग जाते हैं. फिर उसे लेकर जब मुझे लगा, यह संभव है, तो मैंने एक छोटे स्केल पर 2010 में अपने आपसे शोध कार्य के विषय में सोचना शुरू किया.

प्रश्न – आपका कहना है कि भारत भाषाओं का कब्रिस्तान बनता जा रहा है. इसके पीछे क्या वजह नज़र आती है?

भाषा अपने इंटीग्रेट की दीवारें बनाती है. वह थक जाती है, सिकुड़ जाती हैं. भारत भाषाओं का कब्रिस्तान बनता जा रहा है. 1977-78 की सेन्सस रिपोर्ट में देखा गया कि सेंसस 1971 में बहुत कम भाषाओं का जिक्र था. तो मेरे मन में आया कि शेष भाषाएं कहां चली गई? क्या 10 साल में वे खत्म हो गईं या उनकी प्रतिष्ठा गिर गईं या सरकार को वह भाषाएं पसंद नहीं है, इसका रहस्य क्या है? उसके पीछे कारण क्या है? मैं यह जानना चाहता था. फिर मैं बाकी भारतीय भाषाओं की तरफ देखने लगा और देखा तो थोड़ा चौकन्ना हो गया कि बहुत सारी भारतीय भाषाएं मृतप्राय हो रही हैं. जो शिष्ट साहित्य है. शिष्ट माने फणीश्वर नाथ रेणु, यू आर अनंतमूर्ति, अय्यप्पा मणिकर का साहित्य आदि आसानी से उपलब्ध है. लेकिन कुछ साहित्य जो उपलब्ध नहीं है उसके प्रति चिंता हुई. विशेषकर आदिवासियों के साहित्य के विषय में, आदिवासियों की भाषाओं में, वो जो लिखते हैं, गाते हैं, क्या उनकी रचनाएं, कहानियां, महाकाव्य है, ये सब प्रश्न भी मन में उठने लगे.

प्रश्न – भाषाओं का संरक्षण क्यों आवश्यक है? क्या किसी भाषा के मरने से देश या समाज को कोई नुकसान होता है?

भाषा एक तरह से जीवन तथा संसार का दृष्टिकोण होता है. भाषा के जरिए, आप को देखने का जरिया मिलता है. जैसे आप हिंदी बोलते हैं और जब भी आकाश की तरफ देखते हैं, आपके मन में कल्पना आती है कि क्या आकाश के ऊपर भी कोई स्वर्ग हो सकता है? कहीं-ना-कहीं मन में होता है. आदिवासियों के दृष्टिकोण से, आदिवासी यह नहीं मानते कि जमीन के नीचे पाताल है. वो मानते हैं कि जमीन में हमारे पूर्वज हैं और वे पूर्वज जिंदा हैं. वे मानते हैं कि जमीन के अंदर हमारा भूतकाल है. आपका पाताल और स्वर्ग और आदिवासी का भूतकाल और भविष्य काल एक समय है. यह काल है, यह अलग जीवन दृष्टि है और हर भाषा एक पूरी जीवन दृष्टि लेकर खड़ी होती हैं. जब भाषा चली जाती है, तो दुनिया की तरफ देखने का एक अलग दृष्टिकोण खत्म हो जाता है, लुप्त हो जाता है. तो इस प्रकार दोबारा दृष्टिकोण बनाने के लिए, दूसरी भाषा बनानी पड़ेगी, जो संभव नहीं होगा. विज्ञान के इतिहास में, यदि एक भाषा चली जाए, तो दूसरी भाषा वैसी की वैसी विकसित हो नहीं सकती.

प्रश्न – भाषा एवं लिपि के इतिहास के विषय में कुछ बताएं

मैं हिंदी का उदाहरण देता हूं. उत्तराखंड में कुमाऊंनी और गढ़वाली भाषा हिंदी से अलग है. छत्तीसगढ़ में आठ या दस ऐसी भाषाएं हैं, जिन्हें देख कर लगेगा कि ये हिंदी है. लेकिन नजदीक से देखें, तो ये सभी भाषाएं अलग हैं.

झारखंड में सोलह भाषाएं हैं, जिन्हें झारखंड में अधिकृत भाषाएं बनाया गया हैं. हमें बहुत बार लगता है कि जो अलिखित भाषाएं हैं, जिनकी लिपि नहीं है, वे किसी अन्य बड़ी भाषा का एक छोटा सा हिस्सा होगा. लेकिन यह समझ वैज्ञानिक नहीं है क्योंकि आरंभ में दुनिया की सभी भाषाएं अलिखित ही थी. भाषाओं का इतिहास 70000 साल पुराना है जबकि लिपि का इतिहास केवल 5000 साल पुराना. प्रिंटिंग आने के बाद लिखने वालों की संख्या बढ़ गई. लिपि बद्ध भाषा मुद्रित होने लगी. मुद्रित रूप के कागज का हस्तांतरण करना आसान बना, लिखी हुई सामग्री का दूर तक पहुंचना आसान हो गया.

प्रश्न – संवैधानिक सूची में बाइस भाषाएं हैं. उनमें और कौन सी भाषा शामिल की जा सकती हैं?

संविधान सभा ने संविधान को बनाया और उसमें चर्चा हुई. उस चर्चा के अंत में यह आया कि जिन भाषाओं में लिखित साहित्य उपलब्ध है, उन भाषाओं के नाम आठवें परिशिष्ट में शामिल किए जाएं. तो उस समय 14 नाम थे और अब बाइस भाषाओं के नाम है. उस समय उन सारी भाषाओं में भारतीय साहित्य नहीं था. लेकिन अब उनमें भारतीय साहित्य आ गया है. यानि दुबारा संविधान सभा बैठे तो उनको जरुर महसूस होगा कि मेघालय की गारो और मिजो भाषा आठवें परिशिष्ट में होनी चाहिए. कर्नाटक से तुलु भाषा और हिंदी भाषी प्रदेश से भोजपुरी हैं. लिंगविस्टक सर्वे में 2011 में भोजपुरी बोलने वालों की संख्या पांच करोड़ 20 लाख दी गई है. पांच करोड़ लोग भोजपुरी बोलते हैं. जिसमें सिनेमा है, साहित्य है, नाटक है. भोजपुरी को एक अनुसूचित भाषा बनाया जाए, भोजपुरी डिजर्व करती है लेकिन जैसे ही भोजपुरी को अनुसूचित भाषा बनाया जाएगा तो अलग राज्य की मांग आएगी. तुलु भाषा है, लेपचा भाषा है. शायद इसलिए सरकारें भाषा का समावेश आठवीं परिशिष्ट में करने से केवल भाषिक अंग से विचार नहीं करती बल्कि राजनीतिक नजर से भी उसकी तरफ देखा जाता हैं. अब यह सही है या गलत, यह मैं नहीं कह सकता, लेकिन हर भाषा का अपना अधिकार है. फिर आठवें परिशिष्ट में हो या ना हो. भाषा में पक्षपात क्यों करें? हमें किसने अधिकार दिया? क्या यह भाषा लिखी नहीं गई थी? उन भाषाओं का दोष है या जिन्होंने प्रिंटींग टेक्नोलॉजी वहाँ नहीं पहुंचाई, उनका दोष है? हर भाषा सम्मान योग्य है. हर भाषा को, हर भाषा के बोलने वाले को भाषिक नजर से नागरिकत्व पूरा होना चाहिए. भाषा का अपना-अपना अस्तित्व है. हमारी इतनी सारी भाषाएं हैं, उनका उत्सव मनाना चाहिए. यह इतिहास से इंसान को मिली देन हैं. इसे संभाल के रखना चाहिए, ऐसा मैं मानता हूँ.

प्रश्न – दक्षिण में हिंदी भाषा को लेकर समस्याओं के समाधान के बारे में कुछ बताइए?

जब हिंदी भाषा प्रचारिणी सभा ने काम शुरू किया, तो सबसे ज्यादा रजिस्ट्रेशन दक्षिण भारत से हुआ था. बड़े प्यार से लोग हिंदी लिखते हैं और बोल भी लेते हैं. उनकी हिंदी सुनने में प्यारी लगती है. कोई तमिलियन, हिंदी बोले तो 'ग' का 'क' करके सुनने में अच्छा लगता है लेकिन हिंदी का इंपोजिशन हो रहा है. कोई अधिकारी आकर उन्हें बताता है कि 'हिंदी सीखो', तब जाकर उसका विरोध होता है. जैसे कोई भोपाल में हमें आकर कहे कितनी सुंदर हिंदी बोलते हो, आपको कन्नड़ सीखनी चाहिए, मलयालम सीखनी चाहिए, सीखनी ही पड़ेंगी, तो वह बोलेंगे कि हमें यह पसंद नहीं. लेकिन अगर कोई उन्हें ऐसा बोलेगा नहीं, तब वह एक दूसरे की भाषा सीखते हैं. जैसे आदि शंकराचार्य तो केरल के थे और हिमालय तक गए थे. रास्ते में उन्होंने जो बातें की होंगी, वे मलयालम में तो नहीं की होगी. सुब्रमण्यम भारती ने पूरे देश की बात की. इसलिए भाषा कभी किसी दूसरी भाषा के साथ लड़ाई नहीं करती. जैसे पर्शियन हमारे यहां आई. उड़िया बोलने वाले, मराठी बोलने वाले, पर्शियन से प्यार करने लगे बल्कि भारत में प्यार करते समय कोई पर्शियन शब्द ना आए तो ही आश्चर्य होता है. हिंदी ने पर्शियन के कई सारे शब्द स्वीकारे. पर्शियन ने हिंदी के कई सारे शब्द स्वीकारे.

प्रश्न – **'After Amnesia' 'Crisis Within' किताबों के बारे में कुछ बतायें**

'After Amnesia' साहित्य की समीक्षा के विषय में उलझने वाले वाले प्रश्नों पर मेरी सोच है और 'Crisis Within' में हमारे देश में किस तरह की शिक्षा होनी चाहिए और क्यों नहीं हैं, उसके बारे में चर्चा की गई है.

प्रश्न – नई शिक्षा नीति के बारे में आपने चर्चा की है, उसके बारे में कुछ बताइए?

नई शिक्षा नीति के बारे में, मैं बहुत आनंदित हूँ कि उसमें बहुत सारी भाषाओं के बारे में चर्चा हुई है. शिक्षा के निजीकरण के विषय के बारे में मैं चिंतित हूँ. मैं मानता हूँ कि शिक्षा हर नागरिक, हर बच्चे का अधिकार है. मैंने सरकारी स्कूल में पढ़ाई की है. मेरी पढ़ाई के लिए मेरे माता-पिता के पास पैसे नहीं थे. सरकारी पढ़ाई की, इसलिए मैं पढ़ पाया. तो नई शिक्षा नीति के बारे में मेरा यही कहना है कि सरकार अपनी जिम्मेदारी स्वीकारें.

प्रश्न – राजभाषा-हिंदी का कार्यान्वयन कैसे और किस तरह बेहतर किया जा सकता है?

राजभाषा हिंदी का कोई जब अधिकृत पत्र आता है और उसे लेकर आप किसी गांव की सड़क पर जाकर पढ़िए और लोगों से पूछिए, 'क्या यह उनकी समझ में आया?' तो आपको जवाब मिलेगा 'नहीं'. 'गोल्डन रूल इज मेक इट सिंपल, मेक इट इज़ी'. आसान हिन्दी हम सब बोल लेते हैं, हम सब समझ लेते हैं. आपके लिए और सभी राजभाषा अधिकारियों के लिए यह बहुत बड़ा चैलेंज है. हमारे देश के लोग भाषा के लिए बड़ा प्यार रखते हैं और हमारे लोग इसे स्वीकारेंगे भी लेकिन हमें लोगों की भाषा भी स्वीकारनी पड़ेगी. तब वे हमारी भाषा भी सीखेंगे.

डॉ. मनीषा
क्षे.का., मेहसाणा

धर्मनिरपेक्षता और भारत

हमारे इतिहासकारों के अनुसार सनातन धर्म की उत्पत्ति भारतीय उपमहाद्वीप से मानी गयी है. भारतीय महाद्वीप का आकार बहुत बड़े क्षेत्र में फैला था जो कि इंडोनेशिया, मलेशिया, बहामा, मॉरिशस, थाईलैंड, मालदीव, म्यांमार, वियतनाम, कम्बोडिया, नेपाल, फिजी, श्रीलंका आदि देशों तक भारतीय इतिहास के अवशेष पाए जाते हैं.

आज भारत ही एक ऐसा देश है, जहां सर्वधर्म समभाव है. हमारे देश में हर धर्म और उसके अनुयाईयों को पूर्ण स्वतंत्रता है. हर धर्म का नागरिक भारत देश का नागरिक कहलाता है. यहाँ हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, बौद्ध, जैन, सिख, पारसी आदि मुख्य धर्म हैं. इन धर्मों के अनुयाईयों को अपने धर्म के निर्वाह की पूर्ण स्वतंत्रता है. सभी धर्म मानने वालों को अपने धार्मिक स्थल बनाने की पूर्ण छूट है. यहाँ तक कि सार्वजनिक कार्यक्रम की पूरी स्वतंत्रता है. लेकिन अगर देश की अखंडता और एकता पर कोई धर्म विशेष हावी होता है तो फिर उस पर कड़े प्रतिबन्ध का प्रावधान है.

आपको अपने धर्म के अंतर्गत अपने विचारों को प्रकट करने का पूर्ण अधिकार है. लेकिन अगर आप धर्म की आड़ में देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त पाए जाएंगे तो आप पर कड़ी कार्यवाही का भी हमारे संविधान में अधिकार दिया गया है. हमारे संविधान में सम्प्रभुता और अखंडता से ऊपर धर्म को नहीं माना है. यही हमारे देश की धर्मनिपेक्षता की विशेषता है. इसी वजह से विश्व में हमारे देश को धर्मनिपेक्षता के सन्दर्भ में प्रथम स्थान प्राप्त है.

हमारे देश की शिक्षा नीति में धर्म निरपेक्षता को बेहद महत्त्व दिया गया है. स्कूली शिक्षा में छोटी कक्षाओं से लेकर बारहवीं कक्षा तक स्कूल के पाठ्यक्रम में सभी धर्मों की शिक्षा को पढ़ाया जाता है. हर विद्यार्थी अपनी इच्छा से जिस विषय का अध्ययन करना चाहता है, उसको अध्ययन करने की पूर्ण स्वतंत्रता है और उच्च शिक्षा में उसको मानव डिग्री की शिक्षा में अपने पसंदीदा धर्म पर शोध करने की भी आज़ादी है. इसलिए विश्व के अनेक विद्यार्थी भारत में आकर हमारे धर्मो और धर्म पर शोध कर रहे हैं और शोध पत्रों को विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रकाशित कर रहे हैं.

आज जब हम इतिहास में झांककर देखते हैं कि हमारे भारतीय उपमहाद्वीप के देशों में बौद्ध धर्म का अधिकाधिक विकास हुआ है, विशेषकर दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों जैसे कम्बोडिया, वियतनाम, म्यानमार, श्रीलंका, ताइवान, थाईलैंड, मालदीव, फिजी आदि, इसकी मुख्य वजह है धार्मिक स्वतंत्रता. बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भारत देश में हुई लेकिन इसके अनुयायी पूरे विश्व में मिलेंगे. बौद्ध भिक्षुओं ने पूरे विश्व में जाकर इस धर्म की शिक्षा दी और हर देश में जाकर बौद्ध मठ बनवाये और वहाँ रहकर इस धर्म के विचारों का प्रसार-प्रचार किया. बौद्ध भिक्षुओं ने भारत में आकर गौतम बुद्ध के जन्म स्थान और शिक्षा स्थानों का दौरा किया और वहाँ रहकर अपना ज्ञान बढ़ाया. फिर अपने देशों में जाकर वहाँ के नागरिकों को इस धर्म की महत्ता का ज्ञान बाँटा. परिणामस्वरुप आज हमारे देश से ज्यादा अन्य देशों में बौद्ध धर्म के अनुयाइयों की संख्या है.

अब हम आएँ हिन्दू धर्म पर. हिन्दू धर्म के अनुयायी बहुत हैं. भारत देश एक ऐसा देश है जहां हिन्दू बहुसंख्यक है. इसके अलावा नेपाल भी एक हिन्दू बहुसंख्यक देश है. इसके अतिरिक्त इंडोनेशिया, मलेशिया, कम्बोडिया में हिन्दू देवी-देवताओं के प्राचीन मंदिर मिले हैं और कुछ अन्य देशों में मंदिरों के अवशेष भी पाये गए हैं. भूटान, श्रीलंका, मॉरिशस, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, वेस्ट इंडीज के द्वीप ऐसे हैं, जहाँ हिन्दूओं की आबादी अच्छी तादाद में है. आपको हिन्दू हर विकसित देश में भी मिल जाएंगे. भले ही कुछ प्रतिशत में हो जैसे कि अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, अरब देश, दक्षिण अफ्रीका और यूरोपियन देश. इसकी वजह है धार्मिक स्वतंत्रता जो कि धर्म निरपेक्षता का मूल तत्व है.

इसके अलावा एक महत्वपूर्ण धर्म के बारे में जिक्र करना बहुत आवश्यक है, 'पारसी' धर्म. जिसकी उत्पत्ति फारस की खाड़ी यानी कि जो ईरान है वहाँ से हुई थी. आज इस धर्म के अनुयायी बहुत सीमित रह गए है. इसके अनुयायी फारस की खाड़ी के देशों में मिलेंगे जैसे कि ईरान, इराक या फिर भारत में विशेषकर महाराष्ट्र के मुंबई शहर और गुजरात के भागों और तथा गोवा और पणजी में.

भारत ही हमारा इकलौता ऐसा देश है जहाँ धर्म निरपेक्षता की वजह से हर धर्म का सम्मान होता है. यही वजह है कि हमारे देश में हर धर्म मौजूद है.

अंकित गुप्ता
क्षे.का., इंदौर

भारतीय संस्कृति एवं दर्शन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. अत: उसकी संस्कृति का विकास सामाजिक एवं सामूहिक रूप से ही होता है. किसी भी देश की संस्कृति उस देश की धरोहर होती है. संस्कृति जीवन जीने का तरीका है. संस्कृति, जिसका अर्थ है-किया गया कार्य, व्यवहार, आचरण आदि. संस्कृति को जीने का ढंग बताया गया है, जो समय के साथ-साथ परिवर्तित होता रहता है. जीने का यह ढंग अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों से जुड़ा है. अतीत से यह ऊर्जा लेता है, वर्तमान इसे आकार देता है और भविष्य इसे उन प्रेरणाओं से जोड़ता है. जो सपने ही नहीं दिखाती, सपनों के पूरा होने का आश्वासन भी देती है.

इस प्रकार संस्कृति एक बौद्धिक क्रिया अथवा स्वरूप कही जा सकती है, जिसमें किसी देश, जाति या समाज का आचार-विचार, रहन-सहन, बोली, भाषा, वेशभूषा आदि का समावेश होता है. जिसे एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंपती है. विभिन्न सभ्यताओं का उत्कर्ष एवं अपकर्ष संस्कृति द्वारा ही मापा जाता है. संस्कृति के प्रभाव से ही व्यक्ति को गृहस्थ, राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, कलात्मक एवं धार्मिक ऐसे समस्त कार्यों को करने की प्रेरणा प्राप्त होती है, जो व्यक्तिगत एवं सामूहिक विकास के लिए आवश्यक हैं. संस्कृति को साहित्य, कला, दर्शन, विज्ञान, सामाजिक, नैतिक एवं धार्मिक विश्वास किसी भी रूप में देखा जा सकता है.

भारतीय संस्कृति की विशेषता है कि उसने विविध सभ्यताओं और संस्कृतियों को आत्मसात कर लिया है. ये सभ्यताएँ जल-थल की सीमा को लांघ कर भारत आईं, किन्तु प्रारंभिक टकराव के बाद भारतीय संस्कृति में घुल-मिल गईं. प्रत्येक भारतीय को अपनी श्रद्धा के अनुसार धर्म को अपनाने, अपने रीतिरिवाजों को मनाने एवं विचारों को प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता है.

संस्कृति निरंतर परिवर्तनशील है. किसी संस्कृति में यदि नए संस्कारों का समावेश हो रहा है तथा वहाँ के लोग बिना किसी आपत्ति के नई संस्कृति को ग्रहण कर रहे हैं, तो नई संस्कृति मूल संस्कृति में बदलाव ला देती है. नई संस्कृति यदि शक्तिशाली है और अपना प्रभुत्व कायम कराने में सफल हो जाती है, तो वह मूल संस्कृति को नष्ट भी कर सकती है. किन्तु, यदि नई संस्कृति मूल संस्कृति में घुल-मिल नहीं पाती तथा लोकमानस उसे अंगीकार नहीं करता, तो उसे अपनाया नहीं जाता.

हमारा सांस्कृतिक संकट विविध प्रकार का है. भले ही हमारी संस्कृति में विशेष गुण है, जो अन्य देशों की संस्कृति से हमें अलग करता हैं. फिर भी अपवादस्वरूप कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं या कटुसत्य हैं, जिन्हें स्वीकार करना पड़ता है. धर्म के नाम पर सांप्रदायिक प्रतिद्वंद्विता, पृथकता और भेदभाव की भावना, दुराचरण आदि वर्तमान में विष की तरह व्याप्त हैं. सबसे बड़ी समस्या पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण है. देश का युवा वर्ग ही नहीं बच्चे एवं बुजुर्ग भी पश्चिमी संस्कृति को अपनाकर गर्व का अनुभव करते हैं. यह बड़ी विडम्बना की बात है कि भारतीय दार्शनिक एवं शिक्षक पश्चिमी संस्कृति से विशेष प्रभावित हो रहे हैं. विदेशी संस्कृतियों के सतत प्रभाव से अपनी संस्कृति विलुप्त होती जा रही है.

भारतीय दर्शन को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है. भौतिकवादी दर्शन और आध्यात्मवादी दर्शन. जिसे आस्तिक तथा नास्तिक दर्शन भी कहा जाता है. आस्तिक वह माना जाता है जो यह विश्वास करता है कि परलोक है.जबकि नास्तिक दर्शन में परलोक को अस्वीकार किया गया है. भारतीय प्राचीन परंपरा के अनुसार छ: दर्शन अधिक प्रसिद्ध और प्राचीन है. ये छ: दर्शन न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त है. इन छ: दर्शनों के अतिरिक्त लोकायत (चार्वाक) तथा शैव एवं शाक्त दर्शन भी दर्शन का अंग है. प्रस्तुत लेख में हम लोकायत दर्शन, जिसे चार्वाक दर्शन भी कहा जाता है, के संबंध में चर्चा करेंगे.

चार्वाक दर्शन : लोकायत दर्शन के प्रणेता चार्वाक ऋषि को माना जाता है. कुछ विद्वानों के अनुसार, संसार खाने-पीने तथा मौज उड़ाने (चवर्ण) के लिए है. इस दृष्टि से चार्वाक, किसी व्यक्ति विशेष का नाम न होकर, उस सारे संप्रदाय के अनुयायियों

के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो पुनर्जन्म और देवता के विरोधी थे. चार्वाक अनुमान को प्रमाण नहीं मानता, इसलिए वह ईश्वर, आत्मा, परलोक के अनुमान को स्वीकार नही करता. मोक्ष, धर्म और अधर्म तथा पाप-पुण्य के भेद को नहीं मानता. पुरोहितों और कर्मकांडों की तीव्र निंदा करता है. चार्वाक के अनुसार, 'देखना ही विश्वास करना है, कुछ अग्नियों को देखकर यह धारणा बना लेना कि जहां-जहां आग है, वहाँ-वहाँ धुआँ है, उचित नहीं, क्योंकि आग से धुआँ देखकर उनमें कार्य-कारण संबंध स्थापित करने में कभी-कभी गलती हो जाती है क्योंकि गीली लकड़ी, जो उपाधि है और जिसके कारण धुआँ है उसकी उपेक्षा कर दी जाती हैं.

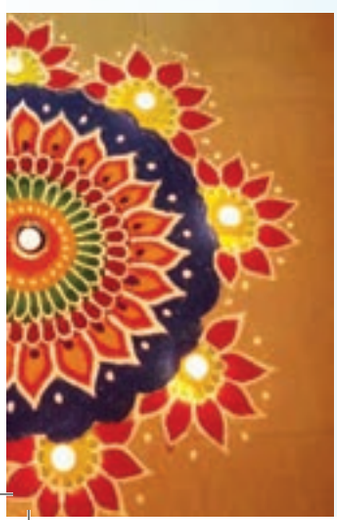

चार्वाक को छद्मवेशी राक्षस कहा गया है. महाभारत में कुरुक्षेत्र की लड़ाई के बाद जब पांडव विजय के बाद समारोहपूर्वक घर वापस लौट रहे थे तब युधिष्ठिर को आशीर्वाद देने के लिए ब्राह्मण नगर द्वार पर इकट्ठा हुए. चार्वाक इन ब्राह्मणों में से एक था. उसने आगे बढ़कर युधिष्ठिर से कहा, ''वह ब्राह्मणों का जमाव तुम्हें कोस रहा है क्योंकि तुमने अपने बंधुओं को मारा है. अपने ही आदमियों का नाश करके, अपने ही बड़े-बूढ़ों का खून बहाकर तुम्हें क्या मिल गया?'' चार्वाक के ये उदगार अप्रत्याशित थे और सब ब्राह्मण उसे सुनकर स्तब्ध रह गए. युधिष्ठिर को भी उसने मार्मिक रूप से आहत किया. लेकिन दूसरे ब्राह्मण होश में आए और उन्होंने राजा से कहा कि यह चार्वाक तो छद्मवेशी राक्षस है और तब उन्होंने इस विद्रोही चार्वाक को जला डाला. महाभारत के इस प्रसंग में सच बोलने के साहस की सराहना करते हुए देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय अपनी पुस्तक 'भारतीय दर्शन' में लिखते हैं, ''चार्वाक ने ऐसी कोई बात नहीं कही जिसमें स्वार्थ-परायण सुखभोगवाद की गंध भी हो. क्योंकि युधिष्ठिर पर जिस कुकृत्य का आरोप लगाया गया, वह था अपने बंधुओं को मारना और बड़े-बूढ़ों का खून बहाना और कुरुक्षेत्र की लड़ाई में यह सब हुआ भी था. बंधुओं को मारना पड़ गया था, पुराने समाज की नैतिक मान्यताएँ पैरों तले कुचली गई थीं.चार्वाक का इसके विरोध में आवाज़ उठाना साहसपूर्ण था.''

एक अन्य प्रसंग में राम के वनवास तथा दशरथ के स्वर्गवास के पश्चात वन में लोकायतवादी जाबालि की भेंट राम से होती है और वह राम से कहते हैं, ''अन्य के उपायों में धनोपार्जन में क्लेश देख, दूसरों का धन हरने हेतु चतुर लोगों ने दान द्वारा लोगों को वश में करने के लिए धर्मग्रंथों में लिख रखा है कि यज्ञ करो, दान दो, दीक्षा लो, तप करो, संन्यास लो अर्थात लोगों को धोखा देकर उनका धन हरण करना ही इन धर्मग्रंथो की रचना का मुख्य उद्देश्य है. वास्तव में इस लोक के अतिरिक्त परलोक आदि कुछ भी नहीं है. इसे आप भली-भांति समझ लीजिए. अत: जो सामने है उसे ग्रहण कीजिए और जो परोक्ष अर्थात प्रत्यक्ष नहीं है उसे भूल जाइए. अर्थात प्रत्यक्ष में सुखदायक राज्य को ग्रहण कीजिए और परोक्ष की बात (सत्यप्रज्ञ करने से बड़ा पुण्य होगा) को भुला दीजिए.''

जिस धर्म में दु:ख अधिक और सुख कम मिले उसको त्यागना इस दर्शन का मूल तत्व है जो लोक को अधिक भाया है. परंतु लोकायत मत की आधारभूत प्रामाणिक सामग्री के अभाव के कारण इसको नष्ट कर दिया गया. संक्षेप में, चार्वाक दर्शन ने अंधविश्वास की बेड़ियों को तोड़ने तथा कर्म बंधन से मुक्त होने में जनता की सहायता की. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी राजकुमारों को निर्देश दिया गया है कि वे सांख्य और योग प्रणालियों के साथ-साथ लोकायत दर्शन का भी अध्ययन करें. विद्वानों ने इस लोकप्रिय दर्शन की आलोचना करते हुए कहा है ''जिस रूप में यह जीवन दर्शन प्राप्त हुआ है, उस रूप में वह संवेदनशील और समझदार नर-नारियों के बरतने योग्य नहीं है.''

राजेश जोशी
के.का., मुंबई

भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक वर्गीकरण

दूसरों के जीवन में शामिल होना और दूसरों को, अपने जीवन में शामिल करना ही संस्कृति है.

नमस्ते या नमस्कार भारतीय उपमहाद्वीप में अभिवादन करने का सामान्य तरीका है. नमस्कार को नमस्ते की तुलना में ज्यादा औपचारिक माना जाता है. हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म के लोग भारत और नेपाल में ज़्यादातर प्रयोग करते है. शाब्दिक अर्थ में, इसका मतलब है, मैं आपको प्रणाम करता हूँ. यह शब्द संस्कृत शब्द (नमः) : प्रणाम, श्रद्धा, आज्ञापालन और आदर एवं (ते) : आपको से लिया गया है.

भारत की संस्कृति बहुआयामी है. जिसमें भारत का महान इतिहास, विलक्षण भूगोल और सिंधु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरुआत और उसके अस्तगमन के साथ फली-फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल है. इसके साथ ही पड़ोसी देशों के रिवाज, परम्पराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है. प्राचीन समय से ही भारत के रीतिरिवाज, भाषाएँ, प्रथाएँ एवं परम्पराएँ परस्पर संबद्धों में महान विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण देती है. भारत कई धार्मिक प्रजातियों जैसे कि सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म जैसे धर्मों का जनक है.

वही संस्कृति सबसे उत्तम होती है जिसमें गरीब, कमजोर और लाचारों का शोषण नहीं होता है.

यूजीन एम.मकर के अनुसार, भारतीय संस्कृति कठोर सामाजिक पदानुक्रम द्वारा परिभाषित की गई है. हिन्दू धर्म के अनुसार पैतृक यानि पिता की ओर से मिले कुटुंब या पंथ के अनुसार निर्धारित होता है जो कि जन्म के साथ ही तय हो जाता है. विकासशील देशों में, भारत अपनी निम्न स्तर की भौगोलिक और व्यावसायिक गतिशीलता की वजह से बृहद रूप से दर्शनीय है. यहाँ के लोग खुद ऐसे व्यवसाय को चुनते हैं जो उनके माता-पिता पहले से करते आ रहे हैं.

भारतीय जातिप्रथा भारतीय उपमहाद्वीप में सामाजिक वर्गीकरण और सामाजिक प्रतिबंधों का वर्णन करती है. इस प्रथा में समाज के विभिन्न वर्ग हजारों सजातीय विवाह और आनुवांशिकीय समूहों के रूप में परिभाषित किये जाते हैं. जिन्हें प्रायः जाति के नाम से जाना जाता है. इन जातियों के बीच विजातीय समूह भी मौजूद है, इन समूहों को गोत्र के रूप में जाना जाता है. गोत्र, किसी व्यक्ति को अपने कुटुम्ब द्वारा मिली वंशावलि की पहचान है, यद्यपि कुछ उपजातियाँ जैसे कि शाकद्वीपी ऐसी भी है जिनके बीच एक ही गोत्र विवाह स्वीकार्य है.

भले ही जाति व्यवस्था को मुख्यतः हिन्दू धर्म के साथ जोड़कर पहचाना जाता है लेकिन भारतीय उपमहाद्वीप में अन्य कई धर्म जैसे कि मुसलमान, ईसाई धर्म के कुछ समूहों में भी इस तरह की व्यवस्था देखी गई है. भारतीय संविधान में समाजवाद, धर्म निरपेक्षता, लोकतंत्र जैसे सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए जाति के ऊपर आधारित भेदभावों को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया है. बड़े शहरों में ज़्यादातर इन जाति बंधनों को तोड़ दिया गया है. यद्यपि ये आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यमान हैं. फिर भी, आधुनिक भारत में जाति व्यवस्था, जाति के आधार पर बाँटे जाने वाली राजनीति और अलग-अलग तरीके की सामाजिक धारणाओं जैसे कई रूपों में जीवित भी है और प्रबल होती जा रही है.

'संस्कृति की चाहे कोई भी परिभाषा क्यों न हो, किन्तु उसे व्यक्ति, समूह अथवा राष्ट्र की सीमाओ में बांधना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है.' **– नेहरू**

सामान्य शब्दों में कहा जाए तो जाति के आधार पर चार प्रमुख विभाजन हैं –

ब्राह्मण–'विद्वान समुदाय', जिनमें याज्ञक, विद्वान, विधि विशेषज्ञ, मंत्री, राजनैतिक शामिल हैं.

क्षत्रिय – 'उच्च या निम्न मान्यवर या सरदार' जिनमें राजा, उच्चपद के लोग, सैनिक और प्रशासक शामिल हैं.

वैश्य – 'व्यापारी और कारीगर समुदाय' जिनमें सौदागर, दुकानदार, व्यापारी और खेत के मालिक शामिल हैं.

शूद्र – 'सेवा प्रदान करने वाले या सेवक'

अधिकतर गैर-प्रदूषित कार्यो में लगे शारीरिक और कृषक श्रमिक शामिल हैं.

इसके नीचे एक दलित समाज है जिसे हिन्दू शास्त्रों और हिन्दू कानून के अनुसार दलित (अछूत) के रूप में जाना जाता है. हालांकि इस प्रणाली को भारतीय संविधान के कानून के जरिये अब गैरकानूनी घोषित कर दिया गया है.

ब्राह्मण वर्ण स्वयं को हिन्दू धर्म के चारों वर्णो में सर्वोच्च स्थान पर काबिज होने का दावा करता है. दलित शब्द उन लोगों के समूह के लिए पदनाम है जिनको हिन्दू धर्म एवं सवर्ण हिन्दूओं द्वारा अछूत या नीची जाति का माना जाता है.

भारत में धर्म के नाम पर लोगों को बांटने का काम करना, संस्कृति के विलुप्त होने का संकेत है. हालांकि प्राचीन संस्कृति के अनुसार जातिवाद इतना कठोर नहीं था लेकिन वर्तमान समय में जातिवाद के दुष्प्रभाव इतने ज्यादा हैं जो विकास में बाधक सिद्ध हो सकते हैं.

'प्रेम, समर्पण, सहनशीलता से
दुश्मन को मारा है,
मानवता का पाठ पढ़ाता,
मेरा भारत प्यारा है,
भारत की गौरव गाथा के,
गीत सभी मिल गाते है.
धर्म-जाति भाषा के
झगड़ों ने बाँटे इन्सान सारे,
पश्चिम की संस्कृति में
हमने भुला दिए रिश्ते प्यारे.'

आलोक चंद्र गुप्ता
सफीपुर शाखा, कानपुर

सिंधु घाटी सभ्यता

सभ्यता व संस्कृति एक दूसरे के पूरक एवं मनुष्य के भौतिक तथा मानसिक प्रगति के द्योतक हैं. इनमें से 'सभ्यता' शब्द का प्रयोग मानव समाज के सकारात्मक, प्रगतिशील और समावेशी विकास को इंगित करने के लिये किया जाता है. सभ्य समाज अक्सर उन्नत कृषि, लंबी दूरी के व्यापार और नागरीकरण की विकसित अवस्था को दर्शाता है. इन मूल तत्वों के अतिरिक्त विकसित यातायात व्यवस्था, लेखन, मापन के मानक, विधि व्यवस्था, कला की शैलियों, स्मारकों के स्थापत्य, गणित, धातुकर्म एवं खगोल विद्या आदि की स्थिति से भी सभ्यता परिभाषित होती है. आज से लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व मिस्र, मेसोपोटामिया, सिंधु घाटी, बेबीलोन, चीन आदि विश्व के अनेक भागों में कई सभ्यताओं का जन्म नदियों के किनारे हुआ था. यहाँ हम सिंधु घाटी सभ्यता के कुछ पहलुओं पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे है.

सिंधु घाटी सभ्यता का उद्भव एवं नामकरण

सिंधु घाटी सभ्यता (3300-1700 ई.पू.) विश्व की प्राचीनतम नदी घाटी सभ्यताओं में से एक थी. विश्वविख्यात पत्रिका 'नेचर' में प्रकाशित शोध के अनुसार यह सभ्यता कम से कम 8000 वर्ष पुरानी है. इसे हड़प्पा और सिंधु-सरस्वती सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है. इसका विकास सिंधु और घग्घर/हकड़ा (प्राचीन सरस्वती) नदियों के किनारे हुआ. मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल, धोलावीरा, राखीगढ़ी और हड़प्पा आदि इसके प्रमुख केंद्र हैं जो आज उत्तर-पूर्व अफगानिस्तान, उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान तथा उत्तर भारत में स्थित हैं. मिस्र व मेसोपोटामिया की सभ्यता के साथ यह दुनिया के तीन शुरुआती कालक्रमों में से सबसे व्यापक तथा चर्चित सभ्यता थी. ब्रिटिश काल में हुई खुदाइयों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि यह अत्यंत विकसित सभ्यता थी और यहाँ के नगर कई बार बसे और उजड़े हैं.

सातवीं शताब्दी में पहली बार जब लोगों ने पंजाब प्रांत में ईंटों के लिए मिट्टी की खुदाई की तब वहाँ से उन्हें बनी बनाई ईंटें मिली. इसे लोगों ने भगवान का चमत्कार माना और उसका उपयोग घर बनाने में किया. तदनंतर, 1826 में पहली बार चार्ल्स मैसेन ने इस सभ्यता की खोज की. एलेक्जेंडर कनिंघम ने 1856 में इस सभ्यता के बारे में सर्वेक्षण किया. 1856 में ही कराची से लाहौर के मध्य रेलवे लाइन के निर्माण के दौरान बर्टन बंधुओं द्वारा हड़प्पा स्थल की सूचना सरकार को दी गयी. इसी क्रम में 1861 में कनिंघम के निर्देशन में भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना की गयी. 1902 में लार्ड कर्जन द्वारा जॉन मार्शल को भारतीय पुरातात्विक विभाग का महानिदेशक बनाया गया. फ्लीट ने इस सभ्यता के बारे में एक लेख लिखा, जिससे काफी जानकारियाँ मिलती है. 1921 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा में उत्खनन का कार्य किया. राखलदास बैनर्जी को मोहनजोदड़ो का खोजकर्ता माना गया. अब तक सिन्धु घाटी सभ्यता के 1400 केंद्रों को खोजा जा सका है, जिसमें से 925 केन्द्र भारत में है. 80 प्रतिशत स्थल सरस्वती और उसकी सहायक नदियों के आस-पास है. अभी तक कुल खोजों में से मात्र 3 प्रतिशत स्थलों का ही उत्खनन हो पाया है.

इस क्षेत्र के सिन्धु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में आने के कारण विद्वानों ने इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता का नाम दिया. बाद में रोपड़, लोथल, कालीबंगा, बनावली, रंगपुर आदि क्षेत्रों में भी इस सभ्यता के अवशेष मिले जो सिन्धु क्षेत्र से बाहर थे और इसका केन्द्र हड़प्पा में होने के कारण कई इतिहासकार इसको हड़प्पा सभ्यता नाम देना अधिक उचित मानते है. प्रथम बार कांस्य के प्रयोग के कारण इसे कांस्य सभ्यता भी कहा जाता है.

सिंधु सभ्यता के विभिन्न काल खंड

1. **7570-3300 ई.पू.: पूर्व हड़प्पा (नवपाषाण युग,ताम्र पाषाण युग) : प्रारंभिक खाद्य उत्पादक युग**
   - 7570-6200 ई.पू. : भिरड़ाणा
   - 7000-5500 ई.पू. : मेहरगढ़ एक (पूर्व मृद्भाण्ड नवपाषाण काल)
   - 5500-3300 ई.पू. : मेहरगढ़ दो से छह (मृद्भाण्ड नवपाषाण काल)
2. **3300-2600 ई.पू. : प्रारम्भिक हड़प्पा (आरंभिक कांस्य युग) : क्षेत्रीयकरण युग**
   - 3300-2800 ई.पू. : हड़प्पा 1 (रवि भाग)
   - 2800-2600 ई.पू. : हड़प्पा 2 (कोट डीजी भाग, नौशारों एक, मेहरगढ़ सात)
3. **2600-1900 ई.पू.: परिपक्व हड़प्पा (मध्य कांस्य युग) : एकीकरण युग**
   - 2600-2450 ई.पू. : हड़प्पा 3ए (नौशारों दो)
   - 2450-2200 ई.पू. : हड़प्पा 3 बी
   - 2200-1900 ई.पू. : हड़प्पा 3 सी
4. **1900-1300 ई.पू.: उत्तर हड़प्पा (समाधी एच, उत्तरी कांस्य युग) : प्रवास युग**
   - 1900-1700 ई.पू. : हड़प्पा 4
   - 1700-1300 ई.पू. : हड़प्पा 5

सिंधु संस्कृति के स्थल

सिंधु घाटी सभ्यता का क्षेत्र संसार के समस्त प्राचीन सभ्यताओं के क्षेत्र से कई गुना बड़ा था. इस परिपक्व सभ्यता का केन्द्र पंजाब तथा सिंध में था. तत्पश्चात इसका विस्तार दक्षिण और पूर्व

की दिशा में हुआ. इस प्रकार हड़प्पा संस्कृति के अन्तर्गत पंजाब, सिंध और बलूचिस्तान के भाग ही नहीं बल्कि गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के भाग भी थे. इस सभ्यता का सम्पूर्ण क्षेत्र त्रिभुजाकार था और इसका क्षेत्रफल 20,00,000 वर्ग किलोमीटर से अधिक था. इस प्रकार इसका क्षेत्र प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया से बहुत बड़ा है. ई.पू. तीसरी व दूसरी सहस्त्राब्दी में विश्व में किसी भी सभ्यता का क्षेत्र हड़प्पा जितना बड़ा नहीं था.

पूर्व भू-वैज्ञानिकों का मानना था कि मानव सभ्यता का आविर्भाव आर्यों से हुआ. लेकिन सिन्धु घाटी के साक्ष्यों के बाद उन्हें यह स्वीकारना पड़ा कि आर्यों के आगमन से वर्षों पूर्व ही प्राचीन भारत की सभ्यता पल्लवित हो चुकी थी. इस सभ्यता के दो नगर पंजाब का हड़प्पा तथा सिंध का मोहेनजोदड़ो (प्रेतों का टीला) बहुत ही महत्वपूर्ण है. दोनों ही स्थल एक दूसरे से 483 किमी दूर वर्तमान पाकिस्तान में हैं. चन्हुदड़ो नामक तीसरा नगर मोहेनजोदड़ो से 130 किमी दक्षिण और चौथा नगर गुजरात के खंभात की खाड़ी के ऊपर लोथल नामक स्थल पर है. इसके अतिरिक्त राजस्थान के उत्तरी भाग में कालीबंगा तथा हरियाणा के हिसार जिले का बनावली है. सुतकागेंडोर तथा सुरकोतड़ा के समुद्र तटीय नगरों में भी इस संस्कृति की परिपक्व अवस्था दिखाई देती है. उत्तर हड़प्पा अवस्था गुजरात के काठियावाड़ में रंगपुर और रोजड़ी में भी पाई गई है. हिन्दुकुश पर्वतमाला के पार अफगानिस्तान में शोर्तुगोयी से नहरों के प्रमाण भी मिले हैं.

सिंधु घाटी नगर निर्माण योजना

अत्यंत विकसित नगर निर्माण योजना इस सभ्यता की प्रमुख विशेषता है. हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो दोनों नगरों के अपने दुर्ग थे, जहाँ शासक वर्ग का परिवार रहता था. दुर्ग के बाहर उससे निम्न स्तर का शहर होता था जहाँ ईंटों के मकानों में सामान्य लोग रहते थे. इन भवनों की विशेषता यह थी कि ये जाल की तरह विन्यस्त थे. सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं जिससे नगर आयताकार खंडों में विभक्त हो जाता था. हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो के भवन बड़े होते थे. वहाँ के स्मारक इस बात के प्रमाण हैं कि वहाँ के शासक मजदूर जुटाने और कर-संग्रह में परम कुशल थे. ईंटों की बड़ी-बड़ी इमारतें देख कर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ के शासक कितने प्रतापी और प्रतिष्ठावान रहे होंगे.

मोहनजोदड़ो का सबसे प्रसिद्ध स्थल एवं स्थापत्य का एक सुन्दर उदाहरण 11.88 मीटर लंबा, 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा पक्की ईंटों से बना विशाल सार्वजनिक स्नानागार है जिसका जलाशय दुर्ग के टीले पर है और जिसके दोनों सिरों पर नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं. बगल में कपड़े बदलने के लिए कमरे बने हैं. पास के कमरे में एक बड़ा सा कुआँ है जिसका पानी निकाल कर हौज में डाला जाता था. हौज के कोने में एक निर्गम (जींिश्रशीं) है जिससे पानी बहकर नाले में जाता था. ऐसा माना जाता है कि यह विशाल स्नानागार धर्मानुष्ठान संबंधी स्नान के लिए बना होगा.

मोहनजोदड़ो की एक और बड़ी संरचना 45.71 मीटर लंबा और 15.23 मीटर चौड़ा अनाज रखने का भंडार है. हड़प्पा के दुर्ग में छः भंडार मिले हैं जो ईंटों के चबूतरे पर दो पंक्तियों में बने हैं. प्रत्येक भंडार 15.23 मी. लंबा तथा 6.09 मी. चौड़ा है और नदी के किनारे से कुछ ही मीटर की दूरी पर है. इनके फर्श की दरारों में गेहूँ और जौ के दाने मिले हैं. इससे प्रतीत होता है कि इन चबूतरों पर फ़सल की दवनी होती थी. हड़प्पा में दो कमरों वाले बैरक भी मिले हैं जो शायद मजदूरों के रहने के लिए बने थे. कालीबंगा में भी नगर के दक्षिण भाग में ईंटों के चबूतरे बने हैं जो शायद भंडारण के लिए ही बने होंगे.

हड़प्पा संस्कृति के नगरों में पक्की ईंट का इस्तेमाल एक विशेष बात है, क्योंकि इसी समय के मिस्र के भवनों में धूप में सूखी ईंटों का प्रयोग हुआ था. समकालीन मेसोपेटामिया में पक्की ईंटों का प्रयोग बहुत ही छोटे पैमाने पर हुआ है. मोहनजोदड़ो की जल निकास प्रणाली अद्भुत थी. नगर के लगभग हर मकान में प्रांगण और स्नानागार होता था. घरों का पानी बहकर सड़कों तक आता था, जहाँ इनके नीचे नालियाँ बनी होती थीं. अक्सर ये नालियाँ ईंटों और पत्थर की सिल्लियों से ढकी होती थीं.

सिंधु सभ्यता का आर्थिक जीवन

सिंधु सभ्यता की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी. यहाँ के निवासी व्यापार एवं पशुपालन भी किया करते थे. उस समय की सिन्धु प्रदेश की भूमि आज के मुकाबले ज्यादा उपजाऊ थी. इसका उल्लेख चौथी सदी ईसा पूर्व में सिकंदर के एक दरबारी ने किया है. प्राकृतिक वनस्पतियों से आच्छादित रहने के कारण यहाँ अच्छी वर्षा होती थी. ईंटे पकाने और इमारत बनाने के लिए बड़े पैमाने पर जंगल काटने के कारण धीरे-धीरे वनों का विस्तार सिमट गया. सिन्धु क्षेत्र की उर्वरता का एक और प्रमुख कारण प्रतिवर्ष सिन्धु नदी में आने वाली बाढ़ थी. यहाँ के लोग बाढ़ के उतर जाने के बाद नवंबर के महीने में बाढ़ वाले इलाकों में बीज बो देते थे और अगली बाढ़ के आने से पूर्व अप्रैल के महीने में गेहूँ और जौ की फ़सल काट लेते थे. यहाँ कोई फावड़ा या हल तो नहीं मिला है, लेकिन कालीबंगा में मिले कूँट (हलरेखा) से यह आभास होता है कि इस काल में हल जोते जाते थे. इस सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, राई, मटर, ज्वार आदि अनाज तथा तिल तथा सरसों पैदा करते थे. वे दो किस्म की गेहूँ की फसल पैदा करते थे. विश्व में सबसे पहले कपास यहीं पैदा की गई थी. इसी कारण यूनान के लोग इसे सिन्डन (Sindon) कहते थे.

हड़प्पा सभ्यता के लोगों का दूसरा प्रमुख व्यवसाय पशु-पालन था. ये लोग गाय, बैल, भैंस, भेड़, बकरी, कुत्ते, बिल्ली, मोर, सूअर व मुर्गियों का पालन किया करते थे. उन्हें हाथी तथा गैंडे का ज्ञान था परंतु घोड़े की जानकारी नहीं थी. ये लोग भार ढोने के लिए बैलों व हाथियों का प्रयोग किया करते थे. यहाँ के लोग तांबा धातु खेतड़ी नगर (राजस्थान) तथा बलूचिस्तान से व सोना कर्नाटक तथा अफगानिस्तान से लाते थे.

उद्योग धंधे एवं व्यापार

यहाँ के नगरों में अनेक व्यवसाय प्रचलित थे. मिट्टी के बर्तन बनाने और उन पर काले रंग के चित्र बनाने में ये लोग सिद्धहस्त थे. कपड़ा बनाने का व्यवसाय उन्नत अवस्था में था तथा उसका निर्यात विदेशों में भी होता था. जौहरी का काम, मनके और ताबीज बनाना इस काल में काफी लोकप्रिय था. इन्हें लोहे का ज्ञान नहीं था. यहाँ के लोग पत्थर, धातु, शल्क (हड्डी) आदि का व्यापार करते थे. एक बड़े भूभाग में ढेर सारी सील (मृन्मुद्रा), एकरूप लिपि और मानकीकृत माप-तौल के प्रमाण मिले हैं. वे पहिये से परिचित थे और संभवतः आजकल के तांगे जैसा कोई वाहन प्रयोग करते थे. ये अफगानिस्तान और फारस से व्यापार करते थे. उन्होंने उत्तरी अफगानिस्तान में एक वाणिज्यिक उपनिवेश भी स्थापित किया था, जिससे उन्हें व्यापार में आसानी होती थी. हड़प्पा काल के कुछ सील मेसोपोटामिया में मिली हैं, जिनसे अनुमान लगता है कि मेसोपोटामिया से भी उनके व्यापार संबंध थे. मेसोपोटामिया के अभिलेखों में मेलुहा के साथ व्यापार के प्रमाण मिले हैं साथ ही दिलमुन और माकन दो मध्यवर्ती व्यापार केन्द्रों का भी उल्लेख मिलता है. दिलमुन की पहचान फारस की खाड़ी के बहरीन से की जाती है.

राजनैतिक व धार्मिक जीवन

यह तथ्य तो स्पष्ट है कि हड़प्पा की विकसित नगर निर्माण प्रणाली, विशाल सार्वजनिक स्नानागारों का अस्तित्व और विदेशों से व्यापारिक संबंध किसी बड़ी राजनैतिक सत्ता के बिना नहीं हुआ होगा पर इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है. परंतु, नगर व्यवस्था को देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि कोई नगर निगम जैसी स्थानीय स्वशासन वाली संस्था अवश्य रही होगी. हड़प्पा में पक्की मिट्टी की स्त्री की मूर्तियां भारी संख्या में मिली हैं. एक मूर्ति में स्त्री के गर्भ से एक पौधा निकलता दिखाया गया है. विद्वानों के मत में यह पृथ्वी देवी की प्रतिमा है और इसका निकट संबंध पौधों के जन्म और वृद्धि से रहा होगा. इसलिए मालूम होता है कि यहाँ के लोग धरती को उर्वरता की देवी मानते थे और इसकी पूजा उसी तरह से करते थे जिस तरह मिस्र के लोग नील नदी की देवी आइसिस की करते थे. कुछ वैदिक सूत्रों में पृथ्वी माता की स्तुति भी है. धोलावीरा के दुर्ग में एक कुआँ मिला है इसमें नीचे की तरफ जाती सीढ़ियाँ है और उसमें एक खिड़की थी जहाँ दीपक जलाने के सबूत मिलते है. उस कुएँ में सरस्वती नदी का पानी आता था. इससे अनुमान लगाया जाता है कि शायद सिंधु घाटी के लोग उस कुएँ के जरिये सरस्वती की पूजा करते थे.

सिंधु घाटी सभ्यता में कुछ ऐसे सील पाये गए है जिसमें 3 या 4 मुख वाले एक योगी का चित्र है. कई विद्वान मानते है कि यह योगी शिव है. सिंधु सभ्यता की सीमा में आने वाले मेवाड़ में आज भी 4 मुखी शिव के अवतार एकलिंगनाथ की पूजा होती है. सिंधु घाटी सभ्यता के लोग अपने शवों को जलाया करते थे, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे नगरों की आबादी लगभग 50 हज़ार थी, परंतु फिर भी वहाँ से मात्र 100 के आसपास ही कब्रें मिली है जो इस बात की ओर इशारा करता है कि वे शवों को जलाते थे. लोथल, कालीबंगा आदि जगहों पर हवन कुंड मिले है जो कि उनके वैदिक होने का प्रमाण है. यहाँ स्वस्तिक के चित्र भी मिले है. कुछ विद्वान मानते है कि हिंदू धर्म द्रविड़ों का मूल धर्म था और शिव उनके आराध्य थे, जिन्हें आर्यों ने भी अपना लिया. कुछ विद्वान यह भी मानते है कि सिंधु घाटी सभ्यता के लोग जैन या बौद्ध धर्म के थे पर अधिक प्रमाण न होने के कारण मुख्यधारा के इतिहासकारों ने इस बात को नकार दिया. मेसोपोटामिया में पुरातत्वविदों को कई मंदिरों के अवशेष मिले पर सिंधु घाटी में अब तक कोई मंदिर नहीं मिला है. इतिहासकार मार्शल के साथ कई इतिहासकार मानते है कि सिंधु घाटी के लोग अपने घरों में, खेतों में या नदी किनारे पूजा किया करते थे.

शिल्प और तकनीकी ज्ञान

सिन्धु सभ्यता के दस वर्ण धोलावीरा के उत्तरी गेट के निकट वर्ष 2000 ई में खोजे गये. यद्यपि, इस युग के लोग पत्थरों के बहुत से औजारों का प्रयोग करते थे पर वे कांसे से भली-भाँति परिचित थे. तांबे तथा टिन को मिलाकर धातु शिल्पी कांस्य का निर्माण करते थे. हालाँकि, इन दोनों में से कोई भी खनिज यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध नहीं था. यहाँ के लोग सूती कपड़े बुनते थे और नाव भी बनाते थे. मुद्रा निर्माण, मूर्ति निर्माण के साथ बर्तन बनाना भी यहाँ के लोगों का प्रमुख शिल्प था. यहाँ के लोगों को लेखन कला का ज्ञान था. सिन्धु लिपि (Indus script) का पहला नमूना 1853 ई में तथा पूरी लिपि 1923 में मिली थी, परन्तु अब तक इस लिपि को पढ़ा नहीं जा सका है. लिपि का ज्ञान होने से वे निजी सम्पत्ति का लेखा-जोखा आसानी से रख पाते थे. व्यापार के लिए माप-तौल का प्रयोग भी किया जाता था. बाट के तरह की कई वस्तुएँ मिली हैं, जिससे पता चलता है कि तौल में 16 या उसके आवर्तकों यथा 16, 32, 48, 64, 160, 320, 640, 1280 इत्यादि का उपयोग होता था.

सिंधु सभ्यता का अवसान

ऐसा आभास होता है कि यह सभ्यता अपने अंतिम चरण में ह्रासोन्मुख थी. सिन्धु घाटी सभ्यता के अवसान के पीछे विभिन्न तर्क यथा बाहरी आक्रमण, जलवायु परिवर्तन, बाढ़ तथा भू-तात्विक परिवर्तन, महामारी, आर्थिक कारण आदि दिये जाते हैं. ऐसा लगता है कि इस सभ्यता का पतन किसी एक कारण से नहीं बल्कि विभिन्न कारणों के मेल से हुआ होगा. इसके अलग-अलग समय में या एक साथ होने की भी संभावना है. मोहनजोदड़ो में नगर और जल निकास की अच्छी व्यवस्था होने से महामारी की संभावना कम लगती है. भीषण आग्निकांड के भी प्रमाण प्राप्त हुए हैं. मोहनजोदड़ो के एक कमरे से 14 नर कंकाल मिले हैं, जो आक्रमण, आगजनी या महामारी का संकेत देते हैं. अधिकांश विद्वानों का मत है कि सिंधु घाटी सभ्यता के क्रमिक पतन का आरंभ 1800 ई.पू. के आस-पास हुआ होगा.

कृष्ण कुमार यादव
क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु

भारतीय संस्कृति– सहिष्णुता औदार्य – सुंदरता संस्कृतियों का मिलन

संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'कृ' (करना) से बना है. इस धातु से 3 शब्द बनते हैं–'प्रकृति' (मूल स्थिति), 'संस्कृति' (परिष्कृत स्थिति) और 'विकृति' (अवनति स्थिति). 'संस्कृति' का शब्दार्थ है–उत्तम या सुधरी हुई स्थिति यानी कि किसी वस्तु को यहां तक संस्कारित और परिष्कृत करना कि इसका अंतिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान प्राप्त कर सके.

संस्कृति के दो पक्ष होते हैं–(1) आधिभौतिक संस्कृति और (2) भौतिक संस्कृति.

सामान्य अर्थ में आधिभौतिक संस्कृति को संस्कृति और भौतिक संस्कृति को सभ्यता के नाम से जाना जाता है. संस्कृति के ये दोनों पक्ष एक–दूसरे से भिन्न होते हैं. संस्कृति आभ्यंतर है, इसमें परंपरागत चिंतन, कलात्मक अनुभूति, विस्तृत ज्ञान एवं धार्मिक आस्था का समावेश होता है.

भारतीय संस्कृति व्यक्ति–समाज–राष्ट्र के जीवन का सिंचन कर उसे पल्लवित–पुष्पित फलयुक्त बनाने वाली अमृत स्रोतस्विनी चिरप्रवाहिता सरिता है. भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है. यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृतियों के समान ही प्राचीन है.

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने के स्वरूप में अन्तर्निहित होता है.

संस्कृति का शब्दार्थ है – उत्तम या सुधरी हुई स्थिति. मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है. यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है. सभ्यता (Civilization) से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति (Culture) से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है. मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं. सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है. सुखपूर्वक निवास के लिए सामाजिक और राजनीतिक संघटनों का निर्माण करता है. इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक सम्यक् कृति संस्कृति का अंग बनती है. इनमें प्रधान रूप से धर्म, दर्शन, सभी ज्ञान–विज्ञानों और कलाओं, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है.

भारतीय संस्कृति जीवन–दर्शन, व्यक्तिगत और सामुदायिक विशेषताओं, भूगोल, ज्ञान–विज्ञान के विकास क्रम, विभिन्न समाज, जातियों के कारण बहुत विशिष्ट है. यह भिन्नता–विभिन्नता सहज और स्वाभाविक है. हमारी भारतीय संस्कृति सार्वभौमिक सत्यों पर खड़ी है और इसी कारण वह सब ओर गतिशील होती है. किसी भी संस्कृति की अमरता इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह कितनी विकासोन्मुखी है.

भारतीय संस्कृति का विकास धर्म का आधार लेकर हुआ है इसीलिए उसमें दृढ़ता है. भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है. इसकी सहिष्णुता, उदारता तथा समन्यवादी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तो किया है किंतु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है.

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

प्राचीनता – भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृमितयों में से एक है. मध्य प्रदेश के भीमबेटका में पाये गये शैलचित्र, नर्मदा घाटी में की गई खुदाई तथा कुछ अन्य नृवंशीय एवं पुरातत्वीय प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि भारत भूमि आदि मानव की प्राचीनतम कर्मभूमि रही है. इसी प्रकार वेदों में परिलक्षित भारतीय संस्कृति न केवल प्राचीनता का प्रमाण है, अपितु वह भारतीय अध्यात्म और चिन्तन की भी श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है.

निरन्तरता – भारतीय संस्कृति की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि हज़ारों वर्षों के बाद भी यह संस्कृति आज भी अपने मूल स्वरूप में जीवित है. भारत में नदियों, वट, पीपल जैसे वृक्षों, सूर्य तथा अन्य प्राकृतिक देवी–देवताओं की पूजा अर्चना का क्रम शताब्दियों से चला आ रहा है. देवताओं की मान्यता, हवन और पूजा–पाठ की पद्धतियों की निरन्तरता भी आज तक अप्रभावित रही हैं. वेदों और वैदिक धर्म में करोड़ों भारतीयों की आस्था और विश्वास आज भी उतनी ही है, जितनी की हज़ारों वर्ष पूर्व थी. गीता और उपनिषदों के सन्देश हज़ारों साल से हमारी प्रेरणा और कर्म का आधार रहे हैं. किंचित परिवर्तनों के बावजूद भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्वों, जीवन मूल्यों और वचन पद्धति में एक ऐसी निरन्तरता रही है, कि आज भी करोड़ों भारतीय स्वयं को उन मूल्यों एवं चिन्तन प्रणाली से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं और इससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं.

लचीलापन एवं सहिष्णुता – भारतीय संस्कृति की सहिष्णु प्रकृति ने उसे दीर्घ आयु और स्थायित्व प्रदान किया है. संसार की किसी भी संस्कृति में शायद ही इतनी सहनशीलता हो, जितनी भारतीय संस्कृति में पाई जाती है. प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रतीक हिन्दू धर्म को धर्म न कहकर कुछ मूल्यों पर आधारित एक जीवन-पद्धति की संज्ञा दी गई और हिन्दू का अभिप्राय किसी धर्म विशेष के अनुयायी से न लगाकर भारतीय से लगाया गया. भारतीय संस्कृति के इस लचीले स्वरूप में जब भी जड़ता की स्थिति निर्मित हुई तब किसी न किसी महापुरुष ने इसे गतिशीलता प्रदान कर इसकी सहिष्णुता को एक नई आभा से मंडित कर दिया. इस दृष्टि से प्राचीनकाल में बुद्ध और महावीर के द्वारा, मध्यकाल में शंकराचार्य, कबीर, गुरु नानक और चैतन्य महाप्रभु के माध्यम से तथा आधुनिक काल में स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा किये गए प्रयास इस संस्कृति की महत्वपूर्ण धरोहर बन गए.

ग्रहणशीलता – भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता एवं उदारता के कारण उसमें एक ग्रहणशीलता प्रवृत्ति को विकसित होने का अवसर मिला. वस्तुत: जिस संस्कृति में लोकतन्त्र एवं स्थायित्व के आधार व्यापक हों, उस संस्कृति में ग्रहणशीलता की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से ही उत्पन्न हो जाती है. हमारी संस्कृति में यहाँ के मूल निवासियों के समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण जैसी प्रजातियों के लोग भी घुलमिल गए.

भारत में इस्लामी संस्कृति का आगमन भी अरबी, तुर्कों और मुग़लों के माध्यम से हुआ. इसके बावजूद भारतीय संस्कृति का पृथक् अस्तित्व बना रहा और नवागत संस्कृतियों से कुछ अच्छी बातें ग्रहण करने में भारतीय संस्कृति ने संकोच नहीं किया.

आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का समन्वय – भारतीय संस्कृति में आश्रम - व्यवस्था के साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थों का विशिष्ट स्थान रहा है. हमारी संस्कृति में जीवन के ऐहिक और पारलौकिक दोनों पहलुओं से धर्म को सम्बद्ध किया गया था. धर्म उन सिद्धान्तों, तत्त्वों और जीवन प्रणाली को कहते हैं, जिससे मानव जाति परमात्मा प्रदत्त शक्तियों के विकास से अपना लौकिक जीवन सुखी बना सके तथा मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा शान्ति का अनुभव कर सके. शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है, यह अमरता मोक्ष से जुड़ी हुई है और यह मोक्ष पाने के लिए अर्थ और काम को पुरुषार्थ करना भी जरूरी है. साहित्य, संगीत और कला की सम्पूर्ण विधाओं के माध्यम से भी भारतीय संस्कृति के इस आध्यात्मिक एवं भौतिक समन्वय को सरलतापूर्वक समझा जा सकता है.

अनेकता में एकता – भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं का देश है. इस विशाल देश में उत्तर का पर्वतीय भू-भाग, जिसकी सीमा पूर्व में ब्रह्मपुत्र और पश्चिम में सिन्धु नदियों तक विस्तृत है. इसके साथ ही गंगा, यमुना, सतलज की उपजाऊ कृषि भूमि, विन्ध्य और दक्षिण का वनों से आच्छादित पठारी भू-भाग, पश्चिम में थार का रेगिस्तान, दक्षिण का तटीय प्रदेश तथा पूर्व में असम और मेघालय का अतिवृष्टि का सुरम्य क्षेत्र सम्मिलित है. इस भौगोलिक विभिन्नता के अतिरिक्त इस देश में आर्थिक और सामाजिक भिन्नता भी पर्याप्त रूप से विद्यमान हैं. वस्तुत: इन भिन्नताओं के कारण ही भारत में अनेक सांस्कृतिक उपधाराएँ विकसित होकर पल्लवित और पुष्पित हुई हैं.

अनेक विभिन्नताओं के बावजूद भी भारत की पृथक् सांस्कृतिक सत्ता रही है. हिमालय सम्पूर्ण देश के गौरव का प्रतीक रहा है, तो गंगा-यमुना और नर्मदा जैसी नदियों की स्तुति यहाँ के लोग प्राचीनकाल से करते आ रहे हैं. राम, कृष्ण और शिव की आराधना यहाँ सदियों से की जाती रही है. भारत की सभी भाषाओं में इन देवताओं पर आधारित साहित्य का सृजन हुआ है. उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण भारत में जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार एक समान प्रचलित हैं. विभिन्न रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार और तीज-त्यौहारों में भी समानता है. भाषाओं की विविधता अवश्य है फिर भी संगीत, नृत्य और नाट्य के मौलिक स्वरूपों में आश्चर्यजनक समानता है. संगीत के सात स्वर और नृत्य के त्रिताल सम्पूर्ण भारत में समान रूप से प्रचलित हैं. भारत अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मतों और पृथक् आस्थाओं एवं विश्वासों का महादेश है, तथापि इसका सांस्कृतिक समुच्चय और अनेकता में एकता का स्वरूप संसार के अन्य देशों के लिए विस्मय का विषय रहा है.

हमारी संस्कृति के संरक्षण के लिए निम्न बातें हमें अपने आचरण में लानी होंगी-

1. अपनी धार्मिक परंपराओं के बारे में जानें, 2. अपनी पुश्तैनी भाषा को बचाना होगा, 3. परंपरागत व्यंजनों की विधि अगली पीढ़ी को सौंपनी होगी, 4. संस्कृति की कला और तकनीक को दूसरों से साझा करना होगा, 5. समुदाय एवं समाज के अन्य सदस्यों के साथ समय बिताना होगा, 6. सामाजिक एवं राष्ट्रीय महत्व के उत्सवों का प्रबंधन और सहभागिता करना, 7. संस्कृति पर गौरव करना और उसे अपने आचरण में उतारना.

भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानव-संस्कृति कहा जा सकता है. मानवता के सिद्धांतों पर स्थित होने के कारण ही तमाम आघातों के बावजूद यह संस्कृति अपने अस्तित्व को सुरक्षित रख सकी है. आज हमें भारतीय संस्कृति के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए अपने समस्त सांप्रदायिक वैमनस्यों को भुलाकर सहिष्णु बनाना होगा. भारतीय संस्कृति की उदार प्रवृत्ति ही हमारी संस्कृति के भविष्य को उज्ज्वल बना सकती है.

गीतांजलि साहू
स्टा.प्र.के., भुवनेश्वर

भारतीय संस्कृति का दुनिया पर प्रभाव

भारत ने संस्कृतियों और सभ्यताओं के शीघ्र विकास का अनुभव किया. पुराने पाषाण युग के बाद से, भारत में कई समूहों ने कई बार पलायन किया था और विविध पारिस्थितिकी क्षेत्रों के लिए सांस्कृतिक अनुकूलन किए थे. प्रत्येक समूह ने प्रत्येक स्थान पर अपने जीवित अनुभवों का जवाब देते हुए अपनी संस्कृति विकसित की, जिसके कारण अंततः बहुलवादी मान्यताएं और प्रणालियां विकसित हुईं. इस प्रकार इस एकाधिक संस्कृति आत्मसात के परिणामस्वरूप विभिन्न भाषाओं, खाद्य आदतों, जीवन शैली, त्योहारों और धर्म का विकास होता है. यह हमारे देश को दुनिया की संस्कृतियों से अधिक विविध और समृद्ध बनाता है. इस संस्कृति के विकास का प्रभाव केवल भारत में ही सीमित नहीं है, बल्कि यह पर्यटकों, व्यापारियों, भिक्षुओं, मजदूरों, इतिहासकारों और अन्य तरीकों से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जाता है. इसके अलावा, शुरू में दास व्यापार के साथ और बाद में कच्चे माल और मजदूरों की मांग में औद्योगिक क्रांति के आने के साथ जो हमारी संस्कृति को दुनिया में फैलाने के लिए प्रेरित करता है. भारत की जनगणना 2001 के अनुसार, भारत में लगभग 120 प्रमुख भाषाएं और 1600 अन्य भाषाएँ हैं, इसी तरह त्योहारों का भी मामला है. इसकी जटिल प्रकृति के कारण भारत को उपमहाद्वीप माना जाता है. इसलिए इसकी विशाल सांस्कृतिक विविधता और प्रसार के कारण दुनिया में इसका प्रभाव बहुत प्रमुख है.

एक देश के रूप में भारत ने आजादी के बाद बहुत प्रगति की थी लेकिन दुनिया में इसकी सांस्कृतिक प्रगति पूर्व-ऐतिहासिक काल से विकसित हो रही है. सिंधु घाटी सभ्यता (4700 ईसा पूर्व) के समय से ही हमारा देश संस्कृति और विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता पर प्रभाव डाल रहा है. सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान मेसोपोटामिया, मिस्र, फारस, चीन और कई अन्य लोगों के साथ जीवंत व्यापार संबंध थे. भारत से मोतियों, टेराकोटा, सोने और अर्ध-कीमती पत्थरों का निर्यात होता था और इस सभ्यता से सीसा, तांबा, देवदार और जेड का आयात होता था, इस प्रकार प्रागैतिहासिक काल से संस्कृति हस्तांतरण का मूल है. बाद में आर्यों, शक, कुषाणों और मध्य एशिया और फारस के अन्य लोगों ने आकर भारतीय संस्कृति को अपनाया और दक्षिण पूर्व एशिया में हमारी संस्कृति का प्रसार किया. बाद में मध्ययुगीन युग में तुर्की और मुगलों के आने और दक्षिण-पूर्व एशिया में चोलों के विस्तार ने दुनिया में भारतीय संस्कृति और मूल्यों का प्रसार किया. औपनिवेशिक युग के दौरान भी दक्षिण-पूर्व एशिया और अफ्रीका के उपनिवेशों के लिए गिरमिटिया श्रमिकों के स्थानांतरण ने इन देशों में भारतीय का बसना सुनिश्चित किया था. दक्षिण भारत के मसाले और बंगाल की मलमल यूरोपीय संस्कृति का हिस्सा बन गए थे. महाउपनिषद में वसुधैव कुटुम्बकम् (संपूर्ण विश्व एक है, एक परिवार है) का नारा दिया गया था. अशोक ने बौद्ध मिशनरियों को सीलोन, मिस्र, मैसिडोनिया, तिब्बत आदि स्थानों से दूर भेजा. 1893 में स्वामी विवेकानंद द्वारा शिकागो धर्म संसद के संबोधन से भारत की संस्कृति और परंपराओं को विशेष पहचान प्राप्त हुई.

भारत की संस्कृति का प्रभाव दुनिया भर की भाषा, संगीत, भोजन की आदतों, धर्म और जीवन शैली में परिलक्षित होता है. जहां तक धर्म का संबंध है 8 प्रमुख धर्मों में से 4 (हिंदू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म) भारत में विकसित हुए हैं. दक्षिण पूर्व एशिया में लोग बौद्ध और हिंदू धर्म के दर्शन का अनुसरण करते हैं. इस देश में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों का अनुसरण किया जाता है. धर्म के रूप में सिख धर्म केवल भारत में ही सीमित नहीं है, बल्कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में फैला हुआ है. इसके परिणामस्वरूप कनाडा जैसे देश को पंजाबी आबादी के सांस्कृतिक प्रभाव के कारण मिनी-पंजाब माना जाता है. पंजाब के लोगों ने न केवल नौकरी की तलाश में पलायन किया है बल्कि कनाडा के सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र को भी प्रभावित किया है.

भाषा की दृष्टि से संस्कृत भारत में सभी भाषाओं की जननी है. कई विदेशी भाषाएँ संस्कृत से प्रभावित हैं. अंग्रेजी के कई शब्दों की उत्पत्ति संस्कृत में हुई थी, जैसे कि मातृ-माता, काल-कैलेंडर, जन-जीन और कई और. अंग्रेजी भाषा में 400 से अधिक शब्द संस्कृत से लिए गए हैं. इसी तरह दुनिया भर में 590 मिलियन से अधिक लोगों द्वारा हिंदी भाषा बोली जाती है. यहां तक कि जो भारतीय अपनी मातृभाषा के रूप में हिंदी नहीं बोलते हैं, वे इसे दूसरी भाषा के रूप में बोल

सकते हैं. कोई भी देश शून्य में नहीं रहता है और पड़ोसी देश हमेशा एक-दूसरे को कुछ हद तक भाषाई रूप से प्रभावित करेंगे. इसलिए आपको मलय, इंडोनेशियाई (यद्यपि इंडोनेशियाई में हिंदी की तुलना में संस्कृत शब्द अधिक हैं), लाओ, बर्मी और थाई में हिंदी शब्द मिलेंगे. एक बड़ा भारतीय समुदाय है जिसने कई शताब्दियों में नेपाल का निर्माण किया है. वे खुद को मधेसी कहते हैं और कई अब भी हिंदी की अवधी बोली बोलते हैं. इसी तरह फिजी हिंदी भारत की भोजपुरी, मगही और बिहारी भाषा के कुछ प्रभाव से अवधी बोली से ली गई है. फिजियन भारतीय समुदाय द्वारा इसे हिंदुस्तानी कहा जाता है.

इसी तरह संगीत के मामले में भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव दुनिया के लिए अज्ञात नहीं है. भारतीय संगीत की दुनिया भर में प्रशंसा की गई है. भारतीय संगीत प्रभाव का प्रतिबिंब इंडोनेशियाई और मलेशियन लोक संगीत डंगडूट में देखा जा सकता है जो हिंदुस्तानी संगीत से लिया गया है. थाईलैंड में इसके दो शास्त्रीय नृत्य रूप 'खोन' और 'लाखन' रामायण से प्राप्त हुए हैं. पश्चिमी दुनिया में भी भारतीय संगीत का व्यापक रूपांतर है जैसे कि हिपहॉप भानगार्टन रीग्रेटोन के साथ भांगड़ा संगीत का संलयन है जो लैटिन अमेरिका में लोकप्रिय है. भारतीय संगीतकारों की दुनिया भर में सराहना हुई है, जैसे पंडित रविशंकर का पश्चिम में अनुसरण किया गया है, वैसे ही किशोर कुमार के मिस्र और सोमालिया में अच्छे प्रशंसक हैं. बीटल्स जैसे अमेरिकी बैंड ने अपने गीतों में शब्द ओम के साथ हिंदी गीतों को अपनाया था. भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी जैसे भारतीय शास्त्रीय नृत्य दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं. छत्तीसगढ़ के पंडवानी जैसे लोक संगीत को भी दुनिया जानती है.

विज्ञान में भारत का योगदान सर्वविदित है. आयुर्वेद की प्राचीन चिकित्सा पद्धति भारत का विश्व को उपहार है. आयुर्वेद ने यूनानी, रोमन, चीनी और मिस्र जैसी प्राचीन सभ्यता को प्रभावित किया. आयुर्वेद की दवाएं कैंसर, अस्थमा, उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों का इलाज करती हैं, इसलिए दुनिया के शीर्ष शोधकर्ता फल प्राप्त करने के लिए आयुर्वेद पर शोध कर रहे हैं. इसी तरह भारत में लगभग 1500 साल पहले आर्यभट्ट द्वारा पृथ्वी के घूर्णन, सौर मंडल, सूर्य और चंद्र ग्रहण जैसे मूलभूत सिद्धांत की खोज की गई थी. गणित में भारत ने दुनिया को जीरो नंबर दिया है, उसी तरह बोधायन सुलुसूत्र जिसे पाइथागोरस प्रमेय के नाम से जाना जाता है, भारत द्वारा दिया गया है. प्राचीन भारत के वैदिक गणित का आधुनिक गणित पर गहरा प्रभाव है. सुश्रुत संहिता चिकित्सा और शल्य चिकित्सा पर प्राचीन संस्कृत पाठ है जो दुनिया भर में आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों को आकार देता है भारत में इसकी उत्पत्ति हुई थी. बीजगणित, त्रिकोणमिति, ज्यामिति, कैलकुलस, बाइनरी सिस्टम और दशमलव प्रणाली की जड़ें भारत में थीं. यहां तक कि अरब अंकों के रूप में लोकप्रिय अंकों को भारत में निहित किया गया है जो अरब से दुनिया में पहुंचता है.

भारतीय त्योहारों की दुनिया भर में सराहना की जाती है. भारतीय त्योहार जैसे होली, दीवाली दुनिया भर में विशाल भारतीय प्रवासियों की उपस्थिति के कारण मनाये जाते हैं. देश के रूप में भारत में मध्य पूर्व, उत्तरी अमेरिका, यूरोप और दक्षिण पूर्व एशिया से समृद्ध प्रवासी हैं. भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करने और उसे मनाने के लिए हर साल प्रवासी भारतीय दिवस मनाता है. अपने सांस्कृतिक महत्व के कारण भारत वैश्विक पर्यटन का केंद्र है. भारत को 38 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का गौरव प्राप्त है. ताजमहल, कुतुबमीनार, फतेहपुर सीकरी जैसे स्मारक दुनिया में संस्कृति के आकर्षण का केंद्र हैं. भारत की इस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को निहारने के लिए दुनिया भर से पर्यटक हर साल बड़ी संख्या में आते हैं. इस शक्ति ने दुनिया भर में भारत की कूटनीतिक प्रगति को हासिल करने में योगदान दिया है. इसके कारण ही भारत योग की अपनी प्राचीन प्रथा को विश्व में पहचान दिलाने में सक्षम है. 21 जून को दुनिया भर में विश्व योग दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसकी जड़ भारत में है.

इसलिए भारत देश जिसे सांस्कृतिक महत्व के कारण गोल्डन बर्ड माना जाता है, ने दुनिया भर में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है. सिंधु घाटी सभ्यता के युग से लेकर कोरोना महामारी तक के समय में, भारत के सहिष्णुता, लोकतांत्रिक मूल्यों, शील, सद्भाव के मूल्यों ने दुनिया में हमेशा अपना प्रभाव दिखाया है. भारत के मूल्यों ने विश्व संविधान में संरचनात्मक परिवर्तन किए हैं, नस्लीय भेदभाव के खिलाफ भारत की आवाज ने दक्षिण अफ्रीका में संघर्ष को सफल बनाया है. भारत के अहिंसा के मूल्य ने बांग्लादेश के स्वतंत्रता संग्राम में मदद की है. भारत की सांस्कृतिक विविधता के कारण दुनिया पर इसका प्रभाव अज्ञात नहीं है. यहां तक कि कोरोना महामारी के इस दौर में भारत ने दुनिया को पीपीई किट और वैक्सीन दी है. भारतीय संस्कृति प्रकृति में अनुकूल है जिसने विश्व धर्म को हर रूप में स्वीकार किया है और उसकी संस्कृति को दुनिया भर में मान्यता दी है. इस प्रकार भारत जो बुद्ध, महात्मा गांधी, आर्यभट, विवेकानंद की भूमि है, दुनिया भर में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है. भारत दर्शन ने पश्चिमी दर्शन और विचारों को पूरा किया और दुनिया को बेहतर दुनिया की धारणा दी. भारत की संस्कृति ने औपनिवेशिक काल से लेकर अब तक के इतिहास के सभी परीक्षण पास किए हैं और इतिहास, संस्कृति, दर्शन, विज्ञान, खेल से हर क्षेत्र में सफल योगदान दिया है. अपनी संस्कृति के कारण, भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जिसने दुनिया को अनेकता में एकता का उदाहरण दिया है.

जीतेन्द्र शर्मा
पंडरी शाखा, रायपुर

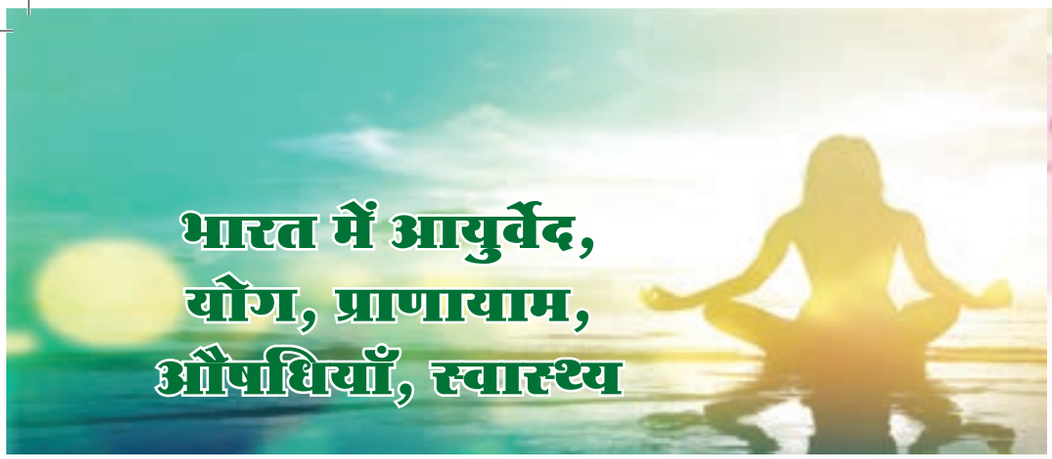

भारत में आयुर्वेद, योग, प्राणायाम, औषधियाँ, स्वास्थ्य

स्वस्थ जीवन, सुखी जीवन इस बात का समर्थन करने के लिए हमें बहुत कुछ करना पड़ेगा. भारत एक ऐसा देश है जहां 40% जनता गावों में और 20% जनता शहरों की अविकसित जगहों पर रहती है, जहां उनको सारी सुविधाएं प्राप्त नहीं होती. इसका एक और कारण है कि लोगों की कमाई इतनी नहीं है कि वे स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें. प्राचीन काल में स्थिति ऐसी नहीं थी. लोग स्वस्थ एवं तंदुरुस्त रहते थे. पुराने लोग अपने खानपान एवं रहन सहन का ख्याल रखते थे. आयुर्वेद, योग, प्राणायाम और घरेलू औषधि से ही इलाज चलता था. भारत में इन परंपराओं पर बहुत प्रचार व विचार हुआ करता था और लोग इसका पालन अधिक-से-अधिक करते थे. पारंपरिक इलाज जैसे सिद्ध वैद्य, आयुर्वेद, यूनानी, नाड़ी वैद्य, होमियोपैथी, नेचरोपैथी, योग और प्राणायाम भारत में ही प्रचलित था. योग और प्राणायाम का जिक्र आदि काल से ही प्रचलित है. पुराणों में लिखा गया है कि भगवान धन्वंतरि वैद्य के गुरु थे. कुछ सूत्रों के अनुसार ज्योतिष शास्त्र से भी किसी के रोग का पता चल जाता था. आज हम इन्हीं चिकित्सा पद्धतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं.

होमियोपैथी (Homeopathy) : 1790 में एक जर्मन, डॉक्टर सैमुएल हेनमन ने इसके बारे में पता लगाया और लोगों को इस प्रणाली के गुण विशेष से परिचित करवाया. इस औषध प्रणाली में तीन उसूलों का पालन किया जाता है.

1. **लाइक क्यूअर्स लाइक :** रोग के लक्षणों को पहचानकर उन लक्षणों का इलाज किया जाता है. उदाहरण के लिए अगर खांसी के लिए कोई एक सामग्री का उपयोग हो तो उसी से ही उसका इलाज किया जाता है. इस प्रणाली में, बीमारी को जड़ से ही मिटाने के लिए दवाई दी जाती है.

2. **दवाई की मात्रा :** बहुत कम ली जाती है और उसे पानी में मिलाकर दिया जाता है. अगर एक भाग दवाई हो तो उसे 1000,000,000,000 भाग के पानी में मिलाकर दिया जाता है. जिसके कारण इस दवाई का सेवन करने पर भी कोई बुरा असर नहीं पड़ता.

3. **एक सिंगल रेमिडी :** मतलब एक लक्षण एक दवाई, अगर खांसी के लिए दवाई दें तो खाँसी लक्षणों के लिए एक ही रेमिडी होगी.

इस प्रणाली को Hippocrates (460-377 BC) ने शुरू किया पर डॉ. सैमुएल हेनमन ने इस प्रणाली पर एक्सपेरीमेंट्स कर नई तरह का इलाज शुरू किया 1790 से. इसकी दवाईयाँ पशु, पेड़-पौधे, खनिज पदार्थ, कृत्रिम वस्तुओं से बनी है जिनका कोई भी दुष्प्रभाव नहीं होता. इस प्रणाली से सिर्फ जिस्म के एक भाग की परेशानी दूर नहीं होती बल्कि यह रोग जड़ से खत्म हो जाता है.

आज कल होमियोपैथी एक बेहतरीन इलाज का भाग है और सिर्फ भारत में ही नहीं पूरे विश्व भर में लोग इस इलाज को मानते हैं. इसमें खर्च भी उतना नहीं होता जितना एलोपैथी में होता है.

प्राकृतिक चिकित्सा (Naturopathy) : प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली भी भारतीय चिकित्सा का एक अंग है. रोगी के रहन-सहन, खान-पान, रोग का इतिहास, परिवारिक पृष्ठभूमि और प्रकृति को समझ कर इलाज किया जाता है. कुछ सामान्य बीमारियाँ जिसका इलाज प्राकृतिक चिकित्सा के अंतर्गत होता है जैसे तनाव, थकान, जोड़ों का दर्द, हृदय रोग, (डिप्रेशन) अवसाद, हॉर्मोनल इम्बैलन्स या हॉर्मोनल असंतुलन हैं. इस का इलाज संतुलित पोषण, जल चिकित्सा, पारंपरिक औषधि, परामर्श एवं सलाह, हर्बल दवाइयाँ, होमियोपैथी, टच थेरेपी से कर सकते हैं, प्राकृतिक चिकित्सकों का कहना है कि कोई भी रोग सिर्फ और सिर्फ पौष्टिक आहार और अच्छे व्यायाम से ठीक हो जाता है. एक्युपंक्चर से भी इलाज किया जा सकता है. म्यूजिक थेरपी, माइंड थेरपी, मैसेज थेरपी, मैगनेट थेरेपी इन सभी के मिश्रित प्रभाव से कई बीमारियों को ठीक किया जा सकता है.

नाड़ी चिकित्सा : यह प्राचीन काल से चली प्रथा हैं, जहां वैद्य मनुष्य की नाड़ी का अध्ययन कर औषधि देते हैं. हमारे शरीर में कुछ दोष होते हैं जो बीमारियों का कारण बनते हैं, कफ-मोटापा, धीमा स्वभाव, चर्बी (oily), शीत (cold) के कारण है. नाड़ी तरंगिणी - हमें रिपोर्ट देनी है शरीर में वात, पित्त और कफ कितनी मात्रा में हैं. इस रिपोर्ट को देख कर उसका इलाज किया जाता है. इलाज में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ, खनिज पदार्थ, दूध, शहद आदि का उपयोग कर दवाई बनाई जाती है.

भारत में आयुर्वेद का अध्ययन व्यवस्थित रूप से किया जाता है. शरीर, दिमाग एवं आत्मा को प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने में मदद करता है. आयुर्वेद दो संस्कृत शब्दों का मेल है आयुष अर्थात जिंदगी और वेद मतलब ज्ञान या विज्ञान. इसका पूर्ण अर्थ है जीवन का ज्ञान. भारतीय आयुर्वेद में बीमारियों से बचने, शरीर को व्यस्त रखने या शारीरिक प्रणाली को फिर से स्थापित करने के उपाय हैं. आयुर्वेद प्राचीन काल से ही भारत में प्रचलित है और वेदों में भी इसका जिक्र किया गया है. 6000 वर्ष पुराने ऋग्वेद में, कई प्रकार की प्राकृतिक औषधियों का कथन किया गया है. इस प्रणाली में भी मूल रूप से शरीर में वात, पित्त और कफ को संतुलन में रखना होता है. वात, पित्त, कफ दोष का इलाज किया जाता है. दोष अर्थात पंच महाभूतों से तात्पर्य रखते-धरती, वायु, अग्नि, जल एवं व्योम, वात-वायु, पित्त

–अग्नि, कफ–धरती एवं जल का प्रतीक है. इन तीनों से ही बीमारियाँ होती हैं. आयुर्वेद के ज्ञान को त्रि–सूत्री ज्ञान भी कहा जाता है. पाश्चात्य इलाज (एलोपैथी) के आगमन से उसके अधिक प्रचार से आयुर्वेद प्रणाली में एलोपैथी की थोड़ी रुकावट आई पर अब यह एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति औषधि के रूप में उभर रही है. इस प्रणाली में गलत दुष्प्रभाव नहीं के बराबर है, जिस कारण इस प्रथा का उपयोग आज के समय पर अधिक हो रहा है.

आयुर्वेद में कायाकल्प चिकित्सा, शरीर शुद्धि चिकित्सा, स्लिमिंग कार्यक्रम, मनशान्ति या मानसिक तनाव को दूर करना, सौंदर्य की देखभाल कार्यक्रम और बुढ़ापा विरोधी कार्यक्रम शामिल हैं.

चक्रसंहिता और सुश्रुत संहिता संस्कृत के दो ग्रंथ है जिसमें 2000 साल पुरानी परंपरा है. सभी प्रकार की बीमारियों एवं चिकित्सा का जिक्र करती हैं. इन ग्रंथों के हिसाब से आयुर्वेद की काया चिकित्सा, शल्य तंत्र, शलक्या तंत्र, भूत वैद्य, अगड़ा तंत्र, वाजीकरण तंत्र, रसायन तंत्र, कौमाराभृत्य 8 शाखाएं हैं.

आयुर्वेद में चिकित्सा पौष्टिक आहार, जड़ी–बूटी, सुगंधी पदार्थ, रंग देने वाले पदार्थ, ध्यान व योग को मिलकर किया जाता है. सभी चिकित्सा में दो तरह के तत्व होते हैं, संतर्पण और अपतर्पण. संतर्पण में मन की शांति, पुनर्घटित होना, रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ावा देना होता है और अपतर्पण में शरीर से जहरीले पदार्थ निकालना और दोषों का संतुलन रखना होता है. आयुर्वेद में ध्यान, मालिश, सही तरह के कपड़े पहनना, सही समय और सही मात्रा में भोजन करना, समय पर आराम करने से बहुत सारे रोग बिना इलाज के ठीक होते जाते हैं. निम्नलिखित प्रथाएं हैं, जिनके सहयोग से यह चिकित्सा की जाती है.

1. **पंचकर्म –** पाँच क्रियाओं से इलाज – आहार का पत्थ्य, मालिश, जड़ी–बूटी का सेवन एवं दवा से पेट का शुद्धिकरण, शरीर को ताप देकर पसीना लाना, नाक की सफाई आदि ये पंचकर्म हैं.

वमन – शरीर से कफ दूर करना, विरेचनम– पित्ताशय और जिगर से पित्त या जहरीले पदार्थ का सफाया, नस्यम – सिर एवं गले से कफ दूर करना, स्नेह वस्थि – शरीर से टॉक्सिन्स और विषैले पदार्थ साफ करना, काशयवस्थि – जड़ी–बूटी से पेट साफ करना आदि.

2. **अभ्यंगम्** (Abhayangam) – शरीर का मोटापा दूर करना – इसमें एक जड़ी–बूटी से बने तेल से मालिश की जाती है.

3. **शिरोधारा** (sirodhara) – औषधीय तेल का उपयोग कर शरीर के जिस भाग पर इलाज की जरूरत है, उस पर से एक धारा में दबाव के साथ तेल धीरे–धीरे गिराया जाता है. अधिकतर मानसिक रोग, दबाव या तनाव, खिन्नता के लिए इस तरीके को अपनाया जाता है.

4. **कतिवस्थि** (kativasthi) – रीढ़ की हड्डी की चिकित्सा में इस क्रिया का उपयोग होता है, यहाँ औषधीय तेल को गर्म कर जड़ी–बूटी के लेप को रीढ़ की हड्डी पर लगाकर करीब एक घंटा सुलाया जाता है.

5. **कीजही** (kizhi) – इस क्रिया में औषधीय तेल को जड़ी बूटी के साथ पूरे शरीर में, जोड़ों में या सूजन वाली जगह पर दो दिन के लिए करीब 45 मिनट या एक घंटे के लिए लगाया जाता है.

6. **क्षीरधूमा** (Ksheeradhoomam) – गाय के दूध की भाप से यह क्रिया की जाती है. सिर दर्द, चेहरे का पक्षघात, बोलने की कठिनाई या नसों के विकार में इस तरह का इलाज किया जाता है.

7. **उद्वर्थनम** (udhvartanam) – औषधीय चूरन और दूध के लेप से मोटापा और पक्षघात के लिए इस तरह का इलाज किया जाता है.

8. **चूर्णस्वेदन** (choornaswedan) – तंत्रिका संबंधी असंतुलन (neurological disorders) में औषधीय चूरन की पोटली बनाकर तेल में गरम कर इसे लगाया जाता है. सभी तरह की चोट, वातरोगग्रस्तों को यह चिकित्सा दी जाती है.

9. **स्नेहपानम** (snehapanam) – यह औषधीय घी का सेवन है. इस चिकित्सा से कब्ज, चर्मरोग का इलाज होता है.

10. **सिरोवस्थि** (sirov a sth i) – गर्म जड़ी–बूटी के तेल द्वारा सिर से संबंधित रोगों के निवारण के लिए लेप लगाया जाता है. चेहरे का पक्षाघात, नाक, मुँह और गले का सूखापन, सिर दर्द और वात दोष से आने वाले रोग के लिए यह बहुत अच्छा तरीका है.

11. **नजावरकीजही** (njavarakizhi) – हड्डियों को मजबूत करने के लिए यह गर्म लेप लगाया जाता है, रक्त दबाव, जोड़ों में दर्द, हड्डियों में दर्द, चर्बी का बढना और चर्म रोग का भी यह इलाज है.

12. **पिजहिछील** (pizhichil) – नसों में कमजोरियाँ, यौन कमजोरियाँ, जोड़ों में दर्द, पक्षाघात, अर्धांगवात के लिए गरम औषधीय तेल के इस्तेमाल से इसका इलाज किया जाता है.

13. **तक्रधारा** (takradhara) – शरीर में ठंडक लाने के लिए दही या छाछ से शिरोधारा तरीके से की जाने वाली क्रिया है. इससे कई प्रकार के चर्म रोग ठीक होते हैं और त्वचा में नरमी आती है.

14. **तालां** (thalam) – यह औषधीय लेप माथे पर लगाया जाता है. जिससे सिर दर्द का इलाज होता है.

15. **थरपनां** (tharpanam) – यह आँखों का इलाज और आँखों का शुद्धिकरण है. औषधीय तेल व लेप को आँखों में लगाकर करीब 30 मिनट तक रखा जाता है, इससे आँखों मे जाने वाली नसों का इलाज होता है. इनके अलावा तर्पनम, गंडुसा, कावल, वमन, विरेचना, स्नेहवस्ती, नस्यम, योनिप्रकाशम, कशायवस्ती, आदि अनेक प्रकार से चिकित्सा की जाती है.

एस. शिवकुमारन
क्षे.म.प्र.का., पुणे

भारतीय संस्कृति – विविधता में एकता

भारत विभिन्न संस्कृति, नस्ल, भाषा और धर्म का देश है. ये विविधता में एकता की भूमि है जहाँ अलग-अलग जीवन-शैली और तरीकों के लोग एकसाथ रहते हैं. वो अलग आस्था, धर्म और विश्वास से संबंध रखते हैं. इन भिन्नताओं के बावजूद भी वो भाईचारे के साथ रहते हैं. विविधता में एकता भारत की एक अलग विशेषता है जो इसे पूरे विश्व में प्रसिद्ध करती है. विविधता में एकता विभिन्न असमानताओं की अपनी सोच से परे लोगों के बीच भाईचारे और समरसता की भावना को बढ़ावा देती है.

विश्व में भारत सबसे पुरानी सभ्यता का एक जाना-माना देश है जहाँ वर्षों से कई प्रजातीय समूह एक साथ रहते हैं. भारत विविध सभ्यताओं का देश है जहाँ लोग अपने धर्म और इच्छा के अनुसार लगभग 1650 भाषाएँ और बोलियों का इस्तेमाल करते हैं. संस्कृति, परंपरा, धर्म, और भाषा से अलग होने के बावजूद भी लोग यहाँ पर एक-दूसरे का सम्मान करते हैं. साथ ही भाईचारे की भावनाओं के साथ एक साथ रहते हैं. हमारे राष्ट्र का एक महान चरित्र है, विविधता में एकता जो इंसानियत के एक संबंध में सभी धर्मों के लोगों को बाँध के रखता है.

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिये प्रसिद्ध है जो कि विभिन्न धर्मों के लोगों के कारण है. लगभग सभी धर्मों में ऋषि, महर्षि, योगी, पुजारी, फादर आदि होते हैं जो अपने धर्मग्रंथों के अनुसार अपनी आध्यात्मिक परंपरा का अनुसरण करते हैं. भारत में हिन्दी मातृ-भाषा है हालाँकि अलग-अलग धर्म और क्षेत्र (जैसे इंग्लिश, उर्दू, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, उड़िया आदि) के लोगों के द्वारा कई दूसरी बोली और भाषाएँ बोली जाती है.

भारत की एकता का सबसे सुदृढ़ स्तम्भ इसकी संस्कृति है. भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है और वह अपनी विशिष्टताओं सहित विकसित होती रही है. इसके कुछ विशेष लक्षण हैं, जिन्होंने भारतीय एकता के सूत्र की जड़ों को और भी सुदृढ़ किया है.

कुछ विशेष लक्षणों की कुछ विशेषताओं का उल्लेख नीचे किया जाता है :

I. भारतीय संस्कृति की धारा अविच्छिन्न रही है.

II. यह धर्म, दर्शन और चिन्तन प्रधान रही है. यहां धर्म का अर्थ न 'मजहब' है और न 'रिलीजन' है. भारतीय संस्कृति का यह धर्म अति व्यापक, उदार एवं जीवन के सत्यों का पुंज है.

III. भारतीय संस्कृति का एक अलौकिक तत्व इसकी सहिष्णुता है. यहां सहिष्णुता का सामान्य अर्थ सहनशीलता नहीं वरन् गौरवपूर्ण शान्त विशाल मनोभाव है, जो समष्टिवाचक है.

IV. यह जड़ अथवा स्थिर नहीं, बल्कि सचेतन और गतिशील है. इसने समय-काल के अनुरूप अपना कलेवर (आत्मा नहीं) बदला ही नहीं, वरन् उसे अति ग्रहणशील बनाया है.

V. यह एकांगी नहीं, सर्वांगीण है. इसके सब पक्ष परिपक्व, समुन्नत, विकसित और सम्पूर्ण हैं. इसमें न कोई रिक्तता है और न संकीर्णता.

भारतीय संस्कृति की इन्हीं विशेषताओं ने इस देश को एक सशक्त एवं सम्पूर्ण भावनात्मक एकता के सूत्र में बांध रखा है.

भारत में इतनी विविधताओं के बावजूद एक अत्यन्त टिकाऊ और सुदृढ़ एकता की धारा प्रवाहित हो रही है इस सम्बन्ध में सभी भारतीयों के अनुभव एवं अहसास के बाद किसी बाह्य प्रमाण या प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं हैं. लेकिन फिर भी यहां बी.ए. स्मिथ जैसे सुविख्यात इतिहासवेत्ता के कथन का हवाला देना अप्रासंगिक न होगा. उन्होंने कहा कि भारत में ऐसी गहरी आधारभूत और दृढ़ एकता है, जो रंग, भाषा, वेष-भूषा, रहन-सहन की शैलियों और जातियों की अनेकताओं के बावजूद सर्वत्र विद्यमान है.

विविधता में एकता क्यों महत्वपूर्ण है?

विविधता में एकता निम्नलिखित तरीकों से एक देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है:

राष्ट्रीय एकता के लिए: विविधता में एकता एक देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि विभिन्न विचारों और विचारधारा वाले लोगों को विघटित करना बहुत आसान है. यदि उनके मतभेदों के बावजूद लोगों में एकता है, तो राष्ट्र को विघटित करना एक बल के लिए हमेशा असंभव होगा. किसी देश में शांति और समृद्धि बनाए रखने में नागरिकों की एकता बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

विकास और वृद्धि के लिए: विविधता में एकता देश के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि जिस देश को एकीकृत किया जाता है वह हमेशा विकास और विकास के मार्ग पर समृद्धि और प्रगति करेगा. यह देश की तुलना में कम आंतरिक मुद्दों का भी सामना करेगा जो सामाजिक रूप से अस्थिर है और विभिन्न शर्तों पर विभाजित है.

वैश्विक मान्यता: एक देश जो विविध है, लेकिन अभी भी एकजुट है, न केवल राष्ट्र के लिए मूल्य जोड़ता है, बल्कि यह अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर भी सम्मानित होता है. यह एक ऐसे देश के नागरिकों के मूल्यों और नैतिकता को प्रदर्शित करके विश्व स्तर पर एक उदाहरण प्रस्तुत करता है जो विभिन्न पृष्ठभूमि और संस्कृति से होने के बावजूद एक दूसरे का सम्मान और समर्थन करते हैं.

शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए: विविधता भी आंतरिक संघर्षों का कारण हो सकती है लेकिन विविधता में एकता विविध संस्कृति और पृष्ठभूमि वाले लोगों के साथ एक शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. यह उनकी असहमति के बावजूद एकजुट रहने में मदद करती है.

एकता और विविधता में क्या अंतर है?

एकता में एकजुटता और एकीकरण की भावना है. यह वह भावना है जो लोगों को एक साथ रखती है और एक बंधन है जो निष्पक्षता की भावना का अर्थ है. एकता विभिन्न समूहों के बीच संबंधों के लिए खड़ी है जो उन्हें एक इकाई में बांधती है. इसे धार्मिक, भाषाविज्ञान या नस्लीय पहलुओं के आधार पर विविध वर्गों से संबंधित लोगों के बीच मतभेदों की अनुपस्थिति के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है.

इसके विपरीत, विविधता अंतर या भिन्नता को संदर्भित करती है. इसे धर्म, नस्ल या भाषा आदि के आधार पर विभिन्न समूहों के सामूहिक अंतर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है. यह विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और पृष्ठभूमि के साथ रहने वाले वर्गों और समूहों की विविधता है. विविधता प्राकृतिक घटना है जो लोगों के बीच विभिन्न विचारों, अनुभवों और स्वीकार्यता को लाने में मदद करती है.

एकता एक होने की स्थिति है जबकि विविधता अलग या भिन्न होने की स्थिति है. एक परिवार में विभिन्न विचारों, रुचियों या वरीयताओं वाले लोग हो सकते हैं जो कई पहलुओं में अपनी विविधता दिखाते हैं, लेकिन एक परिवार के रूप में वे उनके बीच एकता की भावना का प्रदर्शन करते हैं.

भारत को विविधता में एकता का सबसे अच्छा उदाहरण क्यों माना जाता है?

भारत, 5000 साल पुरानी सभ्यता विविधताओं की भूमि है, चाहे वह धर्म, जाति, नस्ल, संस्कृति या भाषा हो, देश में कई विविधताएं हैं. लगभग 29 राज्य हैं और प्रत्येक राज्य की अपनी संस्कृति, परंपरा और भाषा है. देश में हर साल विभिन्न समुदायों के 30 से अधिक भव्य त्योहार मनाए जाते हैं. देश भर में लगभग हज़ार भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं.

इतने अंतर के बावजूद, भारत के लोग आपस में एकता की वास्तविक भावना का प्रदर्शन करते हैं जो विविधता में एकता की अवधारणा को प्रदर्शित करता है. भारत की विविधता, संस्कृति में एकता विश्व में अद्वितीय मानी जाती है, जो वैश्विक समुदाय को आश्चर्यचकित करती है. यह भारत की सदियों पुरानी परंपरा के कारण है जिसने लोगों को नैतिकता, मूल्यों, सम्मान और सहिष्णुता के महत्व को सिखाया है.

यद्यपि लोग विविध संस्कृति और समुदायों से संबंधित हैं, लेकिन वे मानवता, प्रेम और सम्मान के बंधन को साझा करते हैं और राष्ट्रवाद के एक ही तार से बंधे हैं. भारत के संविधान ने भी प्रत्येक नागरिक को बिना किसी हस्तक्षेप के अपने जीवन को गरिमा और सम्मान के साथ जीने का अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान की है.

निष्कर्ष :

भारत को एक स्वतंत्र देश बनाने के लिये भारत के सभी धर्मों के लोगों द्वारा चलाये गये स्वतंत्रता आंदोलन को हम कभी नहीं भूल सकते है. भारत में विविधता में एकता का बेहतरीन उदाहरण स्वतंत्रता के लिये संघर्ष है. भारत में विविधता में एकता सभी को एक कड़ा संदेश देती है कि बिना एकता के कुछ भी नहीं है. प्यार और समरसता के साथ रहना जीवन के वास्तविक सार को उपलब्ध कराता है.

विविधता में एकता हमें सिखाती है कि यद्यपि हम विभिन्न जाति, पंथ या नस्ल से हैं लेकिन ये अंतर हमें अलग नहीं रख सकते हैं और हम हमेशा अपने राष्ट्र की बेहतरी के लिए एकजुट रहते हैं.

यह न केवल राष्ट्र को एकीकृत और मजबूत बनाता है बल्कि यह प्रेम, शांति, और सम्मान के साथ सह-अस्तित्व की सदियों पुरानी भारतीय परंपरा को भी जीवित रखता है. संस्कृति, रीति-रिवाजों, त्योहारों, संगीत और नृत्य में अंतर देश को जीवंतता का देश बनाता है और भारत को दुनिया में एक अविश्वसनीय देश बनाता है.

मनु
क्षे.म.प्र.का., अहमदाबाद

पड़ेरु का सौंदर्य

विशाखापट्टनम की कई खासियतें हैं, उनमें पड़ेरु सबसे अनोखी है. पड़ेरु विशाखापट्टनम शहर से लगभग 120 किलोमीटर दूर है. यहाँ प्रकृति हर कदम हमें लुभाती है, हमारे आँखों के पलक झपकते ही प्रकृति अपना रूप बदल लेती है. यहाँ बादलों की अलग दुनिया है, बादलों की दुनिया में अपना घर बनाने वालों का सपना यहाँ साकार सा लगता है. मानो लोग प्रतिदिन बादलों से अपनी बातें कह रहे हों. यहाँ बादलों से घिरे हुए पहाड़ों के एक छोर से झरनों की शुरुआत होती है लेकिन इन झरनों से गिरता हुआ पानी जिस खाई में जाता है उस खाई का कोई अता पता नहीं है. यहाँ के पेड़ को देख कर लगता है मानो वो बादलों को चीर कर आसमान को छूने की कोशिश कर रहे हैं. यहाँ के लोगों का रहन-सहन बहुत ही आम है. यहाँ के लोगों का अपना बाजार होता है जिसमें केवल प्रकृति से प्राप्त सामान का ही आदान-प्रदान होता है. ठंड के मौसम में ऐसा प्रतीत होता है मानो इस जगह को प्रकृति ने पीली चादर (सरसों के पौधों) से ढंक दिया हो.

- मौएच माधवी
से.का. विशाखापट्टनम

सभ्यता और संस्कृति का अंतर्संबंध

सभ्यता शब्द 'सभा' से व्युत्पन्न हुआ है तथा इसका सामान्य अर्थ है सभा में बैठने की योग्यता. इस अर्थ में सभ्यता व्यक्ति विशेष की उन विशेषताओं की ओर इंगित करती है जिनके कारण वह समाज में रहने के योग्य होता है. सभ्यता इस अर्थ में पालन योग्य सामाजिक कर्तव्यों, अधिकारों तथा निषेधों पर ज़ोर देती है.

सभ्यता के इस सामान्य अर्थ के इतर एक दूसरा अर्थ विशिष्ट सामाजिक विकास एवं भौतिक सुख-समृद्धि से है. जब हम सिंधु घाटी सभ्यता, माया सभ्यता या मेसापोटामिया सभ्यता की बात करते हैं, तब हमारा भाव इसी दूसरे अर्थ के संदर्भ में होता है.

प्राचीनकाल में आदिम सभ्यता का मुख्य कारक तत्व भाग्यवाद था, जबकि मध्यकालीन सभ्यतायें अध्यात्म से अनुप्राणित थी. इन दोनों से हटकर आधुनिक सभ्यता का मुख्य तत्व भौतिकता है.

दूसरी ओर संस्कृति अपने परिभाषित रूप में मनुष्य की सहज प्रवृत्तियों, नैसर्गिक शक्तियों के विकास तथा उनके परिष्कार की द्योतक हैं, सूचक हैं. संस्कृति मनुष्य के परिमार्जित और परिष्कृत होती प्रवृत्तियों का पैमाना है. संस्कृति के प्रभाव से ही व्यक्ति या समाज ऐसे कार्यों को करने को तत्पर होते हैं जिनसे आर्थिक, सामाजिक, कलात्मक, धार्मिक, साहित्यिक, राजनैतिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों में उन्नति होती है. संस्कृति शब्द मूलत: संस्कृत भाषा का शब्द है जो 'सम' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से निष्पन्न होता है. यह परिष्कृत अथवा परिमार्जित करने के भाव का सूचक है. इसी प्रकार संस्कृत और संस्कार शब्द भी निष्पन्न हुये है, जिनका अर्थ क्रमश: 'शुद्ध किया हुआ' और 'शुद्ध करने वाला कृत्य' है.

संस्कृति शब्द से परिमार्जन और परिष्कार के साथ ही शिष्टता तथा सौजन्यता के भावों का भी बोध होता है. यह कहा जा सकता है कि संस्कृति किसी व्यक्ति और समाज में व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है. समाज विज्ञानी यह मानते हैं कि संस्कृति में मनुष्य द्वारा समय के साथ प्राप्त और विकसित किए गए सभी आंतरिक व बाह्य व्यवहारों के तरीके समाहित हैं.

व्यापक संदर्भ में साहित्य, संगीत, नृत्य, कला, सामाजिक दर्शन, विज्ञान एवं धार्मिक आदर्शों की सूक्ष्मता संस्कृति के सनातन तत्व माने जा सकते हैं. संसार के हर भाग में, चाहे वो जनजातीय हो या नागरी, लोगों ने जीवन को बेहतर बनाने और उसे उत्कर्ष में पहुँचाने के उद्देश्य से इन बुनियादी तत्वों को विकसित और पुष्ट करने का प्रयास किया है. उनके जीवन संघर्ष, उनके चिंतन और उनके भावों-अभावों की भिन्नता के ही कारण विश्व के अलग-अलग भागों में विकसित हुई संस्कृतियों में बुनियादी तत्वों की वरीयता का निर्धारण तथा विकास भिन्न रूप से हुआ है. यही कारण है कि लोक संस्कृति और नागरी संस्कृति अलग-अलग तरीके से विकसित हुई. सनातन भारतीय संस्कृति जहाँ त्याग, प्रेम व सहिष्णुता के धार्मिक आदर्शों से अनुप्रेरित है, रोमन संस्कृति राजनैतिक चेतना से. वहीं यूनानी संस्कृति अपने विचार स्वातंत्र्य को लेकर फली-फूली. हमारे अपने देश में ही विभिन्न संस्कृतियों ने जन्म लिया और पुष्पित-पल्लवित हुईं. यहाँ गंगा और जमुना के मैदानी इलाकों में गंगा-जमुनी संस्कृति ने समाज और इतिहास को दिशा दी तो बस्तर और छोटा नागपुर की जनजातीय संस्कृतियों ने वनांचल में अभावों के बीच मांदरों की थाप संग उल्लास के रंग बिखेरे.

संस्कृति गतिशील और परिवर्तनशील होती है. ज्ञान, विज्ञान और परम्पराएँ अद्यतन हो संस्कृति को नया स्वरूप देती जाती हैं. साथ ही जैसे-जैसे समय बीतता है, संस्कृति में नए विचारों और नए कौशलों के जुड़ते जाने से बदलाव आता जाता है. संस्कृति में निहित विभिन्न तत्व एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक धरोहर के रूप में हस्तांतरित होते हैं और समय के साथ परिमार्जित हो संवर्धित और संरक्षित होते हैं.

संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण गुण है, उसकी ग्रहणशीलता. इसी के कारण संसार की अलग-अलग संस्कृतियों में संक्रमण होता रहा है. पहले संक्रमण की यह प्रक्रिया अत्यंत धीमी थी. परंतु वर्तमान संचार तथा सूचना क्रांति के कारण संक्रमण की यह दर अत्यंत तेजी से बढ़ी है. इसके कारण कई पुरातन सुसंस्कृतियों का अपसंस्कृतियों में बदलने का खतरा भी दिखलाई पड़ने लगा है.

संस्कृति और सभ्यता की बात करते समय सामान्य तौर पर हम दोनों में अंतर नहीं करते. परंतु दोनों के अंतर संबंधों की पड़ताल करने पर यह तथ्य सहज ही सामने आता है कि जहाँ संस्कृति से आशय बौद्धिक विकास की अवस्थाओं से है, वहीं सभ्यता शारीरिक और भौतिक उन्नति का बोधक है. संस्कृति विचार है तो सभ्यता उसका आचार. संस्कृति आत्मा है तो सभ्यता उसका शरीर.

सभ्यता साधन है जबकि संस्कृति साध्य. सभ्यता बताती है कि 'हमारे पास क्या है' और संस्कृति यह बताती है कि 'हम क्या हैं'. इस रूप में कपड़े पहनना सभ्यता है किन्तु उसे किस तरह पहना जाए यह संस्कृति है. एक परंपरागत बंगाली महिला और एक परंपरागत

मराठी महिला के साड़ी पहनने के तरीके में भेद उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण है. ठीक वैसे ही मोबाइल रखना सभ्यता है किन्तु उसे किस शालीनता और गरिमापूर्ण तरीके से लोगों के सामने प्रयोग किया जाए यह संस्कृति सिखाती है.

जर्मन दार्शनिक मैनुअल काण्ट के अनुसार सभ्यता बाहरी व्यवहार की वस्तु है किन्तु संस्कृति आंतरिक व्यवहार की. जबकि ब्रिटिश दार्शनिक ग्रीन ने सभ्यता व संस्कृति के अंतर को स्पष्ट करते हुए लिखा है – एक संस्कृति तब ही सभ्यता बनती है, जब उसके पास एक लिखित भाषा, दर्शन, विशेषीकरण युक्त श्रम विभाजन, एक जटिल विधि व्यवस्था और राजनीतिक प्रणाली हो.

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'भारत एक खोज' में संस्कृति और सभ्यता के अंतर्संबंधों की विवेचना करते हुये लिखा है–'समृद्ध सभ्यता में संस्कृति का विकास होता है और दर्शन, साहित्य, नाटक, कला, विज्ञान और गणित विकसित होते हैं.'

परंतु नेहरू जी की बात पर विचार करते समय इस तथ्य की ओर भी ध्यान रखना चाहिए कि युद्ध से बरबाद हुये देशों में भौतिक समृद्धि का ह्रास होने पर भी वहाँ की संस्कृति शेष रही, नए रूपों में ढल गई. इसी संदर्भ में वनवासीय जनजातियों की समृद्ध लोक नृत्यकला को भी देखा जा सकता है. ये अभावों के बीच जन्मी और फली-फूली किन्तु जैसे-जैसे उन वनवासीय क्षेत्रों में आधुनिक सुविधाओं का विस्तार हुआ, उन लोक कलाओं का ह्रास होना शुरू हो गया.

संक्षेप में कहा जाए तो सभ्यता सांस्कृतिक विचारधारा का बाह्य क्रियात्मक रूप है. बाह्य रूप क्षीण होने पर उसके आंतरिक स्वरूप पर प्रभाव तो पड़ता है पर वह नष्ट नहीं होती, ऊर्जा या आत्मा की तरह उसका रूपान्तरण हो जाता है.

प्रतिभू बनर्जी
क्षे.का., बिलासपुर

भाषा साहित्य एवं लोक-साहित्य

भाषा शब्द का निर्माण संस्कृत भाषा की 'भाष्' धातु से हुआ है, जिसका अर्थ होता है बोलना अथवा कहना. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों को भली-भांति प्रकट कर सकता है तथा दूसरों के विचार स्पष्टतया समझ सकता है. भाषा अभिव्यक्ति का विश्वसनीय माध्यम है. यह हमारे समाज के निर्माण, विकास, अस्मिता, सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण साधन है. भाषा के बिना मनुष्य अपूर्ण है और अपने इतिहास और परंपरा से अलग है.

हाल ही में हुए एक सर्वे के अनुसार पूरे संसार में कुल 7111 भाषाएँ बोली जाती हैं. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 121 के करीब प्रमुख भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें से 22 अनुसूचित हैं अर्थात संविधान की 8वीं अनुसूची द्वारा मान्यता प्राप्त है.

कोई भी भाषा बोलचाल से पढ़ाई-लिखाई वाली भाषा तक एक यात्रा तय करती है. जैसे बच्चे के विकास के तीन चरण होते है- बचपन, जवानी और बुढ़ापा. वैसे ही भाषा के विकास के भी तीन चरण होते है-बोली, विभाषा और मानक/परिनिष्ठित भाषा.

करते है तन-मन से वंदन,
जन-गण-मन की अभिलाषा का ।
अभिनंदन अपनी संस्कृति का,
आराधना अपनी भाषा का ।।

बोली यानि बोलचाल की भाषा. थोड़ी-थोड़ी दूर पर इसमें परिवर्तन आने लगते हैं. इसमें व्याकरण का अभाव होता है. इसमें लिपि का भी अभाव होता है. सामान्यत: इसमें साहित्य का भी अभाव होता है और देशज शब्दों का प्रयोग किया जाता है. विभाषा का क्षेत्र व्यापक होता है. इसमें समृद्ध शब्दावली है, साहित्यिक रचनाएँ पाई जाती हैं. विभाषा का मानकीकरण नहीं हुआ. इसमें वैज्ञानिक शब्दावली का अभाव होता है, जैसे भोजपुरी, अवधी, बृजभाषा एवं मैथिली में भौतिक विज्ञान का कोई नाम नहीं है. मानक भाषा विकास का तीसरा स्तर है. ये पढ़ाई-लिखाई, कार्यालयों में उपयोग में लायी जाने वाली भाषा है. इसमें व्याकरण के नियमों के द्वारा इसकी अशुद्धियों को दूर किया जाता है. इसमें वैज्ञानिक और प्रशासनिक शब्दावली भी होती है. इसकी एक निश्चित लिपि होती है, जैसे-अंग्रेज़ी भाषा की लिपि 'रोमन', हिन्दी भाषा की लिपि 'देवनागरी'. इस भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है अर्थात कई राज्यों, देशों तक इसका फैलाव होता है. इस भाषा को बोलने वालों, पढ़ने वालों, लिखने वालों की संख्या कई राज्यों, कई देशों तक हो सकती है. इस भाषा के मानकीकरण के लिए आयोग/विभाग स्थापित किए जाते हैं, जैसे हिन्दी भाषा के लिए राजभाषा आयोग काम करता है.

कोई एक विभाषा अपने गुण-गौरव, साहित्यिक अभिवृद्धि, जन-सामान्य में अधिक प्रचलन आदि के आधार पर राजकार्यों के लिए चुन ली जाती है और उसे राजभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप मे घोषित कर दिया जाता है. राजभाषा सरकारी काम-काज की भाषा है जिसका प्रयोग जनता पर शासन-प्रशासन करने लिए किया जाता है. जैसे भारत संघ की राजभाषा अनुच्छेद 343(1) के तहत 'हिन्दी' है.

अलग-अलग राज्यों की विभिन्न राजभाषाएं होती है, जैसे केरल की मलयालम, ओडिशा की उड़िया, प. बंगाल की बंगाली, उ.प्र. की हिन्दी व उर्दू और कश्मीर की डोगरी एवं कश्मीरी, उर्दू, हिन्दी व उत्तराखंड और

हिमाचल प्रदेश में हिन्दी के साथ संस्कृत भी राजभाषा के रूप मे स्थापित है. जो भाषा सर्वाधिक जनसंख्या द्वारा बोली जाती है, वह है राष्ट्रभाषा. इस भाषा से अधिकतर जनसंख्या का सांस्कृतिक जुड़ाव होता है. यह पूर्वजों की भाषा है व इसके समृद्ध होने से जनसंख्या को इससे प्रेम होता है. किसी भी देश की राष्ट्रभाषा उस देश के नागरिकों के लिए गौरव, एकता, अखंडता और अस्मिता का प्रतीक होती है. संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा तो नहीं दिया गया है लेकिन इसकी व्यापकता को देखते हुए इसे राष्ट्रभाषा कहते है, परंतु भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है.

भाषा का उत्कृष्ट स्वरूप उसके साहित्य से ही बनता है. भाषा का सम्बन्ध साहित्य से है. साहित्य अपनी अंतरात्मा की भावनाएं व्यक्त करने का जरिया है. साहित्य भाषा की विरासत एवं भविष्य निधि दोनों है. किसी भाषा के वाचिक और लिखित साहित्य होते हैं. दुनिया में सबसे पुराना वाचिक साहित्य हमें आदिवासी भाषाओं में मिलता है. इस दृष्टि से आदिवासी साहित्य सभी साहित्य का मूल स्रोत है. साहित्य शब्द स+हित+य के योग से बना है जिसका अर्थ होता है सहित या साथ होने की अवस्था/शब्द और अर्थ सहितता. साहित्य किसी भाषा अथवा देश के सभी ग्रंथों, लेखों आदि का समूह होता है. यह समाज का दर्पण होता है, समाज को साहित्य से ज्ञान की प्राप्ति होती है. हर युग में साहित्यकारों द्वारा साहित्य लिखा जाता है. साहित्य की अनेक विधाएँ होती है जैसे कि खंडकाव्य, महाकाव्य, नाटक आदि. साहित्य के माध्यम से राजनीति साहित्य, विज्ञान साहित्य, पत्र साहित्य आदि पढ़ने को मिलता है. मुंशी प्रेमचंद जी कहते थे कि साहित्य के माध्यम से ही मनुष्य अच्छा बोलना, सुनना सीखता है; अच्छी बात-चीत करने के गुण साहित्य को पढ़कर ही आते हैं. हिन्दी साहित्य हिन्दी का रचना संसार है. हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है. इसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा में तलाशी जा सकती है. परंतु हिन्दी साहित्य की जड़ें मध्ययुगीन भारत की बृजभाषा, अवधि, मैथिली और मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य में जाती है. हिन्दी साहित्य के इतिहास पर अध्ययन करने वाले फ्रांस के एक व्यक्ति थे 'गार्सा द तासी', इन्होंने एक किताब लिखी 'इस्तवार द लिततरेल्यूर एंदुई ऐ एंदुस्तानी' जो कि 1839 में प्रकाशित हुई. इस किताब मे 70 लेखकों की जीवनी आदि का विवरण था. हिन्दी साहित्य के इतिहास लिखने वाले पहले भारतीय 'शिव सिंह सेंगर' थे, इन्होंने एक किताब लिखी थी 'शिव सिंह सरोज' जो कि 1883 मे प्रकाशित हुई और यह किताब हिन्दी साहित्य इतिहास पर किसी भारतीय द्वारा रचित प्रथम ग्रंथ था.

भारतीय साहित्य में 'लोक' शब्द बहुत प्राचीन काल से प्रयुक्त होता चला आया है. लोक शब्द आरंभिक साहित्य में वेद के साथ मिलता है. लोक वेद की चर्चा भी सुनी जाती है किन्तु वेद में कही गयी बात वैदिक और लोक में कही गयी बात लौकिक होती है. 'लोक-साहित्य' का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है. लोक-साहित्य उतना प्राचीन है जितना कि मानव, इसलिए उसमें जन-जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित हैं. डॉ. सत्येंद्र के अनुसार लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो आभिजात्य, संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा प्रवाह मे जीवित रहता है. (लोक-साहित्य विज्ञान, डॉ. सत्येंद्र, पृष्ठ 3)

किसी देश अथवा क्षेत्र का लोक-साहित्य वहाँ के आदिकाल से लेकर अब तक की उन सभी प्रवृत्तियों का प्रतीक होता है जो साधारण जनस्वभाव के अंतर्गत आती हैं. इस साहित्य में जनजीवन की सभी प्रकार की भावनाएं बिना कृत्रिमता के समाई रहती हैं. अत: यदि कहीं की समूची संस्कृति का अध्ययन करना हो तो वहाँ के लोक-साहित्य का विशेष अवलोकन करना पड़ेगा. लोक-साहित्य के मुख्यत: चार भेद कहे जाते हैं-लोक-गीत, लोक-गाथा, लोक-कथा और लोक-नाट्य.

लोक-गाथा और लोक-कथा में भेद इतना ही है कि लोक-गाथा एक लंबे रूप में चलती है और इसमें प्रबंध-योजना गाथा-प्रधान न होकर रस-प्रधान होती है जबकि लोक-कथा गद्यात्मक होने के साथ-साथ कथा-प्रधान या दूसरे शब्दों में घटना-प्रधान हुआ करती है. लोक-नाट्य जनसुलभ रंगमंच को दृष्टि में रखकर आंगिक और वाचिक अभिनय पर आधारित स्वांग या लीला तक सीमित रहता है. मौखिक होता है, इसका कोई रचनाकार नहीं होता. लोक-साहित्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता है. लोक-साहित्य जनभाषा में होता है. यह लोक परंपरा का वाहक है. हिन्दी के लोककवि 'रामनरेश त्रिपाठी' द्वारा रचित 'कविता कौमुदी' लोक-साहित्य की प्रमुख रचना है. यह उन 15 हज़ार से भी अधिक लोक-गीतों का संग्रह है जिन्हें त्रिपाठी जी ने सन् 1925 और 1928 के बीच अवध के गाँव-गाँव मे घूम कर संग्रहित किया था. सन् 1928 के अंत में प्रकाशित इस पुस्तक की प्रथम प्रति महात्मा गांधी को भेंट की गयी थी और उन्होंने मुक्त कंठ से इस प्रयास की प्रशंसा की थी. 'कविता कौमुदी' में लोक-काव्य के विविध रूपों-सोहर, कजरी, बिरहा, होरी, मेला गीत, विवाह गीत, विदाई गीत आदि शामिल है.

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति का मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के,
मिटत न हिय के शूल ।।

मयंक गुप्ता
सरल, कानपुर

हम भारतीय हैं, गर्व की बात है

विशिष्टता पर गर्व करना सामान्य संकल्पना है. भारत के प्रत्येक क्षेत्र में विद्यमान विशिष्टता हमें भारतीय होने पर गर्व की अनुभूति करवाता है. विशिष्टता से इतर, अनेकता में एकता तथा भारत के सभी स्थलों की विविधता हमें गौरवान्वित करती है. भारत की अनेक विशिष्टताओं की ओर आकर्षित होकर ही विदेशियों ने भी यहाँ आक्रमण किया और व्यापारिक संबंध भी बनाए. हमारा जन्म भारत में हुआ है. इस धरती का अन्न, जल और वायु ग्रहण करके हम बड़े हुए हैं तथा हम सभी इसकी महान परम्पराओं का एक हिस्सा हैं अतः हम सब को भारतीय होने पर गर्व करना स्वाभाविक है. अपनी जन्मभूमि, देश पर गर्व करना सामान्य संकल्पना है, इसके अतिरिक्त भारत में ऐसी कई विशेषताएँ विद्यमान है जो हमें भारतीय होने पर गर्व का अहसास करवाती हैं.

भारत एक भूमि का टुकड़ा नहीं है बल्कि यह समृद्ध एवं प्राचीन विरासत का नाम है. सामान्यतः इसके प्रत्येक क्षेत्र में हमें विभिन्नता का दर्शन होता है परंतु भारतीय संस्कृति की एक धारा हम सबको एक साथ बांधे हुए है. भारत में अनगिनत समस्याएँ हैं लेकिन उस पर विजय पाने की क्षमता भी इसमें विद्यमान है. एक सशक्त एवं सक्षम देश होने के नाते सम्पूर्ण विश्व की नजरें वर्तमान समय में भारत पर टिकी हुई है. भारत दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है. इसने अनेक रीति-रिवाजों और परम्पराओं का संगम देखा है. यह देश की समृद्ध संस्कृति और विरासत का परिचालक है. विश्वशांति व पूरे विश्व में मानव कल्याण की भावना के प्रचार-प्रसार की खातिर भारत ने कई प्रयास किए हैं.

भारत विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक व्यवस्था है. हजारों वर्ष पूर्व ही यहाँ इस व्यवस्था का जन्म हुआ था. इस व्यवस्था में समाज के सभी वर्ग, जाति, धर्म एवं समुदायों के लिए समुचित व्यवस्था है, साथ ही जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा किए जानेवाले शासन की व्यवस्था है. भारत की शासन व्यवस्था प्रत्येक नागरिक के लिए लोक कल्याण की भावना को समाहित किए हुए है. यहाँ शासन व्यवस्था के लिए सबसे बड़े संविधान का निर्माण किया गया जिसमें निर्दिष्ट लोक कल्याण को साथ लेकर शासन व्यवस्था का कार्यान्वयन किया जाता है. शासन से इतर धर्म की बात करें तो भारत दुनिया का एकमात्र देश है जहां सर्व-धर्म संभाव का आदर्श विकसित हुआ व प्रत्येक धर्म को यहाँ शरण प्राप्त हुई है. धर्मनिरपेक्षता भारत की प्राचीन परंपरा का ही अंग है. सभी धर्म के लोग यहाँ समान हैं.

भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो भारत दुनिया के कुछ वैसे देशों में शामिल है जिसमें लगभग सभी प्रकार की स्थलाकृति उपलब्ध है. यहाँ पहाड़, पठार, नदी, समुद्र, समतल उपजाऊ भूमि, बंजर भूमि, रेगिस्तान, वन आदि देखने को मिलता है. अगर सम्पूर्ण भारत भ्रमण किया जाए तो हम दुनिया की सभी प्रकार की स्थलाकृति का आनंद ले सकते हैं. दुनिया में कितने ऐसे देश हैं जहां केवल एक ही स्थलाकृति उपलब्ध है. ऐसे देशों के जनसमुदाय को सामान्य रूप से केवल एक ही स्थलाकृति के बारे में जानकारी होती है. भारतीय जनमानस को सभी तरह की स्थलाकृति को जानने और समझने व अनुभव करने का विशेष लाभ प्राप्त होता है. मौसम की दृष्टि से देखा जाए तो भारत में सभी प्रकार के मौसम (ठंड, गर्मी और बरसात) पाये जाते हैं. विश्व के कई देश ऐसे हैं जहां केवल एक या दो मौसम पाये जाते है. इस मामले में भी भारतीय सौभाग्यशाली हैं कि हमें सभी मौसमों का आनंद प्राप्त होता है.

किसी भी देश का विकास वहाँ के लोगों के विकास के साथ जुड़ा हुआ होता है. इसके मद्देनज़र यह ज़रूरी हो जाता है कि जीवन के हर पहलू में विज्ञान-तकनीक और शोध कार्य अहम भूमिका निभाएँ. विकास के पथ पर कोई देश तभी आगे बढ़ सकता है जब उसकी आने वाली पीढ़ी के लिये सूचना और ज्ञान आधारित वातावरण बने और उच्च शिक्षा के स्तर पर शोध तथा अनुसंधान के पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हों. भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था कुछ ऐसी रही कि विदेशों से भी लोग यहाँ शिक्षा प्राप्त करने आते थे. प्राचीन समय में भी यहाँ की शिक्षा प्रणाली में उच्च शिक्षा के स्तर पर शोध तथा अनुसंधान के पर्याप्त संसाधन उपलब्ध थे, कई अनुसंधान भी यहाँ किए गए. वर्तमान में अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में भारत की कई उपलब्धियां

हैं जो हमें गौरव का अहसास करवाती हैं. ऐसी कुछ उपलब्धियां निम्नलिखित है :

* इंडियन साइंस एंड रिसर्च एंड डेवलपमेंट इंडस्ट्री रिपोर्ट 2019 के अनुसार भारत बुनियादी अनुसंधान के क्षेत्र में शीर्ष रैंकिंग वाले देशों में शामिल है.

* विश्व की तीसरी सबसे बड़ी वैज्ञानिक और तकनीकी जनशक्ति भी भारत में ही है.

* वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद CSIR द्वारा संचालित शोध प्रयोगशालाओं के ज़रिये नानाविध शोधकार्य किये जाते हैं.

* भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी देशों में सातवें स्थान पर है.

* मौसम पूर्वानुमान एवं निगरानी के लिये प्रत्युष नामक शक्तिशाली सुपरकंप्यूटर बनाकर भारत इस क्षेत्र में जापान, ब्रिटेन और अमेरिका के बाद चौथा प्रमुख देश बन गया है.

* नैनो तकनीक पर शोध के मामले में भारत दुनियाभर में तीसरे स्थान पर है.

* वैश्विक नवाचार सूचकांक (Global Inno-vation Index) में हम 57वें स्थान पर हैं.

* भारत ब्रेन ड्रेन से ब्रेन गेन की स्थिति में पहुँच रहा है और विदेशों में काम करने वाले भारतीय वैज्ञानिक स्वदेश लौट रहे हैं.

* व्यावहारिक अनुसंधान गंतव्य के रूप में भारत उभर रहा है तथा पिछले कुछ वर्षों में हमने अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाया है.

* वैश्विक अनुसंधान एवं विकास खर्च में भारत की हिस्सेदारी 2017 के 3.70% से बढ़कर 2018 में 3.80% हो गई.

* भारत एक वैश्विक अनुसंधान एवं विकास हब के रूप में तेजी से उभर रहा है. देश में मल्टी-नेशनल कॉर्पोरेशन रिसर्च एंड डेवलपमेंट केंद्रों की संख्या 2010 में 721 थी और अब नवीनतम आँकड़ों के अनुसार यह 2018 में 1150 तक पहुँच गई है.

भारतीय होने के नाते हमें भारत की स्थलाकृति, स्थापत्य कला, भौगोलिक स्थिति, लोकतान्त्रिक व्यवस्था, शासन प्रणाली, शिक्षा प्रणाली पर गर्व है. हर व्यवस्था में कुछ खामियाँ तो अवश्य होती हैं पर प्राचीन परंपरा और विरासत को देख कर हमें भारतीय होने पर गर्व का अहसास होता है.

विक्रांत कुमार
क्षे.का., गुवाहाटी

भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में नई स्त्री

'स्त्री' और संस्कृति का संबंध अत्यंत गहरा और अभिन्न है. भारतीय सभ्यता में स्त्री को सृष्टि की अधिष्ठात्रि माना गया है. शक्ति, लक्ष्मी, विद्या, समृद्धि इत्यादि अनेक रुपों में स्त्री व्याप्त है. एक स्त्री का चित्त बड़ा ही कोमल होता है, वह अत्यंत संवेदनशील तथा भावुक होती है. महाकवि जयशंकर प्रसाद ने अपनी कविता कामायनी में वर्णित किया है –

'यह आज समझ मैं पायी हूं कि, दुर्बलता में नारी हूँ.
आवायन की सुन्दर कोमलता, लेकर मैं सबसे हारी हूँ.'

स्त्री शब्द स्तै धातु से बना है, जिसका अर्थ है, समेटना, सहेजना. यह वास्तव में हर स्त्री के स्वभाव में होता है.

आदि काल से स्त्रियां ही हमारी संस्कृति की धरोहर को ना सिर्फ अपने आँचल में समेटे हुए है, बल्कि उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी, रीतियों, रिवाजों और रस्मों, व्यंजनों या पकवानों एवं लोकगीतों और लोकनृत्यों से अपनी संतानों को प्रदान करती आयी हैं. भले ही हम एक पुरुष प्रधान समाज में रहते हैं परन्तु भारतीय दर्शन और संस्कृति की मूल अवधारणा में स्त्री है और उसने ही अपने त्याग और तपस्या की शक्ति से भारतीय संस्कृति को सींचा व पाला-पोसा है.

किसी भी प्रदेश में पालन किए जाने वाले, छोटे-छोटे रीति रिवाज़, वहां के खान-पान, तौर-तरीके इत्यादि हर माँ अपनी बेटी को सिखलाती है. एक समय था जब स्त्रियों का जीवन घर की चारदीवारी और चूल्हे-चौके तक ही सीमित था, परिवार व्यवस्था में उनका स्थान चौखट के भीतर हुआ करता था. वे ना केवल औपचारिक शिक्षा से दूर थी बल्कि अनेक अधिकारों से भी वंचित थी. अनेक कुरीतियों ने उनके जीवन को नागपाश की भांति जकड़ा हुआ था.

अनेक बंधनों से जकड़ी उस स्त्री ने, अपने त्याग, प्रेम, सहनशीलता की हर दिन ना जाने कितनी परीक्षाएं दी होंगी. आज की नई स्त्री बाधाओं को लांघ कर उन बेड़ियों से मुक्त होकर निरंतर आगे बढ़ रही है. आज की नारी ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह अबला नहीं है और उनको भी चार दीवारी के बाहर की खुली हवा में सॉस लेने का बराबर का हक है. हर एक जिम्मेदारी को बखूबी निभाने के लिए वह सहज एवं सक्षम है.

अपने व्यक्तिगत एवं व्यवसायिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वह सभी कठिनाईयों का डटकर सामना कर रही है. चाहे वह कोई भी क्षेत्र विशेष हो, शिक्षा, रक्षा, वित्त, विज्ञान या चिकित्सा, हर

जगह उसने अपने आप को कुशल और सक्षम सिद्ध किया है. उद्यमिता की जिम्मेदारियों को अपने कंधों पर लेने वाली महिलाओं की संख्या भी पिछले कुछ वर्षों में काफी बढ़ी है. अपनी प्रत्येक भूमिका, मां, पत्नी, बेटी, बहन इत्यादि या चाहे कार्यक्षेत्र की चुनौतियां हो, वह सफलतापूर्वक उनका सामना व जिम्मेदारियों का सहजता से निर्वहन कर रही है.

इतना ही नहीं, आज की नई स्त्री अन्य वंचित महिलाओं के विकास, उत्थान तथा उनके मौलिक अधिकारों की लड़ाई में भी बढ़-चढ़ कर प्रतिभागिता कर रही है.

संस्कृति किसी जाति या राष्ट्र की वे बातें होती हैं जो उसके मन, आचार-विचार, क्रिया-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की निर्देशक होती है. अतः कोई भी ऐसी बात जो विकास की दौड़ में हमें पीछे की ओर ले जाए उसे हम संस्कृति का हवाला दे कर सही या दोष-रहित साबित नहीं कर सकते. आज के आधुनिक युग में समाज इस तथ्य को समझे कि स्त्रियों के विकास से ही समाज की उन्नति संभव है. नारी की अवहेलना करके मानव सभ्यता कभी उत्कृष्टता को प्राप्त नहीं कर पाएगी. नए विचारों और वैकल्पिक विश्वासों से ही एक नए और निष्पक्ष समाज का निर्माण हो सकता है.

आज की नारी क्या चाहती है, उसकी क्या अपेक्षाएं हैं? वह किसी की दया का पात्र नहीं बनना चाहती, नई स्त्री बसों में अलग सीट, टिकट खिड़कियों में अलग लाईन या प्रतिस्पर्धाओं में आरक्षण की मोहताज़ नहीं है. इन सभी का तब तक कोई मूल्य नहीं है जब तक उन्हें भिन्न और कमजोर मानकर उन पर एक तरफ़ तो तरस खाया जाए और दूसरी ओर उनका हर कदम पर दोहन और शोषण किया जाता रहे.

असल में देखा जाए तो आज की नारी सभी क्षेत्रों में सक्षम है. वह मानसिकता, विचारधारा और उनके प्रति दृष्टिकोण में बदलाव चाहती हैं.

यहां यह कहना भी गलत नहीं होगा कि आज भी प्रत्येक स्थान पर, कार्यक्षेत्रों में सभी मानक या मापदंड आदिकाल से पुरुषों द्वारा निर्धारित व उन्हीं के हिसाब से चले आ रहे हैं. जब संविधान का संशोधन हो सकता है, विद्यालयों के पाठ्यक्रम में संशोधन किया जा सकता है तो आज के परिदृश्य में इन पुराने/प्राचीन मापदंडों में भी सुधार की आवश्यकता को अनदेखा नहीं किया जा सकता.

सैन्य बलों में स्थायी कमीशन को लेकर महिला अधिकारियों का संघर्ष और सर्वोच्च न्यायालय का इसके पक्ष में निर्णय देना इस भेदभावपूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध एक ऐतिहासिक कदम माना जाएगा. इसी प्रकार के उपांतरणों की आवश्यकता हर क्षेत्र में है.

भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में पुरुष आधिपत्य वाले कॉर्पोरेट परिदृश्य में पारंपरिक विचारधारा का आज भी प्रचलन है जिनकी वजह से महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

भारतीय समाज की जड़ता यह मान कर चलती है कि सामाजिक नैतिकता और मर्यादा को निभाने की ज़िम्मेदारी केवल स्त्रियों की है और इस मानसिकता को सर्वसम्मत सांस्कृतिक स्वीकृति भी प्राप्त है.

विवाह संस्था आज भी पुरुष वर्चस्ववादी है तथा इसमें स्त्री के प्रति आज भी बराबरी की भावना की कमी दिखाई देती है. नई स्त्री चाहती है कि उसके संघर्षों को समर्थन प्राप्त हो.

हमारे समाज में मातृत्व को भी इतना महिमा मंडित करके बताया गया है कि उसकी गरिमा के तले स्त्री का अस्तित्व ही विलीन हो जाए. नयी स्त्री बेशक ही मातृत्व को अपना नया जन्म तथा अपना गौरव समझती है परंतु वह यह भी जानती है कि केवल यही उसकी पहचान नहीं है.

एक स्त्री, स्त्री ही है, नई हो या पुरानी, आज भी घर की चौखट के भीतर कदम रखते ही एक मां, पत्नी और अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों का एहसास उसके हृदय से पृथक नहीं है. आज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नई स्त्री जो आधुनिक वस्त्रों में मेंट्रों और बसों में निर्भीक होकर सफर करती है, जो कि हर तरह के कार्य को करने में स्वयं को सक्षम मानती है और अपने बुद्धि और विवेक से पुरुषों की भीड़ में जहां अपना लोहा मनवाती है, वहीं नई स्त्री बड़े बुजुर्गों के सम्मुख सर पर पल्लू रखकर उनका सम्मान भी करती है. तीज त्यौहारों में वही स्त्री अनोखे, विस्मृत पकवान भी बनाती है जो उसने अपनी मां से सीखे थे.

नयी स्त्री अपनी उत्सुक आँखों से आगे की ओर अपनी जगह ढूंढ रही है. ऐसे में, समाज की बूढ़ी जर्जर व्यवस्था क्यूँ बार-बार उसे पीछे मुड़ कर देखने को मजबूर करती है?

नयी स्त्री ने अपनी अस्मिता और क्षमता की पहचान कर ली है. संस्कृति के नाम पर वह स्वामित्व बर्दाश्त नहीं करेगी. वह कतई कोई पशु नहीं है जो प्राचीन तौर तरीकों के ढर्रे पर किसी को दान में दे दी जाए.

नई स्त्री दासी नहीं है. वह संगिनी व कॉमरेड है, वह किसी के अधीन हो कर क्यूँ रहे? सदियों से कभी धर्म के नाम पर, कभी संस्कृति के नाम पर जो शोषण होता चला आ रहा है, वह इसे क्यूँ सहन करे?

यह सोचनीय विषय है कि इस बदलती स्त्री के लिए क्या आधुनिक व्यवस्था सहूलियत पूर्ण है? क्या उसका मार्ग जितना नज़र आता है उतना सुगम है? अपने सभी उत्तरदायित्वों के निर्वाह के लिए क्या, इस व्यवस्था में कुछ सुधार लाए जा सकते हैं? क्या हम अपनी मानसिकता में इतना बड़ा बदलाव ला पाएंगे?

कहीं ऐसा न हो कि स्वयं को सिद्ध करने की इस होड़ में उसके हाथों से संस्कृति की धरोहर छूट जाए.

अमृता लाला
क्षे.का.,संबलपुर

भारत की भाषाई एकता की परम्परा

निश्चित ही भारत अपनी भाषिक और सामाजिक संरचना के इतिहास और भूगोल के कारण भाषा और समाज के अध्येताओं के लिए अध्ययन का एक समस्यामूलक, किंतु रोचक विषय बना हुआ है. संसार में किसी दूसरे इतने विशाल और प्राचीन (जिसकी सांस्कृतिक परम्परा अक्षुण्ण हो) और वैविध्यपूर्ण राष्ट्र के न होने के कारण, वह अनेक बार अनेक भ्रांत और भ्रामक धारणाओं का शिकार होता रहा है. इसी का परिणाम है कि भारत में बोली जाने वाली बोलियों, उपभाषाओं और भाषाओं तथा उनके बोलने वाले समुदायों की विविधता तथा संख्या को देखते हुए उसे एक सामाजिक भाषाई विग्रह (सोशियो-लिग्विंस्टिक ज्वाइंट) की संज्ञा दी गयी है.

यद्यपि भारत में प्राचीनतम भाषिक अभिलेख प्राचीन भारतीय आर्यभाषा 'छंदस' या वैदिक संस्कृत में वैदिक वाङ्मय के रूप में उपलब्ध हैं, परंतु विद्वानों की धारणा है कि भारत में आर्यों के आगमन से पूर्व आग्नेय, द्रविड़ और भाट-चीनी परिवारों के लोग बसे हुए थे. कुछ विद्वानों के अनुसार भारत में सर्वाधिक प्राचीन जाति नीग्रो या हब्शी है, परंतु अब वह जाति भारत से पूर्णतः विलुप्त हो चुकी है. हां ! अपवाद रूप में अब भी अंडमान द्वीप समूह में इस जाति के कुछ अवशेष अवश्य मिल जाते हैं. कुछ विद्वानों के अनुसार अंडमानी भाषा का संबंध इसी जाति या परिवार के साथ है.

नीग्रो जाति के बाद जिस जाति ने भारत में प्रवेश किया, वह है आग्नेय जाति, जिसे प्राचीन काल में निषाद तथा आजकल कोल और मुंडा जाति कहा जाता है. यद्यपि ये लोग पश्चिमी दिशा से ही भारत आए थे, परंतु संप्रति ये लोग मुख्य रूप से बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, मध्यप्रदेश तथा खासी पहाड़ियों के कुछ क्षेत्रों में ही पाये जाते हैं. 1967 की जनगणना के अनुसार इस भाषा परिवार की 65 बोलियां समूचे देश की जनसंख्या के लगभग 1.5 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती है. संथाली, मुंडारी, हो, भूमिज, कोरकू, खारिया, सौरा, ख़ासी तथा नीकोबारी इस भाषा परिवार की प्रमुख भाषाएं हैं, तथा इनमें से नीकोबारी, ख़ासी तथा संथाली भाषाओं को पढ़ा लिखा भी जाता है.

कोल मुंडा जाति के पश्चात् द्रविड़ लोग भारत आए. विद्वानों की मान्यता है कि द्रविड़ जाति भी पश्चिम से आई थी तथा आर्यों के आने के समय समूचे पश्चिमोत्तर भारत में बसी हुई थी. 1961 की जनगणना के अनुसार इस समय द्रविड़ परिवार की 153 बोलियां समूचे भारत में कुल जनसंख्या के 24.47 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती हैं.

द्रविड़ भाषाओं को निम्नलिखित तीन भौगोलिक भागों में बांटा जा सकता है:

1-उत्तरी द्रविड़ भाषा -जैसे, ओरांव, मालतो आदि.

2-मध्य देशीय द्रविड़ भाषाएं-जैसे कुई, खोंद आदि.

3-दक्षिण देशीय द्रविड़ भाषाएं-जैसे तमिल, तेलुग, कन्नड़, मलयालम आदि.

द्रविड़ परिवार की चार साहित्यिक भाषाएं तमिल, कन्नड़, तेलुगु और मलयालम भारतीय संविधान में परिगणित हैं तथा दक्षिण भारत के चारों राज्यों क्रमशः तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश तथा केरल में राजभाषा हैं. ये चारों भाषाएं द्रविड़ भाषाभाषी जन समुदाय के 95.56 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती है.

भारत में आर्यों के आगमन के पूर्व ही उत्तर तथा पूर्वोत्तर दिशाओं से भोट चीनी परिवार के लोग हिमालय की घाटियों में आकर बस चुके थे, जिन्हें प्राचीन काल में किरात कहा जाता था. इस परिवार की भाषाएं पश्चिमोत्तर में कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र से लेकर पूर्व में दक्षिण-पूर्वी असम तक बोली जाती है.

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारत में आर्यों के आने से पहले द्रविड़ या दस्यु, निषाद या कोल मुंडा, किरात या भोट चीनी जातियों के लोग बसे हुए थे. संभवतः जातियों के परस्पर संसर्ग से इनकी भाषाओं पर एक दूसरे का प्रभाव पड़ने लगा था. परंतु जब आर्यजन भारत में आए और केंद्रीय सत्ता के रूप से स्थापित हो गए तो उन्होंने न केवल सभी पूर्ववर्ती सांस्कृतिक तत्वों को एकसूत्रता में बांधा, वरन् एक अखिल भारतीय संस्कृति को जन्म भी दिया.

विद्वानों की मान्यता है कि भारतीय जनमानस और जनसंस्कृति को सामासिक रूप में विकसित करने में प्राचीन आर्य भाषा संस्कृत का जो योगदान रहा है वह निश्चित ही अद्वितीय है. 1961 की जनगणना के अनुसार इस समय समूचे देश में आर्य परिवार की 574 मातृभाषाएं कुल जनसंख्या के 75.30 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती हैं.

अर्थात् भारत आर्यो के आगमन से पहले ही एक बहुभाषी तथा बहुजातीय देश था, जिसे आर्यों नें अपनी सशक्त भाषा और श्रेष्ठ संगठन शक्ति के आधार पर एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में परिवर्तित कर दिया.

आर्यजन भारत में एक ही समय और एक ही दल के रूप में नहीं आए बल्कि वे काफ़ी

समय तक विभिन्न दलों में विभिन्न भागों से भारत में आते रहे तथा बसते रहे. जब समाज में स्थायित्व आने लगा और विभिन्न आर्य-अनार्य भाषाभाषी जातियां साथ साथ और पास पास रहने लगीं तो न केवल परस्पर संपर्क में आने वाली भाषाओं तथा उनके बोलने वाले समाजों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान की परंपरा प्रारंभ हुई.

उत्तर वैदिक काल में आर्य संस्कृति जैसे-जैसे पूर्व और दक्षिण भारत में फैलती गई, वैसे-वैसे उनकी मूलतः साहित्यिक और परिणामतः सांस्कृतिक भाषा संस्कृत भी चारों ओर फैलती गई. संस्कृत अन्य भाषाओं के सम्पर्क से विकसित होकर साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी समृद्ध हुई और आर्य संस्कृति के प्रसार के साथ-साथ संस्कृत एक अखिल भारतीय भाषा के रूप में स्थापित हुई. उल्लेखनीय है कि भाषिक और सामाजिक संपर्क की इस स्थिति में केवल संस्कृत भाषा ही अन्य भाषाओं से प्रभावित नहीं हुई वरन् उसने अपने सम्पर्क में आने वाली सभी आर्य और अनार्य भाषाओं को भी प्रभावित किया. इस प्रकार भारत की सभी भाषाओं में एकात्मकता का शिलान्यास संस्कृत ने किया. भारत एक ऐसा भाषिक क्षेत्र बन गया है जहां विभिन्न परिवारों की भाषाएं बोली जाती हैं.

वर्तमान में इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वैदिक शिक्षा व्यवस्था में एकमात्र संस्कृत को अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक कारणों से केंद्रीय भाषा के रूप में व्यापक स्तर पर स्वीकृत कर लिया गया था.

भारतीय भाषाओं के इतिहास में प्राचीन भारतीय आर्य भाषा संस्कृत के बाद जिन दूसरी अखिल भारतीय भाषाओं का उल्लेख हमें मिलता है तथा जिनका साहित्य आज उपलब्ध है, वे हैं-पाली-बौद्धों की धर्म भाषा तथा अर्ध मागधी-जैनों की धर्म भाषा!

महावीर और गौतम बुद्ध के समय से कुछ पूर्व ही प्राचीन वैदिक परंपरा के विरोध में एक नवीन जनक्रांति का सूत्रपात हो चुका था, जिनका मूल स्वर ब्राह्मणवाद, यज्ञ आदि से संबंधित कर्मकांड का विरोधी था. संस्कृत मूलतः इन्हीं से जुड़ी हुई थी, अतः प्रारंभ में जैनों और बौद्धों ने संस्कृत का भी विरोध किया. इसलिए संस्कृत के विरोध में जैनों द्वारा अर्धमागधी को बौद्धों द्वारा पाली को धर्मप्रचार के लिए स्वीकृत किया गया.

यहां यह उल्लेखनीय है कि पाली, अर्धमागधी तथा शौरसेनी आदि शास्त्रीय प्राकृतों को कुछ विद्वानों ने आंचलिक या क्षेत्रीय भाषाओं के रूप में स्वीकृत किया है. परंतु इस बात को मानने के अधिक प्रमाण हैं कि ये सभी प्राकृत मध्यदेशीय बोली पर आधारित मूल प्राकृत के विविध रूप हैं, वस्तुस्थिति जो भी हो, इन

प्राकृत में हमें जो भी साहित्य उपलब्ध होता है उसके आधार पर इन्हें अखिल भारतीय साहित्यिक भाषा ही कहा जा सकता है, तमिल के समान साहित्यिक भाषा नहीं. 10वीं -11वीं शताब्दी तक समूचे देश में कहीं भी क्षेत्रीय भाषिक या साहित्यिक अस्मिता का कोई प्रमाण नहीं मिलता, जबकि यह सत्य है कि इतने विशाल देश में तब भी विविध भाषा परिवारों की अनेकानेक भाषाएं बोलचाल की भाषा के रूप में प्रचलित अवश्य रहीं होंगी.

यहां यह उल्लेखनीय है कि 600 ई.पू. के आस-पास ब्राह्मणवाद और संस्कृत के विरोध का सूत्रपात, ईसवी सन प्रारंभ होते-होते कुछ कमज़ोर होने लगा था. गुप्तकाल के आते-आते पुनः संस्कृत का प्रभाव बढ़ने लगा था. गुप्तकाल में यद्यपि अर्धमागधी, पाली तथा अन्य शास्त्रीय प्राकृतों के अध्ययन की परंपरा अक्षुण्ण रही, परंतु भारत में जैन और बौद्ध धर्मों के प्रभाव के ह्रास के साथ संस्कृत पुनः शिक्षा, प्रशासन, साहित्य और शास्त्र की प्रमुखतम भाषा के रूप में उभर कर सामने आने लगी थी. आज हमें भारत की सभी भाषाओं में संस्कृत के तद्भव और तत्सम शब्द प्रचुर मात्रा में मिलते हैं. उस समय संस्कृत का प्रचार इतना व्यापक तथा प्रभाव इतना गहरा था कि उस समय की एक मात्र क्षेत्रीय साहित्यिक भाषा तमिल में भी हमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग मिलता है. इस प्रकार कहा जा सकता है कि मुसलमानों के भारत में आने से पूर्व तक भारत में संस्कृत ही समूचे ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, संस्कृति और प्रशासन की अखिल भारतीय भाषा थी. इस समय सीमा में भारत में और भी भाषाओं का संस्कार हुआ जिनमें साहित्य-सृजन की परंपरा का सूत्रपात हुआ.

इस प्रकार 10वीं और 11वीं सदी तक समूचे भारत में संस्कृत, पाली, अर्धमागधी, प्राकृत तथा अपभ्रंश के रूप में अखिल भारतीय भाषाओं की ही परंपरा मिलती है. हां, अपवाद रूप में ईसवी पूर्व पहली-दूसरी शताब्दी से क्षेत्रीय साहित्यिक भाषा तमिल की परंपरा भी मिलती है. परंतु तमिल क्षेत्र में भी संस्कृत ही प्रधान भाषा थी, क्योंकि वही उच्च शिक्षा प्रशासन तथा धार्मिक एवं अन्य सांस्कृतिक उपक्रमों की भी सामान्य भाषा थी. इस समय के तमिल प्रदेश के संस्कृत में लिखित जो अनेकानेक शिलालेख साहित्यिक और शास्त्रीय ग्रंथ मिलते हैं, वे सभी इसी ओर इंगित करते हैं.

यद्यपि आर्यों के पश्चात् और मुसलमानों के पूर्व भारत में अनेक जातियाँ आईं, वे सभी भारतीय समाज और संस्कृति में धीरे-धीरे घुल मिल गईं. परंतु 10वीं से 15वीं शताब्दी के बीच पश्चिमी एशिया के अनेक देशों से जो लोग भारत में आए, उन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति में अभूतपूर्व परिवर्तन किये.

इस कालावधि में केवल मुसलमान शासक और उनकी सेनाएं ही भारत में नहीं आईं वरन् उनके साथ-साथ या आगे-पीछे व्यापारी, कलाकार, विद्वान, कवि, साधु आदि अनेक प्रकार के उद्यमी और कर्मीजन भी थे. वस्तुतः भारतीय समाज और संस्कृत के रूपांतरण में ये उद्यमी और कर्मीजन ही मुख्य थे, न कि मुसलमान शासक.

मुसलमानों के भारत में आने के बाद जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना घटित हुई, वह थी अरबी और फारसी के रूप में दो विदेशी शासकीय भाषाओं का भारत में प्रचार और प्रसार, परंतु बाद में राजभाषा के रूप में पहले अरबी फिर फारसी का ही सभी मुसलमान शासकों ने प्रयोग किया तथा मुग़ल साम्राज्य के बाद उर्दू को भी कहीं-कहीं राजकाज के लिए स्वीकार किया गया. अंग्रेजों के भारत में आने के समय भारत में मुसलमानों द्वारा शासित प्रदेशों में उर्दू तथा हिन्दू शासित प्रदेशों में हिन्दी तथा अन्य आधुनिक भाषाओं का प्रयोग राजकाज में होता था. परंतु अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार के साथ सर्वत्र अंग्रेजी का प्रयोग होने लगा जो अभी भी चल रहा है. इस प्रकार मध्य काल में आई दो विदेशी किंतु अखिल भारतीय भाषाओं की श्रृंखला में अंग्रेजी जुड़ जाती है. अरबी और फारसी के भारत में आ जाने के बाद संस्कृत के एकछत्र राज्य को ऐसा धक्का लगा कि वह फिर अपने महत्व को हमेशा के लिए खो बैठी.

इसी दौरान बहुत सी आधुनिक भारतीय भाषाओं में से कुछ का क्षेत्रीय भाषाओं के रूप में साहित्यिक संस्कार किया गया है तथा अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन जैसे सामाजिक और राजनीतिक कारणों के परिणामस्वरूप इन भाषाओं में न केवल साहित्य सृजन की परंपरा का सूत्रपात हुआ वरन् इन्हें प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के रूप में भी स्वीकार किया जाने लगा है.

कुलदीप कुमार
क्षे.का., कानपुर

लोक संगीत एवं तीज त्योहार की परम्पराएँ

लोक संगीत की सबसे सार्थक व्याख्या यही हो सकती है कि यह लोक या लोग या जनमानस का संगीत है. लोक द्वारा सृजित, लोक द्वारा रक्षित, लोकरंजन के लिए गाया जाने वाला संगीत ही लोक संगीत होता है. लोक मानस की किसी भी अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए स्वर, ताल, नृत्य के आश्रय से ही लोक संगीत का जन्म होता है. लोक संगीत की महिमा बताते हुए कहा गया है कि मनुष्य नौ प्रकार के रसों से प्रभावित होकर जब स्वाभाविक रूप से गाकर, बजाकर अथवा नाचकर अपने भावों को प्रकट करता है, तो उसे लोक संगीत कहते है. लोक संगीत में प्रेम, ईर्ष्या, खुशी, उल्लास, तड़पन, सिरहन आदि सभी भावनाएँ झलकती है. लोक संगीत के माध्यम से आदि मानव की पौराणिक , एतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अवस्था का मूल्यांकन किया जा सकता है. लोक संगीत के माध्यम से आदि मानव के रहन-सहन, खान-पान, बोल-चाल, भाषा इत्यादि का चित्रण मिलता है. इसके अतिरिक्त प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक मानव जीवन में हुई प्रगति का मूल्यांकन मिलता है. लोक संगीत किसी प्रकार के कठोर नियमों को नहीं स्वीकारता. यह पूर्ण रूप से 'स्वान्त: सुखाय' आधारित होता है. लोक संगीत में स्वर शब्दों से पूर्णत: मेल खाते है.

लोक संगीत का मुख्य उद्देश्य जन मनोरंजन है. लोक संगीत में मानव जीवन की उसके उल्लास की, उसकी उमंगों की, उसकी करुणा की, उसके समस्त सुख: दुख की कहानी चित्रित होती है. लोक जीवन में आने वाले प्रत्येक शुभ अवसर, उत्सव, त्योहार आदि में लोक संगीत का मुख्य स्थान रहता है.

लोक संगीत द्वारा तीज त्योहार की परंपरा

महालक्ष्मी पूजन (दिवाली) : यह एक ग्रामीण पर्व है, जिसमे दीपावली पर मतीरे से महालक्ष्मी का पूजन किया जाता है. किसान इस दिन पूजा के लिए खास दीपक बनाते है जिसे हिंडोला कहते हैं, पूजा के लिए एक बड़ा मतीरा लेते हैं और मतीरे के ऊपरी भाग में छेद करके इसका गूदा एवं बीज निकाल लेते हैं. एक मिट्टी के दिये में तेल और रुई लगाकर इसके अंदर रख देते हैं. फिर इसे लेकर आस पड़ोस, पशुओं के बाड़े और खेतों में लेकर जाते हैं और लोकगीत गाते हैं-

दिवाली रा दीया मीठा / कचर, बोर, मतीरा मीठा : (इसका अर्थ है कि जब दिवाली का दिया जलाते है तो काचर, बोर और मतीरा मीठा आता है)

इसके बाद इस मतीरे को संभाल के रख लिया जाता है, पशु यदि खुरड नामक बीमारी से ग्रस्त हो जाएँ तो इसी सूखे मतीरे के टुकड़े पशु को खिलाये जाते हैं. इस मतीरे को आने वाले त्योहार होली तक सुरक्षित रखा जाता है होलिका दहन के समय होलिका की झलक में से इसे हिंडोले देकर निकालते हैं फिर धुलेंडी के दिन सांयकाल में इसका पूजन करके इसके बीजों को अपने खेत में चींटियों

के बिल के ऊपर डाल देते हैं जिससे चींटियाँ उन्हें खाने के रूप में ग्रहण कर सकें.

रसिया गीत, उत्तरप्रदेश : बृज जो भगवान की आदिकाल से ही मनोहरी लीलाओं की पवित्र भूमि है, रसिया गीत गायन की समृद्ध परंपरा के लिए प्रसिद्ध है. यह किसी विशेष त्योहार तक सीमित नहीं है, बल्कि लोगों के दैनिक जीवन और दिन प्रतिदिन के कामकाज में भी रचा बसा है. रसिया शब्द रास शब्द से ही लिया गया है क्योंकि रसिया का अर्थ रास अथवा भावावेश से है.

पंखिड़ा, राजस्थान : यह गीत खेतों में काम करते समय राजस्थान के काश्तकारों द्वारा गाया जाता है. काश्तकार मंजीरा बजाकर गाते और बात करते हैं. पंखिड़ा शब्द का शाब्दिक अर्थ प्रेम है.

लोटिया, राजस्थान : लोटिया त्योहार चैत्र मास के दौरान मनाया जाता है, स्त्रियाँ तालाबों और कुओं से पानी भरे लौटेमर कथा के रूप में निष्पादित किया जाता है. मुख्य गायक पूरे निष्पादन के दौरान सतत रूप से बैठा रहता है और सशक्त गायन व सांकेतिक भंगिमाओं के साथ एक-के-बाद एक सभी चरित्रों की भाव-भंगिमाओं का अभिनय करता है.

बारहमास, कुमायूं : कुमाऊँ के इस आंचलिक संगीत में वर्ष के बारह महीनों का वर्णन प्रत्येक माह की विशेषताओं के साथ किया जाता है. एक गीत में घुघुती चिड़िया चैत मास की शुरुआत का संकेत देती है. एक लड़की अपने ससुराल में चिड़िया से न बोलने के लिए कहती है क्योंकि वह अपनी माँ की याद से दुखी है, दुख महसूस कर रही है.

मंडोक, गोवा : गोवाई प्रादेशिक संगीत, भारतीय उपमहाद्वीप के पारंपरिक संगीत का भंडार है. मंडो गोवाई संगीत की परिशुद्ध रचना एक धीमी लय है और पुर्तगाली शासन के दौरान प्रेम, दुख और गोवा में सामाजिक अन्याय और राजनीतिक विरोध से संबन्धित एक छंद बद्ध रचना है.

आल्हान, उत्तर प्रदेश : बुंदेलखंड की एक विशिष्ट गाथा, शैली आल्हा में देखने को मिलती है जिसमें आल्हा और ऊदल दो बहादुर भाइयों के साहसिक कारनामों का उल्लेख किया जाता है, जिन्होंने महोबा के राजा परमल की सेवा की थी. यह न केवल बुंदेलखंड का एक सर्वाधिक लोकप्रिय संगीत है बल्कि देश में अन्यत्र भी लोकप्रिय है. इसमें समाज में उस समय में विद्यमान नैतिकता, बहादुरी और कुलीनता के उच्च सिद्धांतों पर प्रकाश डाला गया है.

होरी, उत्तर प्रदेश : होरी का इतिहास इसका विकास और परंपरा काफी प्राचीन है. यह राधा कृष्ण के प्रेम प्रसंगों पर आधारित है. होरी गायन मूलत: त्योहार के साथ जुड़ा है. बसंत ऋतु के दौरान भारत में होरी के गीत गाने और होली मनाने की परंपरा प्राचीनकाल से जारी है.

सोहर, उत्तर प्रदेश : सामाजिक समारोह समय-समय पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों को परस्पर जोड़ने का एक महत्वपूर्ण कारक है. उत्तर भारत में परिवार में पुत्र जन्मोत्सव में सोहर गायन की एक उत्साही परंपरा है. इसने मुस्लिम संस्कृति को प्रभावित किया है तथा उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में रहने वाले मुस्लिम परिवार सोहर गीत गाकर ही पैसा कमाते हैं. सोहर गीत निसंदेह दो संस्कृतियों को मिलाने वाले गीत हैं.

छकरी कश्मीर : छकरी एक समूह गीत है जो कश्मीर के लोक संगीत की एक सर्वाधिक लोकप्रिय शैली है. यह नूत (मिट्टी का बर्तन), रबाब, सारंगी और तुंबकनारी (ऊंची गर्दन वाला मिट्टी का बर्तन) के साथ गाया जाता है.

लमन, हिमाचल प्रदेश : लमन में बालिकाओं का एक समूह, एक छंद गाता है और लड़कों का एक समूह गीत के जरिये उत्तर देता है. यह घंटों तक चलता है. यह रुचिकर इसलिए है कि इसमें लड़कियां पहाड़ की चोटी पर गाते हुए शायद ही दूसरी चोटी पर गाने वाले लड़कों का मुख देखती हैं. बीच में पहाड़ होता है जहाँ प्रेम गीत गूँजता है. इनमें से अधिकांश गीत विशेष रूप से कुल्लू घाटी में गाये जाते हैं.

कव्वाली : मूलत: क़व्वालियाँ ईश्वर की प्रशंसा में गाई जाती थी. भारत में कव्वाली का आगमन तेरहवीं शताब्दी के आस-पास फारस से हुआ है और सूफियों ने अपने संदेश का प्रसार करने के लिए अपनी सेवाएँ प्रदान की. सूफी संत तथा एक प्रवर्तक अमीर खुसरो ने कव्वाली के विकास में योगदान किया है. यह संरचना के एक स्वरूप की बजाए गायन की एक विधि है. कव्वाली एकल और समूहिक विधियों का एक मोहक एवं परस्पर बदलता उपयोग है.

टप्पा, पंजाब : टप्पा, पंजाब क्षेत्र में ऊंटों पर सवारी कर विचरने वालों द्वारा प्रेरित अर्ध-शास्त्रीय कंठगीत का स्वरूप है. टप्पा पंजाबी और पश्तों भाषा में रागों में गया जाता है जिसका सामान्यत: उपयोग अर्ध शास्त्रीय संगीत के लिए किया जाता है. लयबद्ध और द्रुतगीत स्वर के साथ तेजी से ऊपर उठना इसकी विशेषता है.

पोवाड़ा, महाराष्ट्र : पोवाड़ा, महाराष्ट्र की एक पारंपरिक लोक कला शैली है. पोवाड़ा शब्द का अर्थ शानदार शब्दों में एक कहानी का वृतांत है. वृतांत सदैव किसी वीर अथवा घटना अथवा स्थान की प्रशंसा में सुनाया जाता है. मुख्य वृतांतकर्ता को शाहीर के नाम से जाना जाता है जो लय बनाए रखने के लिए डफ बजता है. गीत तीव्र होता है और मुख्य गायक द्वारा नियंत्रित होता है जिसका समर्थन मंडली के अन्य सदस्यों द्वारा किया जाता है.

तीज गीत, राजस्थान : तीज, राजस्थान की महिलाओं की बड़ी भागीदारी के साथ मनाई जाती है. यह श्रावण मास के नए चन्द्र अथवा अमावस्या के बाद तीसरे दिन मनाई जाती है. त्योहार के दौरान गए जाने वाले गीतों का विषय शिव और पार्वती का मिलन, मानसून की मनमोहक छटा, हरियाला मौसम, मयूर नृत्य आदि के इर्द-गिर्द होता है.

बुर्राकथा, आंध्र प्रदेश : बुर्राकथा, गाथा के रूप में एक उच्च कोटी की नाटक शैली है. इसमें मुख्य कलाकार द्वारा गाथा वर्णन के दौरान बोतल आकार का एक ड्रम बजाया जाता है.

भूता गीत, केरल : भूता गीत का आधार अंधविश्वास से जुड़ा है. केरल के कुछ समुदाय भूत-प्रेत को भगाने के लिए भूता रिवाज अपनाते है. इस रिवाज के साथ श्रमसाध्य नृत्य का आयोजन किया जाता है तथा इसकी प्रकृति बड़ी तीव्र और भयानक होती है.

दसकठिया, ओडिशा : दसकठिया, ओडिशा में प्रचलित गाथा गायन की एक शैली है. दसकठिया शब्द काठी अथवा राम ताली नामक एक काष्ट से बने संगीत वाद्य से लिया गया नाम है, जिसका उपयोग प्रस्तुतिकरण के दौरान किया जाता है. प्रस्तुतिकरण एक प्रकार की पूजा है तथा भक्त दास की ओर से भेंट है.

बिहू गीत, असम : बिहू गीत अपनी साहित्यिक विषयवस्तु और सांगीतिक विधि दोनों ही दृष्टि से असम की अति विशिष्ट शैली का लोक गीत है. बिहू गीत एक खुशहाल नव वर्ष के लिए शुभकामनाओं का प्रतीक है तथा नृत्य के साथ साथ सुख-समृद्धि हेतु एक प्राचीन उपासना की परंपरा से जुड़ी है. बिहू गायन का समय ही एक ऐसा अवसर है जब विवाह योग्य युवा पुरुष और महिलाएँ अपनी भावनाओं का आदान-प्रदान करते हैं और अपने साथी का चुनाव भी करते हैं.

साना लामोक, मणिपुर : मणिपुर की पहाड़ियाँ और घाटियाँ दोनों ही संगीत और नृत्य की शौकीन है. साना लामोक 'माईबा (पुजारी)' द्वारा राज्याभिषेक समारोह के दौरान गाया जाता है. यह बादशाह का स्वागत करने के लिए भी गाया जाता है. इसे पाखंगबा, प्रधान देवता की आत्मा को जागृत करने के लिए गाया आता है. ऐसा विश्वास है कि यह गीत जादुई शक्तियों से प्रभावी है.

बसंत गीत, गढ़वाल : बसंत ऋतु का स्वागत गढ़वाल में एक अनूठे ढंग से किया जाता है. धरती भांति-भांति के रंगीन फूलों से सजी होती है. बसंत पंचमी के अवसर पर फर्श पर चावल के आटे से रंगोली बनाई जाती है और सुंदर बनाने हेतु गाय के गोबर के साथ हरे जई के बंडल का इस्तेमाल किया जाता है. पेड़ों पर झूले बांधे जाते हैं और लोक गीत गए जाते हैं.

सुकर के बियाह, भोजपुरी गीत : भोजपुरी गीतों में सामान्य लोगों के जीवन का वर्णन किया जाता है. ग्रामीण लोकगीतों में प्रकृति, ग्रहों और नक्षत्रों की अपनी ही व्याख्याएँ हैं. शुक्र और वृहस्पति की कहानी अब भी गाई जाती है-किस प्रकार शुक्र विवाह के आभूषण भूल जाता है और उन्हें लेने के लिए वापस आता है जहां वह अपनी माता को चावल का पानी पीते देखता है जो एक गरीब आदमी का खाना है. अपनी माता से इसके बारे में पूछने पर उसकी माता जवाब देती है कि वह नहीं जानती कि क्या शुक्र की ऐसी पत्नी होगी जो उसे चावल का पानी भी देगी अथवा नहीं. शुक्र अविवाहित रहने का निर्णय लेता है.

धनुष गीत, तमिलनाडु : विल्लु पट्टु तमिलनाडु का एक लोकप्रिय लोक संगीत है. प्रमुख गायक निष्पादनकर्ता की भूमिका भी निभाता है. वह प्रमुख वाद्य बजाता है जो धनुष के आकार का होता है. गीत सैद्धांतिक विषयों पर आधारित होते है और अच्छाई की बुराई पर विजय पर बल दिया जाता है.

उपासना सिरसैया
क्षे.म.प्र.का., भोपाल

भारतीय संस्कृति
का विश्व पर प्रभाव

भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है. इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है. जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र, भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है. अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है. भारत की संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है जिसका सर्वाधिक व्यवस्थित प्रमाण वैदिक युग से प्राप्त होता है. भारतीय विचारकों द्वारा आदि काल से संपूर्ण विश्व को परिवार के रूप में मानकर 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत को अपनाया गया है.

संस्कृति देश तथा समाज का दर्पण होती है किसी भी समाज की संस्कृति ही उसके भूतकाल एवं वर्तमान को दर्शाती है. यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृतियों के समान ही प्राचीन है. कई भारतीय विद्वान तो भारतीय संस्कृति को विश्व की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति मानते हैं. कई बार ये कहा जाता है कि हमारे पुरखों का विश्व के फलां-फलां भाग से सम्पर्क नहीं था अथवा विश्व के उस हिस्से में आबादी न होने या समुद्री अंतर अधिक होने से हम नहीं पहुंच पाए. आधुनिक विज्ञान के कारण अब हमारे इतिहास और पुरातत्व को समझने में आसानी हो गई है. भारतीय संस्कृति के उपलब्ध हो रहे प्रमाणों से इतिहासकार, वैज्ञानिक, पुरातत्वविद् और हर कोई मानता है कि भारतीय संस्कृति की कमतर आंका नहीं जा सकता. भारतीय संस्कृति का प्रसार बहुत विस्तृत है.

भारतीय संस्कृति की विशेषता केवल भारत तक ही सीमित नहीं है. वह सागर तथा हिमालय को पार कर अन्य देशों तक फैली हुई है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव साहित्य का है. भारतीय लोक कथाओं का मुख्य रूप से यूरोप पर अत्यंत गहरा प्रभाव है. पंचतंत्र की कथाएं हों, बुद्ध की जातक कथाएं हों या शंकराचार्य का अद्वैत, सबको वहां के साहित्यकारों ने अपनी भाषा में अनूदित कर यूरोप के प्रत्येक व्यक्ति तक भारतीय संस्कृति को पहुंचाने का प्रयास किया.

भारत विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है तथा भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है. भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचार, तहज़ीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएँ और मूल्य आदि हैं. भारतीय लोग आधुनिकता के इस दौर में भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए रखे हुए हैं.

भारतीय संस्कृति की कुछ अनमोल विशेषताएं इस प्रकार हैं :

सहिष्णुता और अहिंसा: पूरे विश्व में भारत एक ऐसा देश है जिसकी विशेषता इसकी सहिष्णुता रही है. महात्मा गांधी का सत्याग्रह का आंदोलन हो, भारत की परमाणु नीति हो, पंचशील और गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत हों सभी भारत की इस महान सांस्कृतिक परंपरा की पुष्टी करते हैं. स्वामी विवेकानंद ने भी इसे 11 सितंबर 1893 को शिकागो में दिए अपने भाषण में अच्छी तरह दर्शाया था.

पंथनिरपेक्षता – भारत एक पंथनिरपेक्ष देश होने के मामले में सबसे आगे है. पूजा और अपने पंथ के पालन की आज़ादी भारत में विविध संस्कृतियों के सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व की अभिव्यक्ति है. भारत के संविधान में भी पंथनिरपेक्षता का उल्लेख है और संविधान में यह स्वीकार किया गया है कि भारत गणराज्य का कोई पंथ नहीं होगा. यहां किसी धर्म को विशेष स्थान प्राप्त नहीं हैं. मुसीबत के समय सभी धर्म अपने सांस्कृतिक मतभेद होने के बाद भी साथ आते हैं.

सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध: भारत का इतिहास, भाईचारे और सहयोग के उदाहरणों से भरा पड़ा है. इतिहास में विदेशी हमलावरों के कई वार झेलने के बाद भी इसकी संस्कृति और एकता कभी हारी नहीं और हमेशा कायम रही.

भारतीय संस्कृति विश्व भर में अपनी विशेषताओं के कारण, खासकर अपनी पुरातन लोक संस्कृति के लिए जानी पहचानी जाती है. हमारे लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोक संगीत, लोक कलाएं, लोक परंपराएं हमारी अनमोल धरोहर हैं. भारतीय लोक नृत्य में होने वाले जनजीवन का स्वाभाविक चित्रण किसी को भी विस्मित कर देता है. असम के बिहू, बिछुआ, राखल; अरुणाचल के मुखौटा और युद्ध नृत्य; हिमाचल प्रदेश की रासलीला, नौटंकी; बिहार के करमा, जात्रा, सरहुल आदि में उनके लोकजीवन की सजीव झांकी दिखती है. हमारी लोककलाएं अपने में एक इतिहास समाहित किए हैं. यही कारण है कि केवल शास्त्रीयमभारतीय संस्कृति ने हमेशा विश्व को एक परिवार माना है. यहां पर लोगों को मिलजुल कर रहने की आदत सी है. यही बात, औरों से भारतीयों को जुदा करता है. जैसे कि हम सब जानते हैं कि करोना आज विश्व में महामारी के रूप में फैल रहा है, वही भारत एक जुट होकर इस महामारी से लड़ रहा है तथा योग को अपनाने की सलाह दे रहा है. वेदों के अनुसार, भारत में योग की उत्पत्ति वैदिक काल में हुई है. सबसे प्राचीन यौगिक शिक्षाएँ वैदिक योग या प्राचीन योग के नाम से मशहूर हैं और इसे चार वेदों-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में देखा जा सकता है. योग को आज पूरा संसार अपना रहा है. यह भारतीय प्राचीन संस्कृति का एक रूप है.

आज विश्व भर में भारत की संस्कृति का बोलबाला है, भारतीय संस्कृति इतनी धनी है कि उसकी तुलना किसी और संस्कृति से नहीं की जा सकती.

दूसरे देशों ने युद्धों के माध्यम से अन्य देशों को जीता जबकि भारत व्यक्तियों के हृदय के मार्ग से उन देशों में पहुंचा है. प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति ने अन्य देशों के लोगों को आकर्षित किया. वह उनकी आत्मा में रच बस गई.

प्राची गोयल
क्षे.म.प्र.का., अहमदाबाद

भारत की प्रथाएँ एवं परम्पराएँ

प्रथा मानव निर्मित नियमावली है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ती है. ये वे रीतियाँ हैं जो अनेक पीढ़ियों से चलती आती हैं और समाज में अपना अहम स्थान बना लेती है. वास्तव में अनेकों पीढ़ियों के सफल अनुभव का परिणाम होती है प्रथाएँ. प्रथाओं का पालन और संगोपन करने को ही परंपरा कहा जाता है. दुनिया भर में अनेकों समुदाय कुछ विशिष्ट नियमों का अनुपालन करते हैं और ये नियम ही उस समुदाय की परंपरा बन जाता है. कभी-कभी मानव इन प्रथाओं का पालन कानून के समान करता है, क्योंकि उसे सामाजिक बहिष्कार व लोकनिन्दा का भय होता है.

लोग प्रथाओं.को इसलिए मानते हैं कि समाज के अधिकतर लोग उसी रीति के अनुसार बहुत दिनों से कार्य या व्यवहार करते आ रहे हैं. इन्हीं प्रथाओं के कारण नयी बातें करने में लोगों को हिचकिचाहट होती है. वास्तविकता यह हैं कि व्यक्ति का व्यवहार प्रथाओं से प्रभावित होता है.

आईए, हम भारत की कुछ महत्वपूर्ण प्रथाओं पर एक नजर डालें:

दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन करना/बुजुर्गों को झुक कर प्रणाम करना : प्राचीनकाल से भारत में दोनों हाथ जोड़कर 'नमस्ते' कहने का और बुजुर्गों के पैर छूकर आशीर्वाद लेने का प्रचलन रहा है. वैज्ञानिक दृष्टि से ये दोनों मुद्राएँ हमारे आँख, कान और मस्तिष्क के प्रेशर प्वॉइंट्स को उत्तेजित करती है, जो सेहत के लिए अच्छा होता है.

तुलसी और पंचामृत का सेवन : प्रतिदिन तुलसी और पंचामृत का सेवन करना सेहत के लिए फायदेमंद है. प्राचीनकाल से ही भारत के कई घरों के आंगन में तुलसी का पौधा होता था और उसकी हर रोज पूजा करने की प्रथा थी. तुलसी का पौधा औषधीय होता है. इसके सेवन से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है, बीमारियाँ दूर भागती हैं और शारीरिक द्रव्यों का संतुलन बना रहता है. तुलसी के पौधे से मक्खी, मच्छर आदि के आने का खतरा भी कम होता है.

पीपल का सींचना : पीपल का पेड़ सबसे ज्यादा ऑक्सीजन का उत्पादन करता है. जहाँ अन्य पेड़-पौधे रात के समय में कार्बन डाई ऑक्साइड गैस का उत्सर्जन करते हैं, वहीं पीपल का पेड़ रात में अधिक मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ता है. इसी वजह से बड़े-बुजुर्गों ने इसके संरक्षण पर विशेष बल दिया और जल डालने की प्रथा बनाई.

व्रत रखना : भारत में एकादशी, प्रदोष, चतुर्थी, पूर्णिमा, अमावस्या, नवरात्रि आदि अवसरों पर व्रत रखने की प्रथा है. यह माना जाता है कि इन विशेष दिनों में व्यक्ति के शरीर और मन में कुछ बदलाव होते हैं और यदि इन दिनों में व्यक्ति व्रत करें या सिर्फ सात्विक भोजन करे तो उसके स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है.

त्योहार मनाना : भारत में विभिन्न समुदायों के लोग रहते हैं और हर समुदाय के कुछ खास त्योहार होते हैं. हर एक त्योहार की एक विशिष्टता होती है. पूजा पाठ के अलावा त्योहारों में विशिष्ट पकवान और स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जाते हैं. उन विभिन्न व्यंजनों के पीछे भी कुछ वैज्ञानिक कारण होते हैं. ऋतुओं के अनुसार ये व्यंजन बनाए जाते है और उनके सेवन से सेहत अच्छी रहती है.

नृत्य और संगीत कलाएँ : भारत को नृत्य, संगीत व नाट्य कला विरासत में प्राप्त हैं. आज भी हमें अनेक समुदायों के पुराने लोकनृत्य, लोकगीत और लोकनाट्य देखने को मिलते हैं. भरतनाट्यम, कत्थक, ओडिसी, कुचीपुड़ी, मोहिनीअट्टम, कथक्कली, भांगड़ा, लावणी, गरबा इत्यादि भारत की कुछ प्रमुख प्राचीन नृत्य शैलियाँ हैं. इन कलाओं के जरिए लोग एक दूसरे से घुल-मिल जाते हैं और आपसी स्नेह बढ़ता है. इसके अतिरिक्त लोगों को अपनी कला प्रदर्शित करने हेतु प्रोत्साहन भी मिलता है.

भारत में शादीशुदा महिलाएँ पैर में बिछिया पहनती हैं. ऐसा माना जाता है कि बिछिया तंत्रिकाओं पर दबाव डालता है, जिससे प्रजनन प्रणाली और स्वास्थ्य दोनों में संतुलन बना रहता है.

भारत में परंपरा के रूप में आज भी साँप को देवता के रूप में पूजा जाता है.

भारत के कुछ गांवों में यह अवधारणा है कि पशुओं के विवाह से वर्षा देवता खुश होते हैं. असम और महाराष्ट्र में मेंढक की शादी और कर्नाटक में गधों की शादी इसी का उदाहरण हैं.

अच्छी प्रथाओं के साथ समाज में कुछ कुप्रथाओं ने भी जन्म लिया, लेकिन समय के साथ समाज इन कुप्रथाओं पर अंकुश लगाने में भी कामयाब रहा. भारत की कुछ प्रमुख कुप्रथाएं निम्नानुसार है:

दहेज प्रथा : इस प्रथा के अंतर्गत युवती का पिता उसे ससुराल विदा करते समय तोहफे में धन व वस्तुएं देता है. कालांतर में यही धन वैवाहिक संबंध तय करने का माध्यम बन गया. वर पक्ष के लोग धन की मांग करने लगे हैं, जिसके ना मिलने पर स्त्री को मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाने लगा. आज भी भारतीय समाज पूरी तरह से दहेज प्रथा के चंगुल से बाहर नहीं निकल पाया है.

छुआछूत : समाज में प्रचलित रूढ़ियों और कुप्रथाओं के कारण वर्गभेद उत्पन्न होते हैं. यही वर्गभेद बाद में अस्पृश्यता का कारण बनता है. समय परिवर्तन के साथ मनुष्य के विचारों में भी परिवर्तन हुआ, शिक्षा एवं विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति हुई, समाज आर्थिक रूप से विकसित हुआ. सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के साथ अस्पृश्यता का भयानक वृक्ष डगमगाने लगा लेकिन अभी भी पूरी तरह से इसका निर्मूलन नहीं हुआ है.

कन्या भ्रूण हत्या : समाज के कुछ तबकों में बेटियों को जन्म लेते ही मार दिया जाता था. राजस्थान में कुछ समुदाय विशेष में कन्या के जन्म लेते ही उसे अफीम देकर या गला दबाकर मार दिया जाता था. इस कुप्रथा पर रोक लगाने के लिए सरकार ने कई ठोस कदम उठाए. प्री-नेटल डायग्नोस्टिक टेक्निक 'पीएनडीटी' अधिनियम 1996 के तहत जन्म से पूर्व शिशु के लिंग की जांच पर पाबंदी है. इसका उल्लंघन करने वाले को कठिन सजा का प्रावधान किया गया है.

बाल विवाह : बाल विवाह की कुप्रथा को रोकने के लिए इतिहास में कई लोग आगे आये. इनमें सबसे प्रमुख राजाराम मोहन राय व केशवचन्द्र सेन थे, जिन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा बिल पास करवाया जिसे 'स्पेशल मैरिज एक्ट' कहा जाता है. इसके अंतर्गत शादी के लिए लड़कों की उम्र 18 वर्ष एवं लड़कियों की उम्र 14 वर्ष निर्धारित की गयी. फिर भी सुधार न आने पर बाद में 'चाइल्ड मैरिज रिस्ट्रेंट' नामक बिल पास किया गया. इसमें विवाह हेतु लड़कों की उम्र बढ़ाकर 21 वर्ष और लड़कियों की उम्र बढ़ाकर 18 वर्ष कर दी गयी. स्वतंत्र भारत में भी सरकार द्वारा इस प्रथा को रोकने के कई प्रयत्न किये गए.

पर्दा प्रथा : देश के कुछ समुदायों में महिलाओं को पर्दे में रखने का रिवाज है. इस प्रथा के कारण सैकड़ों महिलाएं अपनी योग्यता, क्षमता और खुद के वजूद को भी खो देती हैं. प्रतिभा संपन्न होने के बावजूद नारी अपने परिवार व अपने हित के लिए कुछ भी नहीं कर पाती है. पर्दे में रखकर उसे कमजोर होने का अहसास कराया जाता है. सामाजिक विकास के साथ कुछ समुदायों में पर्दा प्रथा का निर्मूलन अवश्य हुआ है, लेकिन पिछड़े एवं दुर्गम स्थानों पर अभी भी पर्दा प्रथा प्रचलित है.

बंधुआ मजदूर प्रथा : बंधुआ मजदूरी प्रथा महाजन अथवा उच्च वर्ग के लोगों द्वारा साधनहीन लोगों को उधार दी गई राशि के बदले या ब्याज की राशि के रूप में उस व्यक्ति या उसके परिवार के किसी सदस्य को अपने यहाँ घरेलू नौकर के रूप मे रख लेना होता है. सरकार के अनेक प्रयासों के बाद भी भारत के कई भागों में आज भी यह प्रथा जीवित है.

प्राचीन देवदासी प्रणाली, जहां युवा लड़कियों को ईश्वर के नाम पर स्थानीय मंदिरों में समर्पित किया जाता था और उनके कौमार्य की नीलामी की जाती थी. 1982 में कर्नाटक में इस प्रथा को अवैध घोषित कर दिया गया था, लेकिन अभी भी दक्षिण भारत के कुछ राज्यों में यह प्रथा जारी है.

कुप्रथाएँ किसी भी सभ्य समाज पर बदनुमा दाग होती हैं. इसलिए कुप्रथाओं के पूर्ण निर्मूलन पर विशेष ध्यान देना चाहिए. वही अच्छी प्रथाएं देश के लिए गौरव की बात होती हैं. इसलिए हमें अपने रीति-रिवाजों और परम्पराओं का वैज्ञानिक महत्व जान, उसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास करते रहना चाहिए.

पूनम टी. येंगड़े
क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु

विश्व पटल पर भारत की खासियत- विविधता में एकता

'देश का मतलब मिट्टी नहीं
देश का मतलब लोग होते हैं।'

महाकवि श्री गुरजाड़ा अप्पाराव की बातों के अनुसार भारत को छोड़कर इस दुनिया में और कोई भी देश इसकी मिसाल नहीं है.

भौगोलिक दृष्टि से भारत एक विशाल देश है जो विविधताओं से भरा पड़ा है. अपनी विविध भौतिक विशेषताओं एवं सामाजिक परिस्थितियों के कारण भारत एक छोटे विश्व के समान है लेकिन अधिकांश विचारक सांस्कृतिक विविधता को संदेह की दृष्टि से देखते है. ये लोग भारतीयों की मूल एकता को देख नहीं पाते हैं जबकि यही भिन्नता भारत को एक सूत्र में पिरोती हैं एवं यही भारत को और खास बनाती हैं.

भारत में करीब-करीब एक सौ पचास अलग -अलग बोलियाँ बोली जाती है तथा देश में 15 राजभाषाएँ है लेकिन हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो कन्याकुमारी से कश्मीर तक सभी जगहों पर अलग-अलग भाषाएँ बोले जाने पर भी सभी को अपने में समाये हुए है. कुछ महान विशेषज्ञों के अनुसार भारत में तरह-तरह की भौगोलिक और सामाजिक परिस्थितियों में घटित विविध जीवन विधानों, भिन्न-भिन्न धर्मों, हरेक भाषा में अपना सौन्दर्य सिमटी हुई विभिन्न भाषाएं, इतिहास के असमान कोने प्रतिबिम्बित करते हुए आचार, व्यवहार एवं रीति रिवाज, स्थानीय परंपरा,

रहन-सहन, रस्म-रिवाज, वेष-भूषा होने पर भी एक संस्कृति दूसरे में रमी हुयी, कश्मीर से कन्याकुमारी तक के सूत्र में बंधी हुअी है जो अन्य किसी भी देश में दिखाई नहीं देती है.

सुंदर कश्मीर में बर्फ के पर्वतों, प्रचंड गर्म हवाओं की वजह से अग्नि कुंड की याद दिलाते हुए राजस्थान के रेगिस्तान, नारियल के बगीचों से भरे केरल के समुद्र तट, उन्नत दख्खन की पठार भूमि, उत्तर प्रदेश के सुविशाल मैदान, हरे भरे खेतों से भरा पंजाब, जंगली जानवरों का निवास असम के वन, एक स्थान की दूसरे स्थान से अलग तापमान की परिस्थितियाँ, जीवन विधानों में सम्मिलित होकर एक-दूसरे को समर्थन देते हुए एक ही मंजिल की ओर बढ़ते चलना भारत वर्ष में ही संभव होता है. इतनी विविध परिस्थितियों से प्रभावित लोगों की जीवन शैली से उत्पन्न हस्त कौशल एवं कारीगरी में भी ढेर सारी विविधता पायी जाती है. कांचीपुरम जरी, पोचमपल्ली पट्टु साड़ियाँ, बंगाल के जूट के कपड़े, दार्जिलिंग की चाय, कोंडापल्ली के खिलौने, तंजावूर के चित्र, कोल्हापुर की चप्पलें, कलकत्ता का रसगुल्ला, बनारस का पान, केरल के आयुर्वेद चिकित्सालय जैसी अद्भुत एवं विशेष संस्कृति को संजोता हुआ भारत, विदेशी सैलानियों को भी विशेष रुप से आकृष्ट कर रहा है.

भारत के अलग-अलग धर्म और जाति के लोग, अलग-अलग समुदाय के लोग, जिनकी रहने, पढ़ने, पूजा करने तथा अन्य सभी तरह की कार्य संस्कृति भी अलग-अलग होने के बावजूद विचारधारा एक है. सभी भारतीय एक सूत्र में बंधे हुये हैं, जिनके कण-कण में जन-गण-मन का पाठ समाया हुआ है और यही भारत देश की सबसे बड़ी संपत्ति है.

सिक्के का दूसरा पहलू यह है, हजारों सालों के इतिहास, सभ्यता से संपन्न भारत देश में खगोलविद्या, वैद्य, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र में विद्वानों ने कई परिशोधन एवं आविष्कार किए हैं जबकि शेष संसार तब सभ्यता की प्रारम्भिक अवस्था ही महसूस कर रहा था. उदाहरण के लिए, आज कल बायो तकनीकी क्षेत्र में नए परिशोधन अर्थात् एम्ब्र्योनिक स्टेम सेल तकनीक ईजाद हुई है. (अंड में कई कण विभाजित कर ज्यादा अंड को विकास करने की प्रक्रिया) यह क्लोनिंग के नजदीक होने वाली प्रक्रिया है. विद्वानों का कहना है कि महाभारत में कौरवों के जन्म के समय में ही महर्षि व्यास ने इस तरीके को अपनाया था. खगोल शास्त्र विज्ञान की चर्चा की जाए तो 16 वीं शताब्दी में कोपेर्निकस, गैलीलियो आदि विद्वानों ने सूर्य केंद्रक सिद्धांन्त को अपनाया. लेकिन हजारों वर्ष पूर्व निर्मित भारतीय नवग्रह मंदिर में सूर्य को बीच में तथा चारों ओर ग्रह होने की संरचना को देखा जा सकता है. हमारे देश में अनपढ़ लोगों को भी यह ज्ञात है कि सूर्य के चारों ओर ग्रह घूमते रहते हैं. विद्वानों का यह भी कहना है कि नटराज की प्रतिमा जो प्रलय का तांडव करती है वो अणु विस्फोट को दर्शाती है.

प्राचीन भारतीय विद्वानों, जिन्हें हम महर्षि कहते थे, वे अपने शास्त्र, विज्ञान को सामान्य लोगों को भी उपलब्ध कराने के लिए निरंतर अपने परिशोधनों द्वारा आविष्कृत विषयों को उस समय के मंदिर निर्माण में, देवताओं की प्रतिमाओं के रूप में स्थान दिया करते थे. देखा जाए तो अविदित पुरातन भारतीय विज्ञान के हमारे दैनंदिन जीवन का साधारण रूप से हिस्सा बन जाने के हजारों उदाहरण हैं. इस संदर्भ में हम कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर जी का कथन याद कर सकते हैं कि भारत देश में ज्यादातर पढ़े-लिखे लोग न होने पर भी लगभग सभी लोग पढ़े-लिखे ही हैं.

भारत देश की संस्कृति में अंबर को छूते हिमालय, नदी, पहाड़, झर-झर करते झरने, घने जंगल, रेगिस्तान, समुद्र का ज्वार-भाटा, शांति से भरी झीलें, जल-प्रपात की गर्जना, खूबसूरत हर-भरे खेत, चाँद जैसे चमकते समुंद्र के तट, भाग दौड़ में व्यस्त महानगर, बाहरी प्रदूषण से अछूते गाँव, शोभायमान शिल्प कला से संपन्न मंदिर, प्राचीन इतिहास के गवाह बनकर खड़े किले, पवित्र तीर्थ जिसमें कई आध्यात्मिक रहस्य छिपे हुए हैं, भौतिक संसार को दर्शाते सुविधाओं के निवास बने राज महल, युगों से समय के गर्भ से प्राप्त पुराण चर्चाएं, वर्तमान सांसारिक सजीव वास्तविकताएं अपने में समाहित है.

भारत देश सदियों से स्मारकों एवं सदियों के चरित्र समेटे हुए मंदिरों का घर है. हमारे प्राचीन मंदिरों में इतिहास के कई पन्ने निहित हैं. वर्तमान का जिक्र करने के लिए या भविष्य की सीढ़ी रचाने के लिए पहले हमें अपने इतिहास को जानना चाहिए. उस जमाने की शासन व्यवस्था का अध्ययन किया जाएं तो उस समय की विशेषताओं की जानकारी के साथ ढेर सारी नई बातों का परिचय मिलता है. हमारे प्राचीन स्मारकों की निर्माण शैली में कई शास्त्र और विज्ञान की बातें समाहित हैं. हमारी जो विरासतें दुनिया के लिए मिसाल बनी हुई हैं वे धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही हैं. कलाओं, संस्कृति को अधिक महत्व देकर हमारे प्राचीन पूर्वजों ने हिमालय से कन्याकुमारी तक कई अद्भुत निर्माण किए थे.

हमारी सांस्कृतिक एकता की महानता के कारण ही आज पश्चिमी लोग हमारे देश के महत्व को सुन, पढ़ कर इसके प्रति आकर्षित होकर यहाँ पर्यटक बनकर आ रहे हैं. इस परंपरागत विरासत का अलग से परिचय देने की जरुरत नहीं लेकिन यह विरासत एक अमूल्य धरोहर के रुप में समय की कठिन परीक्षाओं, संघर्ष का मुकाबला कर सदियों, पीढ़ियों से खड़ी है और उसे अनेक आक्रमणों से बचाकर अगली पीढियों तक पहुंचा रही हैं. अब हमारा भी यह दायित्व बनता है कि हम इस विरासत की सुरक्षा एवं संपन्नता के लिए कटिबद्ध होकर उसे अगली पीढी तक पहुंचायें और हमारी सांस्कृतिक विविधताओं को संजोकर उसे बढावा देने के लिए हर संभव कोशिश करें.

एन वी एन आर अन्नपूर्णा
क्षे.म.प्र.का., विशाखापट्टनम

वेशभूषा, खानपान एवं भारत की भौगोलिक विविधता

भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है, फिर भी सांस्कृतिक रूप से एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीनकाल से बना हुआ है. इस बृहद देश में यदि हम इसकी भौगोलिक संरचना को देखें तब हमें उत्तर में फैला पर्वतीय भू-भाग, पूर्व दिशा में ब्रह्मपुत्र और पश्चिम दिशा में सिन्धु नदियों तक फैला क्षेत्र साथ ही गंगा, यमुना, सतलुज की उपजाऊ कृषि भूमि, विन्ध्य और दक्षिण दिशा क्षेत्र का वनों से आच्छादित पठारी भू-भाग, पश्चिम दिशा में फैला थार का रेगिस्तान, दक्षिण का तटीय प्रदेश तथा पूर्व में असम और मेघालय का अतिवृष्टि का सुरम्य क्षेत्र सम्मिलित है. इस भौगोलिक विभिन्नता के अतिरिक्त इस देश में आर्थिक और सामाजिक भिन्नता भी पर्याप्त रूप से विद्यमान है. वस्तुत: इन भिन्नताओं के कारण ही भारत में अनेक सांस्कृतिक उपसंरचनाएँ विकसित हो गई हैं. विदेशी पर्यटकों को भौगोलिक दृष्टि से भारत में बहुत विविधता दिखती हैं. जितनी अधिक प्राकृतिक भिन्नताएँ यहाँ हैं, उतनी अन्यत्र कहीं पर नहीं हैं. देश के एक ओर हमें हिम मंडित हिमालय दिखाई देगा और दक्षिण की ओर बढ़ने पर गंगा, यमुना एवं ब्रह्मपुत्र की घाटियाँ, फिर विन्ध्य, अरावली, सतपुड़ा तथा नीलगिरी पर्वतश्रेणियों का पठार! हमें यहाँ विभिन्न प्रकार की जलवायु देखने को मिलती है. हिमालय की अत्याधिक ठण्ड, मैदानों की ग्रीष्मकाल की अत्याधिक गर्मी मिलेगी. एक तरफ़ असम का वर्षा वाला प्रदेश है, तो दूसरी ओर जैसलमेर, राजस्थान का सूखा क्षेत्र. इस प्रकार भौगोलिक दृष्टि से भारत में सर्वत्र विविधता दिखाई पड़ती है.

भारतीय पारंपरिक वेशभूषा भी देश की संस्कृति व भौगोलिक विविधता के कारण विविध हैं. देश की कई सुंदर, उज्ज्वल और अनोखी पोशाकें देश की महान भौगोलिक विविधता के कारण एक राज्य से दूसरे राज्य तक बदलती रहती हैं. भारत में पारंपरिक वेशभूषा भी प्राकृतिक जलवायु के आधार पर पहनी जाती है. कपड़े पहनने की पश्चिमी शैली के मौजूदा प्रचलन के बावजूद, उत्सव और अन्य अवसरों पर भारतीय पारंपरिक वेशभूषा, पोशाक का पसंदीदा रूप है. भारतीय पारंपरिक वेशभूषा की एक उत्कृष्ट विशेषता कपड़ों के चमकीले रंग और बढ़िया बनावट है. भारत में हर क्षेत्र की अपनी भाषा, जीवन शैली और भोजन है और यह विविधता अपने पारंपरिक परिधान में भी दिखती है.

भारतीय वेशभूषा का इतिहास

प्राचीन भारत में कई तरह की बुनाई की तकनीकें कार्यरत थीं, जिनमें से कई आज तक जीवित हैं. रेशम और कपास को विभिन्न डिजाइन और रूपांकनों में बुना गया. इन बुनाई शैलियों में जामदानी, बटीदार प्रसिद्ध थीं. प्राचीन राजसी रेशम के वस्त्रों को सोने और चांदी के धागों से बुना जाता था. भारतीय पारंपरिक पोशाक के इतिहास का अभिन्न अंग कश्मीरी शाल है. उस समय तक हस्त बुनाई शैलियाँ अपने चरम पर थी किंतु परतंत्र भारत ने इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को खो दिया. अपनी उसी विरासत को बनाए रखने व पुन: इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए आंदोलन को बढ़ावा दिया और बाजार में ब्रिटिश वस्त्र उत्पादों का सक्रिय रूप से बहिष्कार करते हुए भारतीय वस्त्र उत्पादों का समर्थन किया. खादी उत्पादों को ब्रिटिश माल के विरोध के तौर पर राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा प्रोत्साहित किया गया, जबकि इससे कई ग्रामीण कारीगरों को रोजगार देने व आत्मनिर्भर बनाने के साधन के रूप में भी देखा जा रहा था.

भारतीय पारंपरिक वेशभूषा में भारतीय हस्तकला, कढ़ाई, प्रिंट, और अलंकरण की विभिन्न किस्में शामिल हैं. भारतीय पारंपरिक वेशभूषा के कई वर्ग हैं जिनके प्रकार निम्नलिखित हैं.

धोती : भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी ने सिर्फ धोती को धारण किया था. तथापि ऐतिहासिक रूप से भी यह भारत की राष्ट्रीय पोशाक के रूप में जानी जाती रही है, धोती साधारण तौर पर सफ़ेद रंग की होती है जिस पर एक रंगीन पट्टी होती है जो न्यूनतम 4 फीट व अधिकतम लगभग 6 फीट लंबी होती है. यह पारंपरिक भारतीय पोशाक है जो कि प्राचीन काल से पुरुषों द्वारा पहनी जाती है, कभी-कभी राजपुरुषों द्वारा इसके ऊपर एक स्वर्ण व माणिक युक्त कमरबंद भी पहना जाता था.

साड़ी : मूल रूप से साड़ी की लंबाई लगभग 9 मी. होती है. साड़ी एक दर्जन से अधिक तरीकों से पहनी जा सकती है. भारतीय समाज में साड़ी को महिला के वस्त्रों में मुख्य स्थान प्राप्त है. भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अनूठी साड़ी शैली होती है, जिसमें साड़ी की बुनाई शैली व कपड़े के आधार पर भिन्नता रहती है. राजस्थान और गुजरात राज्यों में बांधनी, बनारसी और कांजीवरम की रेशम साड़ियां, महिलाओं में विशेष लोकप्रिय हैं. बनारसी साड़ी, चंदेरी साड़ी की खासियत अनूठी है, जबकि कांजीवरम सिल्क तमिलनाडु की बेहतरीन सिल्क साड़ियों में से एक है. इनके अलावा, पश्चिम बंगाल में कॉटन प्रिंटेड और हैंडलूम साड़ियाँ जैसे तांत, जामदानी और बालूचेरी हैं. ये साड़ियां अपने वजन में बहुत हल्की व आरामदायक होती हैं. इसके अलावा आज के दौर में विभिन्न

फैब्रिक (जॉर्जेट, शिफॉन, क्रेप) का इस्तेमाल करके और उसमें कढ़ाई कर तैयार की गई साड़ियाँ हैं जो कि आज के दौर को नया रूप देती हैं.

लपेटने वाले वस्त्रों में साड़ियों के अलावा, केरल में पुरुषों और महिलाओं की पारंपरिक भारतीय वेशभूषा मुंडम नेरियाथुम है. यह दोनों के लिए है और साड़ी के प्राचीन रूप का सबसे पुराना रुप है. पारंपरिक टुकड़ा मुंडू है जो निचला वस्त्र है और इसमें दो सूती कपड़े के टुकड़े होते हैं. मुंडू को शरीर के निचले हिस्से में पहना जाता है. जबकि नेरियथम ऊपरी वस्त्र का नाम है, जिसे ब्लाउज के ऊपर रखा जाता है, जिसके एक सिरे को मुंडू में बाँधा जाता है और दूसरे सिरे को शरीर के ऊपरी हिस्से में पहना जाता है. मलयाली पुरुषों के लिए, वे अपनी कमर के चारों ओर मुंडू लपेटते हैं और नेरियाथुम को अपने कंधे पर ले जाते हैं. फिर मेखेला चादोर है, जो सभी उम्र की महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली पारंपरिक असमिया पोशाक है. कपड़े के तीन मुख्य टुकड़े होते हैं जिन्हें शरीर के चारों ओर लपेटा जाता है. कमर से नीचे की ओर लिपटा हुआ निचला भाग, मेखला कहलाता है.

लहंगा चोली, ओढ़नी व पगड़ी : राजस्थान गुजरात के कुछ भूभाग में मूल पारंपरिक रूप से पहने जाने वाली भारतीय पोशाक, लहंगा चोली, ओढ़नी व पगड़ी सभी उत्सवों और पार्टियों के लिए मुख्य पोशाक बन गई है. लहंगा चोली, ओढ़नी की विभिन्न शैलियों को महिलाओं द्वारा पहना जाता है, आमतौर पर गरबा नृत्य के लिए नवरात्रि के दौरान पहने जाने वाले पारंपरिक पोशाकों में से यह एक है. इसके अलावा प्रत्येक विवाह समारोह में वधू अपने अनुरूप डिजाइन किए गए लहँगे को विवाह की खरीद में सबसे ऊपर रखती है.

सलवार कमीज : मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा राज्यों में पहना जाने वाला सलवार कमीज परिधान अभी संपूर्ण भारत में युवतियों की पसंद रहा है. सलवार कमीज सामान्यत: लंबा होता है और घुटनों से नीचे जाता है और साथ में कंधों पर रंगीन दुपट्टा होता है. सलवार कमीज की अपनी विभिन्न शैलियाँ हैं, जैसे चूड़ीदार कुर्ता और अनारकली. पहले ये केवल दो राज्य पंजाब व हरियाणा की पोशाक थी, किन्तु आरामदायक होने के कारण अब यह साड़ी के बाद संपूर्ण देश की महिलाओं की पहली पसंद है.

शेरवानी : शेरवानी एक लंबा कोट या जैकेट है. आमतौर पर जैकेट की लंबाई घुटनों के ठीक नीचे तक होती है और यह तंग फिट पैंट के साथ पहना जाता है जिसे चूड़ीदार के रूप में जाना जाता है. इस तरह की पारंपरिक भारतीय पोशाक आमतौर पर दूल्हे द्वारा शादी समारोहों के दौरान पहनी जाती है.

उपरोक्त सभी वस्त्रों के अलावा आधुनिक भारत में पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली शर्ट, पैंट व कोर्पोरट पोशाक की पहचान टाई एवं कोट हैं.

मूल बात यह है कि भारतीय वेशभूषा में विविधता बहुत अधिक है और एक व्यक्ति की जातीयता, क्षेत्र, धर्म और उप-संस्कृति यूनियन सृजन जनवरी-मार्च 2021 48व भौगोलिक सीमाओं के कारण यह विविधता बनी हुई है.

भारतीय भोजन स्वाद हेतु स्वर्ग के समान है. चाहे सुदूर दक्षिण में केरल की मालाबार बिरयानी हो अथवा उड़ीसा का पखाला भाता, चाहे गोवा की फोनना कढ़ी, राजस्थान की दाल बाटी और चूरमा हो या मध्य प्रदेश का दाल बाफला, बंगाल के रसगुल्ले या उत्तर प्रदेश (ब्रज) की कचौड़ी, दही बड़े, मिठाई, खीर, हलवा (गाजर, मूँग दाल, लौकी, सूजी), मालपुआ और रबड़ी. चाहे दिल्ली के पराठे या पहाड़ी इलाक़े में लोकप्रिय उत्तराखंड की मँडुआ की रोटी या फ़ाणु या आंध्र प्रदेश का कई प्रकार का डोसा या कश्मीरी पुलाव, गुश्तावा, कश्मीरी गोभी या तमिलनाडु का उत्तपम या बिहार का लिट्टी चोखा, महाराष्ट्र की पुरणपोली, चकली या मोदक हो... गुजरात का ढोकला या फाफड़ा हो.

भारतीय भोजन स्वाद और सुगंध का मधुर संगम है. चाहे जिस किसी भी भोजन की बात हो, केवल नाम सुनने से ही भूख लगती है. भारत में पकवानों की विविधता भी बहुत अधिक है और अब आधुनिक भारत में विविधता के बीच एकता का प्रमाण यह है कि आज दक्षिण भारतीय राज्यों में भी लोग पराठे, दाल-बाटी, चपाती उसी शौक़ से खाते हैं, जितने शौक़ से उत्तर भारतीय इडली-डोसा खाते हैं. सचमुच भारत अजब-ग़ज़ब है, अद्भुत है.

जगमोहन दुबे
क्षे.का., भोपाल सेंट्रल

कर्म संस्कृति

संस्कृति का क्या अर्थ है ?

''भौतिक साधन, विचारधाराएं, आदर्श तथा आस्थाएं, भावनाएं, शुद्ध मूल्य एवं सामाजिक रीति-रिवाज, जो किसी भी समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विरासत में मिलते हैं, उन्हीं के सामूहिक रूप से संचयन को संस्कृति कहते हैं''- श्री गोपाल स्वरूप पाखक.

एडवर्ड बनार्ट टायलर द्वारा सन् 1871 में संस्कृति के संबंध में सर्वप्रथम उल्लेख किया गया है. उनके अनुसार, संस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा और अन्य सभी क्षमताओं तथा आदतों का समावेश होता है जिन्हें मनुष्य समाज के नाते प्राप्त करता है.

रामधारी सिंह 'दिनकर' के अनुसार-''संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है. एक आत्मिक गुण है जो मनुष्य के स्वभाव में उसी तरह व्याप्त है, जिस प्रकार फूलों में सुगन्ध और दूध में मक्खन. इसका निर्माण एक अथवा दो दिन में नहीं होता, युग-युगान्तर में होता है.''

मानव जीवन में संस्कृति का महत्त्व

संस्कृति और जीवन एक दूसरे के परिचालक है. यह कोई बाह्य वस्तु नहीं है और न ही कोई आभूषण है जिसे मनुष्य प्रयोग कर सकें. यह केवल रंगों का स्पर्श मात्र भी नहीं है. यह वह गुण है जो हमें मनुष्य बनाता है. संस्कृति परम्पराओं, विश्वासों, जीवन की शैली, आध्यात्मिक पक्ष, भौतिक पक्ष से निरन्तर जुड़ी है. यह हमें जीवन का अर्थ, जीवन जीने का तरीका सिखाती है. मानव ही संस्कृति का निर्माता है और साथ ही संस्कृति मानव को मानव बनाती है.

'कार्य-संस्कृति' या 'कर्म -संस्कृति'

कर्म का शाब्दिक अर्थ है काम या क्रिया और भी मोटे तौर पर यह निमित्त और परिणाम तथा क्रिया और प्रतिक्रिया कहलाता है. कार्य-संस्कृति से तात्पर्य उस संपूर्ण वातावरण से है, जो किसी कार्यालय/संगठन में कार्य के अनुकूल या प्रतिकूल कर्मचारियों की मनोवृत्तियाँ निर्धारित करता है. प्रायः प्रत्येक संगठन की एक विशिष्ट कार्य-संस्कृति होती है. हालाँकि, यदि संगठन का आकार बहुत बड़ा है (जैसे कोई बहुराष्ट्रीय कंपनी), तो उसके विभिन्न हिस्सों में एक से अधिक (यहाँ तक कि परस्पर विरोधी भी) कार्य-संस्कृतियाँ हो सकती हैं. 'संगठन संस्कृति', 'निगम संस्कृति' या 'कंपनी संस्कृति' भी कार्य-संस्कृति के ही पर्याय हैं.

कार्य-संस्कृति किसी संगठन के विभिन्न पक्षों में अभिव्यक्त होती है, जैसे-संगठन का उद्देश्य क्या है, अपनी सामाजिक भूमिका के प्रति उसकी राय क्या है, कर्मचारियों पर कैसी आचरण-संहिता तथा नियमावलियाँ लागू होती हैं, उसके कर्मचारियों की सामान्य आदतें किस प्रकार की हैं इत्यादि.

किसी संगठन की कार्य-संस्कृति काफी हद तक उस देश/समाज की मूल संस्कृति से प्रभावित होती है, जिस देश/समाज में वह संगठन कार्यरत है. होफ्सटेड ने इस संबंध में 'सांस्कृतिक आयाम का सिद्धांत' प्रस्तुत किया है, जिसका सार यही है कि संस्कृति 'कार्य-संस्कृति' को व्यापक स्तर पर प्रभावित करती है, यथा-

यदि किसी समाज की संस्कृति में व्यक्तिवाद अधिक हावी होता है, तो वहाँ के संगठन में कर्मचारी अपने संगठन पर आर्थिक व भावनात्मक दृष्टि से कम निर्भर होगा तथा उसकी व्यक्तिगत पहचान को सामाजिक पहचान पर वरीयता दी जाएगी. दूसरी ओर, यदि संस्कृति में सामूहिक ढाँचों का अधिक महत्त्व है तो व्यक्ति अपने संगठन पर अधिक निर्भर होगा तथा उसकी सामाजिक पहचान को अधिक महत्त्व मिलेगा.

अगर समाज में सांस्कृतिक विविधता है तथा विविधता के प्रति लचीलापन व सम्मान का भाव है, तो कार्य-संस्कृति में भी विभिन्न वर्गों का बेहतर अनुपात होगा और समावेशी विकास होगा.

कोई संस्कृति सहजता पर अधिक बल देती है अथवा औपचारिकता पर, तो इसका प्रभाव कार्यालय के माहौल में दृष्टिगत हो जाता है.

परंतु वर्तमान में यह सार्वभौमिक सिद्धांत नहीं रह गया है कि संस्कृति किसी संगठन की 'कार्य-संस्कृति' को आवश्यक रूप से प्रभावित करे. वैश्वीकरण के चलते विभिन्न संगठन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भी एक समान कार्य-संस्कृति को अपनाते हैं.

कार्य संस्कृति विश्वासों और व्यवहारों का एक संग्रह है जो एक कार्य वातावरण में नियमित वातावरण बनाती है. स्वस्थ कार्यस्थल संस्कृतियां कर्मचारियों के व्यवहार और कंपनी की नीतियों को कंपनी के समग्र लक्ष्यों के साथ सरेखित करती हैं, जबकि व्यक्तियों की भलाई पर भी विचार करती हैं. कार्य संस्कृति यह निर्धारित करती है कि कोई व्यक्ति नई नौकरी में अपने वातावरण में कितनी अच्छी तरह ढल जाता है और किस प्रकार सहकर्मियों के साथ व्यवसायिक संबंध बनाने की क्षमता रखता है. आपका दृष्टिकोण, कार्य-जीवन संतुलन, विकास के अवसर और नौकरी से संतुष्टि सभी आपके कार्यस्थल की संस्कृति पर निर्भर करते हैं.

कार्य संस्कृति को क्या प्रभावित करता है?

प्रबंधन से लेकर प्रवेश स्तर के कर्मचारियों तक संगठन के भीतर लोगों के व्यवहार के आधार पर कार्य संस्कृति विकसित होती है. कंपनी प्रबंधन अपनी नीतियों, लाभों और मिशन के माध्यम से कंपनी संस्कृति के लिए आधार बनाते है. प्रबंधक कंपनी की संस्कृति को अपने काम पर रखने की प्रथाओं से आकार देते हैं, जहां वे ऐसे आवेदकों का चयन कर सकते हैं, जिनकी व्यक्तिगत दृष्टि स्वस्थ कार्य संस्कृति के साथ सरेखित होती है. एक कार्यस्थल का भौतिक वातावरण संस्कृति को भी प्रभावित करता है, जिसमें कई कार्यालय एक आधुनिक खुला आर्किटेक्चर, प्राकृतिक प्रकाश व्यवस्था और इन-ऑफिस जिम और ब्रेक रूम सुविधाओं जैसे भत्तों को शामिल करते हैं.

एक स्वस्थ कार्य संस्कृति के तत्व

संस्कृति एक जटिल अवधारणा है जो कई तत्वों के आधार पर कार्यस्थल में लगातार विकसित होती है. जबकि कुछ लोग अधिक पारंपरिक कार्य संस्कृति को महत्व देते हैं और अन्य कुछ अधिक आधुनिक और मजेदार चाहते हैं, सभी स्वस्थ कार्य संस्कृतियों में कई लक्षण समान होते हैं. संभावित नियोक्ताओं पर विचार करते समय एक समृद्ध कार्य संस्कृति के इन संकेतों को देखें:

1.जवाबदेही, 2.निष्पक्षता, 3.अभिव्यक्ति, 4.संचार, 5.मान्यता

1. जवाबदेही : जब किसी कंपनी में काम करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवहार के लिए जवाबदेह होता है, तो यह एक स्वस्थ कार्य वातावरण को इंगित करता है. एक संतुलित कार्यस्थल लोगों को अपने विचारों और अपनी गलतियों का श्रेय लेने के लिए पर्याप्त सहज महसूस करने में सक्षम बनाता है. खुली जवाबदेही प्रत्येक कर्मचारी को चुनौतियों से बचने के बजाय उनसे सीखने की अनुमति देती है. जवाबदेही टीम वर्क, खुले संचार, भरोसेमंद और जिम्मेदारी के आधार पर एक कार्य संस्कृति को बढ़ावा देती है.

2. निष्पक्षता : जो कंपनियां अपने सभी कर्मचारियों के साथ समान व्यवहार करती हैं, उनमें अक्सर स्वस्थ कार्यस्थल संस्कृति होती है. एक संगठन के भीतर हर पद का मूल्य होता है और सभी को अवसर देने से कर्मचारी का मनोबल बढ़ता है. कार्यस्थल में पक्षपात एक विषाक्त कार्य संस्कृति का संकेत है और सहकर्मियों के बीच अविश्वास और नाराजगी की भावना पैदा कर सकता है, जिससे किसी भी सकारात्मक कार्य संस्कृति के लिए एक समान कार्यस्थल वातावरण आवश्यक हो जाता है.

3. अभिव्यक्ति : जब लोग कार्यस्थल में खुद को अभिव्यक्त करने में सक्षम महसूस करते हैं तो लोग आम तौर पर अधिक खुश, अधिक उत्पादक और अधिक केंद्रित होते हैं. यदि कर्मचारियों को अपनी व्यक्तिगत शैली में कुछ स्वतंत्रता है और वे अपने कार्यक्षेत्र को कैसे सजाते हैं, तो यह उनकी कार्य संस्कृति के भीतर अनुकुल वातावरण के स्तर को इंगित करता है.

4. संचार : एक उत्पादक कार्यस्थल वातावरण के लिए खुला संचार महत्वपूर्ण है. एक संगठन के भीतर सभी को यह समझना चाहिए कि फीडबैक कैसे देना और प्राप्त करना, विचारों को साझा करना, सहयोग करना और समस्याओं को हल करना है. सभी टीमों में कभी-कभी पारस्परिक संघर्ष होते हैं, लेकिन एक कार्यात्मक कार्य संस्कृति उन्हीं मुद्दों को हल करने और किसी भी चुनौती के बावजूद

एक टीम के रूप में काम करने की अनुमति देगी. ऐसी कार्य संस्कृति वाले संगठनों से बचें जहां लोग संघर्षों या चिंताओं के बारे में बोलने में असमर्थ महसूस करते हैं, क्योंकि विकास के लिए ज्यादा जगह नहीं होगी.

5. **मान्यता :** संपन्न कार्य संस्कृतियां कर्मचारियों की सफलताओं को पहचानती हैं और अच्छा प्रदर्शन करने पर लोगों को पुरस्कृत करती हैं. एक स्वस्थ कार्यस्थल वातावरण में प्रबंधन टीम में सभी के सकारात्मक गुणों की तलाश करेगा और उनकी प्रतिभा के उपयोग को प्रोत्साहित करेगा. नियमित मौखिक प्रशंसा से लेकर प्रतिस्पर्धी वेतन तक कर्मचारी की मान्यता, प्रशंसा और आपसी सम्मान की कार्य संस्कृति का निर्माण कर सकती है.

सकारात्मक कार्य संस्कृति का महत्व : लोगों को फलने-फूलने के लिए स्वस्थ वातावरण की आवश्यकता होती है और यह कार्यस्थल में विशेष रूप से सच है. हर दिन आप जिन व्यवहारों का सामना करते हैं, उनका प्रभाव इस बात पर पड़ता है कि आप कार्यस्थल और घर दोनों में कैसा महसूस करते हैं. एक समृद्ध कार्य संस्कृति एक व्यवसाय के सभी पहलुओं और उसके भीतर के लोगों को प्रभावित करती है.

स्वस्थ कार्यस्थल संस्कृति के महत्वपूर्ण होने के कारण यहां दिए गए हैं:

बेहतर भर्ती विकल्प ✲ कर्मचारी की खुशी ✲ कर्मचारी प्रतिधारण ✲ प्रदर्शन गुणवत्ता ✲ प्रतिष्ठा ✲ बेहतर भर्ती विकल्प

एक सफल कार्य संस्कृति वाले संगठन के प्रबंधक अपने दृष्टिकोण को साझा करने वाले नए कर्मचारियों को आकर्षित करना और उनका चयन करना जानते हैं. आप संभवतः उन कंपनियों की ओर आकर्षित होंगे जो आपके मूल्यों और उस संस्कृति के प्रकार को साझा करती हैं, जिसके साथ आप सहज महसूस करते हैं. स्वस्थ कार्य संस्कृतियों में समान विचारधारा वाले पेशेवर होते हैं जो एक-दूसरे के अनुकूल होते हैं और साझा लक्ष्यों की दिशा में मिलकर काम करते हैं.

कर्मचारी की खुशी : काम की संस्कृति से आपकी संतुष्टि सीधे तौर पर आपकी नौकरी के साथ आपकी खुशी को प्रभावित करती है. फलती-फूलती कार्यस्थल संस्कृतियां हर किसी को अपने काम में अर्थ और गर्व खोजने में मदद करती हैं, जबकि एक जहरीली कार्यस्थल संस्कृति सबसे भावुक कर्मचारी को भी काम से नाखुश कर सकती है. एक मजबूत कार्य संस्कृति के सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक आपके करियर और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन है, और कंपनियां अपने कर्मचारियों के जीवन का सम्मान करके उनकी खुशी में योगदान दे सकती हैं.

कर्मचारी प्रतिधारण : अच्छी कार्य संस्कृतियां प्रतिभाशाली कर्मचारियों को स्थिरता प्रदान करती हैं और उन्हें किसी विशेष भूमिका या सफलता के स्तर तक सीमित करने के बजाय कंपनी के भीतर विकसित होने देती हैं. खुश कर्मचारी आमतौर पर अपनी नौकरी पर बने रहना चाहते हैं, कार्य संस्कृति योग्य उम्मीदवारों को लंबी अवधि के करियर से जोड़ने की कुंजी बनती है.

प्रदर्शन गुणवत्ता : सकारात्मक संस्कृति के कारण काम पर आने का आनंद लेने वाले कर्मचारी आमतौर पर अधिक उत्पादक होंगे और उच्च गुणवत्ता वाले काम का उत्पादन करेंगे. काम का माहौल एक महान प्रेरक है जो हर किसी को अपने काम में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करता है. क्योंकि समृद्ध कार्यस्थल वातावरण कड़ी मेहनत और सफलता को पहचानता है और उसका जश्न मनाता है.

प्रतिष्ठा : एक स्वस्थ कार्यस्थल संस्कृति होने से कंपनी और वहां काम करने वाले लोगों के लिए सकारात्मक, प्रतिष्ठित प्रतिष्ठा बनती है. एक सुखद कार्यस्थल वातावरण प्रतिभाशाली लोगों को आकर्षित करने के लिए एक महत्वपूर्ण संपत्ति है. जिन कंपनियों के पास एक उत्थान मिशन है जो उनके कर्मचारियों को सशक्त बनाता है, वे उनके माध्यम से सकारात्मक सामुदायिक संबंध बना सकते हैं.

सारांश : कार्यस्थल एक ऐसी जगह है जहां कर्मचारी अपने जीवन का एक तिहाई से अधिक समय बिताते हैं. इसके अलावा, वे एक संगठन की जरूरतों और अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए घंटों काम करते हैं. स्वाभाविक रूप से, जब कोई कर्मचारी काम पर खुश और संतुष्ट होता है, तो उसके समग्र व्यक्तित्व और उत्पादकता में सुधार होता है. लेकिन फायदे यहीं खत्म नहीं होते हैं.

जब आप एक अच्छा कार्य वातावरण सुनिश्चित करते हैं, तो आपके कर्मचारी अपने दिन सप्ताहांत तक गिनने के बजाय काम पर एक अच्छा दिन बिताने के लिए हर दिन जागते हैं. वे संगठन के प्रति वही निष्ठा, स्वामित्व और समर्पण महसूस करते हैं जो आप करते हैं और परिणाम उनके द्वारा किए गए कार्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है.

अतः कार्यस्थल को उपयोगी बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार हैं –

✲ प्रतिभाशाली एवं खुशनुमा व्यक्तियों का चयन करें.

✲ कर्मचारियों का निरंतर उत्साहवर्धन करें.

✲ कार्य को अधिक रोमांचक एवं संतोषप्रद बनाएं.

✲ सार्थक बातचीत को प्रोत्साहित करें.

✲ कर्मचारियों की उन्नति हेतु प्रतिपुष्टि का निरंतर प्रयोग करें.

✲ व्यक्तिगत विकास को प्राथमिकता दें.

✲ सूक्ष्म प्रबंधन से स्वयं को विरत करें.

✲ बेहतर कार्य/जीवन संतुलन बनाने के तरीके खोजें.

✲ कार्यस्थल को कुशल बनाने हेतु बढ़ावा दें.

आशुतोष पांडे
स्टा.प्र.के., भुवनेश्वर

राजभाषा पुरस्कार

वर्ष 2019-20 हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दक्षिण क्षेत्र में उत्कृष्ट, राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.का., बेंगलूरु (दक्षिण) को प्रथम व अंचल कार्यालय, बेंगलूरु को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त होने पर क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु श्री बी. श्रीनिवास राव; क्षेत्र प्रमुख श्री टी. नञ्जुंडप्पा तथा अन्य कार्यपालकों द्वारा कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों की उपस्थिति में दि. 20.01.21 को केक काटकर समारोह मनाया गया.

दि. 10.02.21 को नराकास सेलम की अर्धवार्षिक बैठक में क्षे.का. सेलम को 100 से कम कर्मचारियों वाले कार्यालयों के वर्ग में वित्तीय वर्ष 2020-21 हेतु राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. नराकास अध्यक्ष से शील्ड प्राप्त करते हुए श्री तवाकुमार, मुख्य प्रबंधक (ऋण) एवं श्री विवेक साव (राजभाषा अधिकारी).

नराकास आणंद के तत्वावधान में बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा दि. 27.01.21 को आयोजित ऑनलाइन राजभाषा एवं हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में सुश्री नीलम सुर्वे को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

दि. 04.01.21 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा घोषित क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों में हमारे क्षे.का., बड़ौदा को वर्ष 2019-20 के लिये पश्चिम क्षेत्र के घोषित पुरस्कारों में बैंकों में द्वितीय स्थान मिला है. इस उपलब्धि हेतु क्षे.का. में केक काटकर उत्सव मनाया गया.

दि. 20.01.21 को बैंक नराकास, रायपुर की बैठक में क्षे.का. रायपुर को वर्ष 2020 के लिए नराकास रायपुर की अध्यक्षा, श्रीमती पॉपी शर्मा के कर कमलों से प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. नराकास द्वारा क्षे.का. रायपुर को लगातार तीसरी बार प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है.

नराकास, तिरुच्चि की 26.03.21 को आयोजित अर्ध वार्षिक बैठक के दौरान श्री अजय कुमार, अध्यक्ष, नराकास, तिरुच्चि के कर कमलों से नराकास, तिरुच्चि के तत्वावधान में आयोजित हिंदी प्रश्नोत्तरी में प्राप्त प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री लक्ष्मीकांत बी.जी., प्रबंधक(विपणन), क्षे.का., तिरुच्चिराप्पल्ली.

महिला कार्यशाला

दि. 12.03.21 को क्षे.का.अहमदनगर द्वारा आयोजित महिला विशेष कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रुप में श्रीमती सविता यादव, प्रधानाचार्या, केंद्रीय विद्यालय, अहमदनगर; श्री सुनील कुमार जदली, क्षेत्रीय प्रमुख; श्री डी. विजया सार्थी, उप क्षेत्रीय प्रमुख; सुश्री नीरु वर्मा, प्रबंधक (हिंदी संपर्क अधिकारी), क्षे.का.अहमदनगर.

क्षे.का. उदयपुर में महिला विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन दि. 03.03.21 को किया गया. कार्यशाला को संबोधित करते हुए श्री विवेक मीणा, उप क्षेत्र प्रमुख.

दि. 08.03.21 को क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित महिला विशेष कार्यशाला (ऑनलाइन) के प्रारम्भिक सत्र में स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री पवन कुमार दास, क्षेत्र महाप्रबंधक, दिल्ली. कार्यशाला में अतिथि वक्ता श्रीमती बीना वाहिद, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एवं श्रीमती मनीषा शर्मा, सदस्य सचिव, बैंक नराकास (दिल्ली) ने प्रतिभागियों को संबोधित किया.

दि. 08.03.21 को महिला दिवस के शुभ अवसर पर आणंद क्षेत्र में कार्यरत सभी 60 महिला स्टाफ सदस्यों हेतु 'महिला दिवस समारोह' तथा 'महिला सशक्तिकरण' विषय पर 'महिला विशेष ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता का संयोजन राजभाषा प्रभारी, श्री संजय प्रसाद ने किया.

दि. 08.03.21 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर क्षे.म.प्र.का., पुणे एवं क्षे.का. पुणे (पूर्व) द्वारा महिलाओं के लिए विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला का उद्घाटन क्षेत्र महाप्रबंधक, प्रमोद कुमार गुप्ता एवं क्षेत्र प्रमुख ओ.पी.बलौदी द्वारा किया गया. आहार विशेषज्ञ, सुश्री नेहा वरुण उपाध्याय द्वारा 'आहार से सुधार'-स्वास्थ्य संबंधी सत्र ऑनलाइन लिया गया. कार्यशाला में 50 से अधिक महिला प्रतिभागियों ने भाग लिया.

क्षे.का. शिवमोगा में एक दिवसीय महिला विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दि. 08.03.21 को किया गया. इस कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र प्रमुख, श्री सी. प्रभु; उप क्षेत्र प्रमुख, श्री यू. रमण राव; सभी मुख्य प्रबंधकों के साथ कुल 21 प्रतिभागी उपस्थित रहे.

क्षे.का., तिरुच्चिराप्पल्ली द्वारा दि. 08.03.21 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित महिला विशेष ऑनलाइन कार्यशाला के दौरान सहभागियों को संबोधित करते हुए श्री जयपॉल जे, उप क्षेत्र प्रमुख; श्री पी आदिसामी, मुख्य प्रबंधक; श्री सुब्रमण्यन पी, मुख्य प्रबंधक तथा सुश्री बिनु टी एस, राजभाषा अधिकारी.

दि. 08.03.21 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर क्षे.का. बेलगावी में महिलाओं हेतु विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सावित्री गोडन्नावर, स्त्री रोग विशेषज्ञ (डेक्कन हॉस्पिटल, बेलगावी) ने विशेष उपस्थिति दी. इस कार्यशाला में कुल 29 प्रतिभागियों ने सहभागिता दी.

दि. 08.03.21 को क्षे.का. रांची में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं हेतु विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें रांची क्षेत्र की 26 महिला स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता दी एवं रांची से बाहर की शाखाओं से कुल 42 महिला स्टाफ सदस्यों ने वर्चुअल रूप से हिस्सा लिया. कार्यशाला में मुख्य अतिथि, श्रीमती अलका कुरील, पत्नी श्री अनिल कुरील, क्षेत्र महाप्रबंधक राँची; अतिथि वक्ता डॉ. भारती सिंह, जी.एस.एन.एम.कॉलेज, गढ़वा उपस्थित रहे. कार्यशाला का उद्घाटन श्री लोकनाथ साहू, उप अंचल प्रमुख, रांची ने किया. इस अवसर पर श्री आशुतोष कुमार, सहायक महाप्रबंधक, क्षे.म.प्र.का. रांची एवं श्री मुकेश कुमार सिंह, उप क्षेत्र प्रमुख रांची ने भी अपने अनुभव प्रतिभागियों के बीच साझा किए.

क्षे.का., प्रयागराज की कुछ शाखाओं द्वारा ग्राहकों के साथ महिला दिवस कार्यक्रम मनाया गया.

दि. 08.03.21 को क्षे.का., गाजीपुर में आयोजित महिला कार्मिकों हेतु विशेष कार्यशाला में 21 महिला प्रतिभागियों ने भाग लिया. कार्यशाला का उद्घाटन श्री रंजीत सिंह, क्षेत्र प्रमुख गाजीपुर द्वारा किया गया. उप क्षेत्र प्रमुख, श्री मनोज कुमार बर्नवाल; श्री प्रभात कुमार सिंह, मुख्य प्रबंधक; श्री किशोर कुमार, राजभाषा अधिकारी भी उपस्थित रहे.

क्षे.का., बेंगलूरु (दक्षिण) के अंतर्गत दि. 06.03.21 को महिलाओं हेतु विशेष एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला, क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु, श्री बी. श्रीनिवास की अध्यक्षता में आयोजित की गयी. कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में इन्फोसिस फाउंडेशन की सह संस्थापक श्रीमती सुधा मूर्ति, जो कि हमारी जयनगर शाखा की सम्मानित ग्राहक भी है ने वर्चुअल रुप से प्रतिभागियों को संबोधित किया. इस कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में क्षेत्र प्रमुख, बेंगलुरु (दक्षिण) श्री टी. नञ्जुंडप्पा; क्षेत्र प्रमुख, बेलगावी, श्री डी. कनवारिया व संकाय, सुश्री वी. माधवी, सहायक महाप्रबंधक भी उपस्थित रही.

दि. 08.03.21 को महिला कार्मिकों हेतु एक दिवसीय विशेष हिन्दी कार्यशाला (ऑनलाइन) का आयोजन भोपाल अंचल के समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया. जिसका उद्घाटन क्षेत्र महाप्रबंधक, श्री अभिजीत बसाक द्वारा किया गया. स्वागत सम्बोधन श्री पार्थसारथी मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख इंदौर ने किया. उक्त कार्यशाला में अतिथि वक्ताओं के रूप में श्रीमती एकता कानूनगो बक्षी, लेखक/कवियत्री; श्रीमती प्रज्ञा द्विवेदी, सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग, इंदौर; डॉ श्रीमती स्वाति सदानंद गोडबोले पूर्व महापौर, नगर निगम, जबलपुर; श्रीमती नूपुर सिंह, प्रेरक वक्ता एवं व्यक्तित्व सलाहकार, इंदौर; डॉ श्रीमती ईशा कौर राखरा, फ़ैकल्टी, एपीएस विश्वविद्यालय, रीवा; सुश्री आकांक्षा परस्ते, डीएसपी ग्वालियर; सुश्री रिया दास, ऑपेरा मिस इंडिया विजेता, रायपुर ने भाग लिया.

दि. 08.03.21 को क्षे.का. हावड़ा द्वारा क्षेत्र की सभी महिलाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

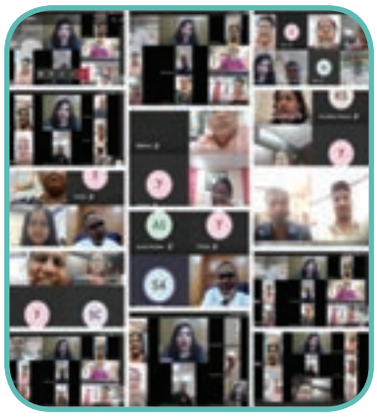

दि. 08 मार्च 21 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर क्षे.म.प्र.का. अहमदाबाद के संयोजन में क्षे.का. अहमदाबाद, क्षे.का. बड़ौदा, क्षे.का. सूरत, क्षे.का. मेहसाणा, क्षे.का. गांधीनगर, क्षे.का. राजकोट, क्षे.का.आणंद,क्षे.का. जूनागढ़ द्वारा महिला विशेष कार्यशाला का वर्चुअल आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, भारत सरकार एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुश्री इरा सिंघल, आईएएस तथा मुख्य वक्ता के रूप में सुश्री पारूल मशर, सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा उपस्थित रहे. इस अवसर पर श्री प्रमोद कुमार सोनी, क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद ने सभी महिला स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया.

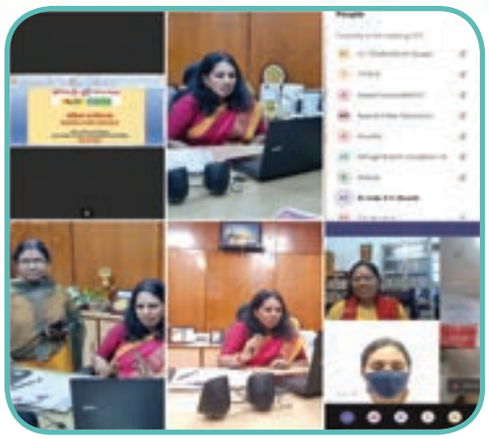

क्षे.का., तिरुवनंतपुरम में दि. 19.02.21 को महिला कार्यशाला का आयोजन किया गया. क्षेत्र प्रमुख, श्रीमती श्रीकला एल के ने कार्यशाला का उद्घाटन किया. कार्यशाला में केरल विश्वविद्यालय के सहायक प्राचार्य, डॉ.इन्दु के.वी ने संकाय सहायता प्रदान की.

08 मार्च 21 को आयोजित विशेष महिला कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए, श्री दि महेश्वरय्या, क्षेत्र प्रमुख. साथ में श्री टी शिवदास, उप क्षेत्र प्रमुख एवं विशेष अतिथि एवं परिवार सलाहकार, सुश्री ग्रेजी जार्ज.

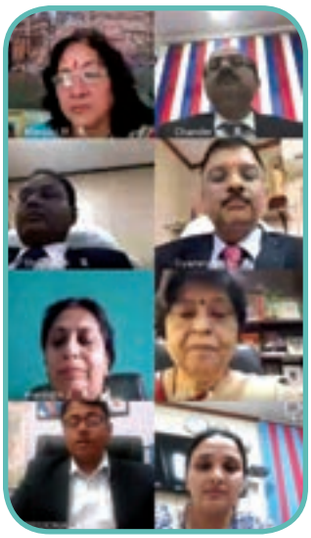

क्षे.का. प्रयागराज द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दि. 08.03.21 को आयोजित विशेष कार्यशाला में सी.एम.मिनोचा, महाप्रबंधक, क्षे.म.प्र.का. वाराणसी; श्री सुनील कुमार, स्वागत अभिभाषण, क्षे.प्र., क्षे.का., मऊ; श्री ज्ञानेन्द्र कुमार सिंह, क्षे.प्र., क्षे.का., प्रयागराज; श्री मनोज कुमार, क्षे.प्र.,आजमगढ़; श्रीमती प्रतिभा पाण्डेय, उप क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी; डॉ. रूचि पाठक, कैंसर रोग विशेषज्ञ, मदन मोहन मालवीय कैंसर सेंटर, वाराणसी; डॉ. मंजरी पाण्डेय, सचिव, बौद्धायन सोसायटी; श्रीमती मनीषा जैन, जन संचार प्रतिनिधि; श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक, के.का.मुंबई तथा सुश्री शिखा भारती.

दि. 08.01.21 को विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में क्षे.का., मंगलूरु के स्टाफ सदस्यों के लिए 2 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और श्री जगन्नाथ शेट्टी, क्षेत्र प्रमुख ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये.

विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दि. 11.01.21 को केक काटते हुए श्री बी श्रीनिवास शेट्टी, क्षेत्र महा प्रबन्धक, विशाखापट्टनम, श्री ज़ी श्रीनिवास मधु, उप अंचल प्रमुख, तथा श्री बीकेवीएसएस गुरुनाधा राव, स.म.प्र., विशाखापट्टनम.

क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु द्वारा दि.25.01.21 को नराकास 'बैंक' बेंगलूरु के तत्वावधान में संयुक्त विश्व हिन्दी दिवस-21 के अवसर पर आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु श्री बी.श्रीनिवास राव की अध्यक्षता में किया गया. विभिन्न बैंकों से प्रतिभागियों के समक्ष उद्घाटन समारोह में क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु (दक्षिण) श्री टी. नञ्जुंडप्पा द्वारा स्वागत भाषण के दौरान उप अंचल प्रमुख श्री पी.सीतारामय्या, उप महाप्रबंधक के अतिरिक्त मुख्य अतिथि के रूप में बैंक ऑफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, बेंगलूरु के मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री सर्वेश कुमार रस्तोगी, उप महाप्रबंधक भी उपस्थित रहे.

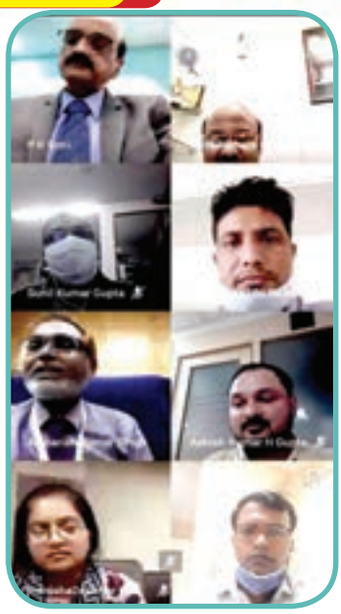

क्षे.म.प्र.का., अहमदाबाद द्वारा अंचल के अंतर्गत सभी 8 क्षेत्रीय कार्यालयों के राजभाषा प्रभारियों की समीक्षा बैठक दि. 05.02.2021 को ऑनलाइन आयोजित की गई. बैठक की अध्यक्षता श्री प्रमोद कुमार सोनी, क्षेत्र महाप्रबंधक अहमदाबाद ने की एवं केंद्रीय कार्यालय से उप महाप्रबंधक, श्री अम्बरीष कुमार सिंह एवं सहायक महाप्रबंधक राजभाषा, श्री नवल किशोर दीक्षित द्वारा सभी राजभाषा प्रभारियों को संबोधित किया गया.

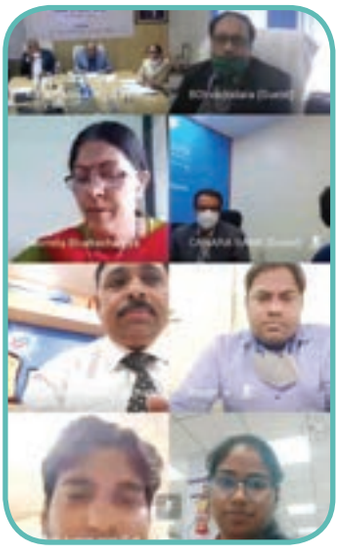

दि. 22.01.21 को बैंक नराकास की 66वीं छमाही बैठक की अध्यक्षता बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री वेणुगोपाल मेनन की. इस अवसर पर गृह मंत्रालय, भारत सरकार की प्रतिनिधि के रूप में डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य उपस्थित रहीं. बैठक में क्षेत्र प्रमुख, श्री सत्यजीत महांती एवं राजभाषा प्रभारी, सुश्री राधा मिश्र उपस्थित रहीं.

दि. 08.03.21 को महिला दिवस के उपलक्ष्य में क्षे.का., मंगलूर, एफजीएमओ, मंगलूरु एवं केन्द्रीय कार्यालय एनेक्स, मंगलूरु की महिला कर्मचारियों के लिए आयोजित महिला विशेष हिन्दी कार्यशाला में अध्यक्ष भाषण प्रस्तुत करते हुए श्री जगन्नाथ शेट्टी, क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का.मंगलूरु. मंच पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि डॉ. नागरत्ना एन राव, हिन्दी विभाग प्रमुख, यूनिवर्सिटी कॉलेज, मंगलूरु एवं श्री सतीश रै, उप क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का., मंगलूरु.

क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु द्वारा दि. 25.01.21 को क्षेत्र महाप्रबंधक, श्री बी. श्रीनिवास राव की अध्यक्षता में अंचलीय राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. अंचलीय राजभाषा प्रभारी श्री कृष्ण कुमार के समन्वयन में आयोजित समीक्षा बैठक में बेंगलूरु अंचल के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया. श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक के.का.ने भी वर्चुअल रुप से राजभाषा अधिकारियों को संबोधित किया.

दि. 25.01.21 को बेंगलूरु अंचलाधीन कार्यपालकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन क्षेत्र महाप्रबंधक, श्री बी.श्रीनिवास राव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ. इस अवसर पर मुख्य अतिथि व संकाय, केनरा बैंक प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु के मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री एच.एम. बसवराज, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) का स्वागत महाप्रबंधक ने सौभाग्य वृक्ष प्रदान कर किया. श्री कृष्ण कुमार यादव के समन्वयन में आयोजित इस संगोष्ठी में बेंगलूरु अंचल के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों से प्रतिभागी उपस्थित रहें. उद्घाटन समारोह में उप अंचल प्रमुख, श्री पी. सीतारामय्या, उप महाप्रबंधक; श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक के.का. भी वर्चुअल रुप से उपस्थित रहे.

क्षे.का.,तिरुच्चिराप्पल्ली में दि. 22.01.21 को 'बोलचाल की हिंदी पर व्यावहारिक कार्यक्रम' का शुभारंभ क्षेत्र प्रमुख, श्री वी मुरली द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री प्रेम कुमार, मुख्य प्रबंधक(ऋण); श्री पी आदिसामी, मुख्य प्रबंधक (सतर्कता) तथा श्री सुब्रमणियन पी, मुख्य प्रबंधक उपस्थित रहे.

दि.14.02.21 को क्षे.का.प्रयागराज के द्वारा आरएसईटीआई भदोही में स्टाफ सदस्यों एवं उनके परिवार सदस्यों हेतु खेल प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र की गृह पत्रिका 'यूनियन प्रयाग' के सितंबर अंक का विमोचन श्री सी.एम मिनोचा, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी; श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी, उप अंचल प्रमुख, वाराणसी; श्री ज्ञानेन्द्र कुमार सिंह, क्षेत्र प्रमुख, प्रयागराज द्वारा किया गया.

दि. 10.01.21 को विश्व हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर क्षे.का., आणंद द्वारा सरदार पटेल विश्वविद्यालय के छात्रों हेतु ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

नराकास, तिरुच्चि की दि. 26.03.21 को आयोजित अर्ध वार्षिक बैठक के दौरान क्षे.का., तिरुच्चिराप्पल्ली की ई-पत्रिका 'यूनियन सृष्टि' के पहले अंक का विमोचन करते हुए (बाईं ओर से) श्री एस टी रामलिंगम, सदस्य-सचिव, नराकास, तिरुच्चि, श्री वी मुरली, क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुच्चिराप्पल्ली तथा श्री अजय कुमार, अध्यक्ष, नराकास, तिरुच्चि. इस अवसर पर हिंदी प्रश्नोत्तरी में प्रथम पुरस्कार विजेता, श्री लक्ष्मीकांत बी.जी. (प्रबंधक-विपणन) को भी पुरस्कृत किया गया.

आयुष्मान भव :

कद्दू के बीज

कद्दू का सामान्यतः कई भारतीय रसोई घरों मे सब्जी के रूप में ईस्तमाल किया जाता है लेकिन क्या आप को यह जानकारी है कि इसके बीज कई पोषक तत्वों से भरे हैं? कद्दू के बीजों मे आयरन, कैल्शियम, फोलेट और बीटा-कैरोटीन सहित कई पोषक तत्व होते हैं. आकार में छोटे पर पोषण से भरपूर इस कद्दू के बीज के बारे में जानते हैं.

1. इम्यून सिस्टम को बढ़ावा देता हे –

कद्दू के बीजों मे जिंक, फ़ाइबर और मैग्नीशियम उच्च मात्रा मे मौजूद होते हैं. ये तत्व शरीर मे रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूती देते हैं और शरीर की सूजन को दूर करने में लाभकारी होते हैं. इसमें विटामिन 'ई' भी पाया जाता है, जो इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने के साथ ब्लड वैसल्स को मजबूत बनाने में सहायक हो सकता है. इसके अलावा, कद्दू के बीजों में फाइबर भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है. फाइबर रोग प्रतिरोधक क्षमता को बेहतर करने का काम कर सकता है.

2. हृदय स्वास्थ्य –

हृदय स्वास्थ्य के लिए भी कद्दू के बीज फायदेमंद हैं. एक रिपोर्ट के अनुसार, कद्दू के बीज का तेल महिलाओं में रक्तचाप को नियंत्रित कर सकता है. रक्तचाप ठीक रहने से हृदय रोग से भी बचा जा सकता है. कद्दू के बीज फाइबर से समृद्ध होते हैं, जिसका लाभकारी प्रभाव हृदय स्वास्थ्य पर भी देखा जा सकता है. अध्ययन के अनुसार, शरीर का बढ़ता मोटापा, स्ट्रोक की आशंका बढ़ा सकता है. फाइबर वजन को नियंत्रित करने का काम करता है. इसके अलावा, कद्दू के बीज में मौजूद पोटैशियम रक्तचाप को नियंत्रित कर हृदय जोखिम को कम करता है.

3. हड्डी स्वास्थ्य –

हड्डियों के विकास, उनके निर्माण और देखभाल के लिए कैल्शियम महत्वपूर्ण है और कद्दू के बीजों मे कैल्शियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है. हड्डियों के लिए मैग्नीशियम भी एक जरूरी पोषक तत्व है. हड्डियों के निर्माण में यह अहम भूमिका निभाता है. मैग्नीशियम की पूर्ति के लिए आप कद्दू के बीजों का सेवन कर सकते हैं.

4. तनाव मुक्ति –

तनाव मुक्त रहने के लिए भी कद्दू के बीज के फायदे देखे जा सकते हैं. कद्दू के बीज में विटामिन-सी पाया जाता है और एक रिपोर्ट के अनुसार विटामिन-सी न्यूरोट्रांसमीटर (ब्रेन केमिकल) के निर्माण का काम करता है. वैज्ञानिक रिपोर्ट के अनुसार, न्यूरोट्रांसमीटर मस्तिष्क की गतिविधियों में सुधार कर मूड और नींद को नियंत्रित करने का काम करता है, जिससे तनाव जैसी मानसिक स्थितियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है. कद्दू के बीज मैग्नीशियम से भी समृद्ध होते हैं, जिससे आपको शांत रहने में मदद मिल सकती है. इसके अलावा, कद्दू के बीज में विटामिन-बी और जिंक जैसे पोषक तत्व भी पाए जाते हैं, जो तनाव को दूर करने का काम कर सकते हैं.

5. अनिद्रा –

कद्दू के बीज खाने के फायदे में अनिद्रा से छुटकारा भी है. कद्दू के बीज मैग्नीशियम का अच्छा स्रोत हैं और मैग्नीशियम मांसपेशियों को आराम देने का काम करता है, जिससे अच्छी नींद आ सकती है.

6. पाचन के लिए –

भोजन को पचाने में भी कद्दू के बीज के फायदे देखे जा सकते हैं. कद्दू के बीज में फाइबर भरपूर मात्रा में पाया जाता है जो पाचन क्रिया को मजबूत करने के साथ-साथ कब्ज जैसी पेट संबंधी समस्या से भी छुटकारा दिलाने का काम करता है.

7. आंखों की सेहत –

आंखों के लिए भी कद्दू के बीज के फायदे देखे जा सकते हैं. यह विटामिन-ए से समृद्ध होते हैं, जो अंधेरे में दृष्टि को बढ़ावा देने का काम कर सकते हैं.

प्रियंका आंगवलकर
के.का., मुंबई

आपकी नजर से

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की हिंदी पत्रिका 'यूनियन सृजन' अक्तूबर-दिसंबर 2020 अंक 'महाराष्ट्र विशेषांक' प्राप्त हुआ. धन्यवाद.

कोविड-19 के विभिन्न चरणों से संघर्ष करते हुए हम सब एक बार पुनः सामान्य जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं. ऐसे में आपकी पत्रिका के विशेषांक द्वारा महाराष्ट्र की विराट, उत्साही एवं संघर्षशील संस्कृति का परिचय कराया गया है जो हम सभी में एक नवीन उत्साह का संचार करता है. पत्रिका में महाराष्ट्र की ऐतिहासिक विरासत, संस्कृति, भाषा, भूगोल, साहित्य, सिनेमा, व्यक्तित्व सहित विविध आयामों पर सारगर्भित एवं रोचक सामग्री प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है. आपकी पत्रिका का यह विशेषांक महाराष्ट्र का दिग्दर्शन कराता है. हम आपके प्रयासों की सराहना करते हैं तथा आगामी अंकों हेतु अग्रिम शुभकामनाएं देते हैं.

अजय कुमार
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
इंडियन बैंक, कार्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

आपके बैंक से 'यूनियन सृजन' का दिसंबर 2020 अंक 'महाराष्ट्र विशेषांक' हमें प्राप्त हुआ है. यह पत्रिका बड़ी ही सुव्यवस्थित एवं सुरुचिपूर्ण है. इसमें संकलित रचनाएं जैसे महाराष्ट्र के भारत रत्न विजेता, महाराष्ट्र ने भारत को क्या दिया, महाराष्ट्र की मराठी भाषा, महाराष्ट्र का रंगमंच, बॉलीवुड और महाराष्ट्र, महाराष्ट्र का खानपान एवं पहनावा तथा कविताओं में-सारथी, जीवन सार, जिंदगी, मांझी आदि नवीन जानकारियों से भरी हुई हैं. इस पत्रिका में चित्रांकन बड़ा ही आकर्षक है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं. आशा करते हैं कि भविष्य में भी यह पत्रिका ज्ञानवर्धन हेतु हमें प्राप्त होती रहेगी.

कामेश सेठी
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी
पंजाब एण्ड सिंध बैंक, नई दिल्ली

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी पत्रिका यूनियन सृजन के अक्तूबर-दिसंबर अंक की ई-मेल प्रति प्राप्त हुई. विषय की विविधता की दृष्टि से यह महाराष्ट्र विशेषांक आकर्षक लगा. महाराष्ट्र का इतिहास, भूगोल, मराठी भाषा, त्योहार, सिनेमा, पर्यटन, महाराष्ट्र की वेशभूषा, रहन-सहन, आदिवासी जन जीवन, खेल-खिलाडी, कहानी, राजभाषा संबंधी समाचार आदि ज्ञानवर्धक हैं. यूनियन सृजन के महाराष्ट्र विशेषांक के संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और साथ ही आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएँ.

जयती पी.
शोध छात्रा, कन्नूर विश्वविद्यालय

यूनियन बैंक द्वारा गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का अक्तूबर दिसंबर 2020 अंक 'महाराष्ट्र विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया गया है.

इस अंक में महाराष्ट्र की अनेक विभूतियों का परिचय, महाराष्ट्र के लेखकों के साहित्य का परिचय, महाराष्ट्र का इतिहास और भूगोल, महाराष्ट्र की संस्कृति के बारे में विशेष लेख प्रस्तुत किए गए हैं. महाराष्ट्र की मराठी रंगभूमि ने विशेष योगदान प्रदान किया है.

मराठी नाटक और बॉलीवुड की दुनिया महाराष्ट्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है. हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान, मराठी भाषा संबंधित विशेष लेख पठनीय हैं.

वैश्विक हिंदी परिवार के सम्माननीय सदस्य और देश विदेश के अनेक कार्यक्रमों के संचालक तथा हिंदी भवन भोपाल के निदेशक डॉ जवाहर कर्णावट जी का साक्षात्कार इस अंक में शामिल है. यूनियन बैंक केंद्रीय कार्यालय के श्री सावन सौरभ जी ने डॉ जवाहर कर्णावट जी से आत्मीय बातचीत करके 'अंग्रेजी जितनी सुविधाएं हिंदी में' विषय पर उनके विचार और अनुभवों को शब्दबद्ध किया है.

इस लेख में वैश्विक हिंदी परिवार की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की गई है. इस अंक का संपादन वैश्विक हिंदी परिवार की सदस्य, सुप्रसिद्ध कवियत्री, अनुवादक, लेखिका व यूनियन बैंक की मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सुलभा कोरे जी ने किया है. सुलभा जी हार्दिक बधाई.

हिंदी के साथ प्रांतीय भाषा और उसके साहित्य का परिचय देना एक विशेष कार्य है.

महाराष्ट्र विशेषांक हेतु यूनियन सृजन अंक के सभी संपादक मंडल और लेखक प्रशंसा के पात्र हैं. यूनियन बैंक का हार्दिक धन्यवाद.

विजय नगरकर
लेखक, अनुवादक
अहमदनगर, महाराष्ट्र

यूनियन सृजन का अक्तूबर-दिसंबर 2020 अंक प्राप्त हुआ. महाराष्ट्र पर प्रकाशित यह अंक बहुत रोचक एवं ज्ञानवर्धक रहा. महाराष्ट्र के इतिहास, संस्कृति, भाषा, भौगोलिक विशेषताएँ, उस पावन भूमि में जन्म लिए महान व्यक्तित्व आदि से संबंधित जानकारियाँ बहुत सरल रूप से, समग्रता के साथ यहाँ दी गई हैं. विषयवस्तु के चयन एवं लेआउट पर लगाए गए विशेष ध्यान ने पत्रिका को बहुत आकर्षक बनाया है. ऐसा एक अनुपम अंक निकालने के लिए संपादक मंडल एवं इस पत्रिका के लिए योगदान दिए सभी लोगों को बधाइयाँ देना चाहता हूँ.

जय हिन्द... जय हिन्दी...

- डॉ. अनीश कुमार टी के
हिन्दी अधिकारी-केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
कासरगोड, केरल

स्थानीय नराकास के माध्यम से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की त्रैमासिक पत्रिका 'यूनियन सृजन' को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ. यह निश्चित ही मेरे लिए अत्यधिक सौभाग्य एवं गौरव का विषय था. अक्तूबर-दिसंबर 20 महाराष्ट्र विशेषांक है जिसमें मुख्यतया इस राज्य विशेष के गौरवशाली इतिहास एवं महान परंपराओं, पर्यटन स्थलों, खान-पान, पहनावे आदि से संबंधित आलेखों को संकलित कर प्रस्तुत किया गया है. कुल मिलाकर पत्रिका को महाराष्ट्र का लघु संदर्भ ग्रंथ भी कहा जा सकता है. कहानी 'माँ नहीं आएगी' का भी विशेष उल्लेख करना चाहूँगा जिसने एक संवेदनशील और सामयिक विषय के माध्यम से सीधा पाठक के दिल को छुआ. कुछ लेख सार रूप में होते हुए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं.

इस अद्भुत पत्रिका को प्रकाशित करने के लिए आपका अतिशय धन्यवाद. मैं संपूर्ण टीम के प्रयासों की सच्चे हृदय से सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप आगे भी पाठक बनने का अवसर प्रदान करेंगे. भावी अंकों के सफल प्रकाशन की शुभकामनाओं सहित.

अटल बाजपेयी,
पंजाब नैशनल बैंक,
मंडल कार्यालय मऊ,

RNI No. MAH HIN/2016/68433

नि:शुल्क वितरण हेतु

बाटु केव्ज, मलेशिया

छायाचित्र : सुश्री प्राजक्ती पाटिल,
वारका शाखा, गोवा